Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

ओ३म्

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५४ अंक - १९ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र अक्टूबर (प्रथम) २०१३

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

इन्दौर के उद्योगपति
श्री शिवकुमार जी चौधरी द्वारा प्रदत्त
कम्प्यूटरों का संगणक-कक्ष में लोकार्पण

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५४ **अंक** : १९
दयानन्दाब्द: १८९
विक्रम संवत्: आश्विन कृष्ण, २०७०
कलि संवत्: ५११४
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११४

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२११७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

अक्टूबर प्रथम २०१३

अनुक्रम

१. उत्तर प्रदेश हिंसा प्रदेश क्यों बना?	सम्पादकीय	०४
२. मन का स्वभाव	स्वामी विष्वङ्	०७
३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	०९
४. हमारी विदेश (इंग्लैण्ड) यात्रा	उषा व रमेशमुनि	१६
५. श्री नन्दलाल जी-एक प्रेरणास्पद......	ब्र. राजेन्द्रार्य	१८
६. स्वामी शंकराचार्य का समय	विरजानन्द	२२
७. हमारी प्रचार सम्बन्धी प्राथमिकताएँ	रामनिवास	२९
८. ध्यान-प्रशिक्षकों के अनुभव		३१
९. पुस्तक परिचय		३४
१०. दृढ़ विश्वास लगाए पार	सुकामा आर्या	३६
१०. जिज्ञासा समाधान-४८	आचार्य सोमदेव	३७
११. संस्था-समाचार		३८
१२. आर्यजगत् के समाचार		४०

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

सम्पादकीय

उत्तर प्रदेश हिंसा प्रदेश क्यों बना?

स्वतन्त्रता के साथ-साथ सामाजिक हिंसा भी हमें उत्तराधिकार में मिली है। जब धर्म के आधार पर देश का विभाजन स्वीकार कर लिया गया था तो उसे पूर्ण रूप से लागू करना उचित था। इसमें भी दोहरी भूल की गई। एक पूरे भारत की जनसंख्या में मुस्लिम जनसंख्या का अनुपात तेईस प्रतिशत था परन्तु हमारे नेताओं ने उदारता दिखाते हुए बत्तीस प्रतिशत भूभाग पाकिस्तान बनाने के लिए दे दिया। इसके साथ दूसरी बड़ी भूल हुई, जब विभाजन का आधार ही धर्म था तो सारे के सारे मुसलमानों को पाकिस्तान भेजा जाना चाहिए था और बदले में सारे हिन्दुओं को भारत में स्वीकार कर लेना चाहिए था। परन्तु ऐसा नहीं हो सका। हिन्दू अधिक संख्या में भारत पहुँचे। इसके विपरीत मुस्लिम जनसंख्या को भारत में आग्रहपूर्वक रोक लिया गया। इसे उदारता कहा गया। यही उदारता आज इस देश के लिए संकट बनकर सामने खड़ी है।

भारत में रहने वाले मुसलमान तो भारत में बस गये, उनकी सत्ता और क्षमता बढ़ती गई। इसके विपरीत हिन्दुओं की जनसंख्या जो विभाजन के समय पाकिस्तान में चौबीस प्रतिशत थी, वह घटकर एक प्रतिशत भी नहीं बची। पाकिस्तान का विभाजन धर्म के नाम पर स्वीकार किया गया था, वहाँ मुस्लिम जनसंख्या बढ़े, यह तो स्वाभाविक था परन्तु हिन्दुओं को बढ़ने के स्थान पर समाप्त हो जाना दुर्भाग्य और दुःख की स्थिति है। भारत में सरकार का कोई धर्म या विचार स्वीकार नहीं किया गया, और कहने को उसे एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र कहा गया। भारत को प्रजातन्त्र बनाने के साथ बहुसंख्यक लोगों की शक्ति को अल्पसंख्यकों को विशेष अधिकार और सुरक्षा देकर कुण्ठित कर दिया गया। इस तरह भारत का धर्मनिरपेक्ष स्वरूप समाप्त होकर हिन्दू विरोध इस देश की सत्ता का धर्म बन गया, इसका मूल कारण था अल्पसंख्यक मतों का ध्रुवीकरण। भारतीय संविधान और कानून ने अल्पसंख्यकों को जो अधिकार और सुरक्षा प्रदान की गई जिसके परिणामस्वरूप इस समुदाय ने देश की स्वतन्त्रता के बाद अपने वर्चस्व में निरन्तर वृद्धि की है। इस वृद्धि का उपाय प्रजातन्त्रात्मक सत्ता के लिए आवश्यक संख्या का जुटाना। इस समुदाय ने अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए मतों के बदले अधिक सुविधा और अधिक अधिकार मांगे, जो उन्हें मिले, सरकारों द्वारा सत्ता को प्राप्त करने के लिए तुष्टिकरण के उपायों को भरपूर काम में लिया गया।

आज इस देश का मुख्य धार्मिक विचार हिन्दू न होकर सत्ता की दृष्टि में इस देश का सत्ताधारी धर्म अल्पसंख्यक अर्थात् मुस्लिम और ईसाइयत हो गया है। जिसका दंश आज इस देश को झेलना पड़ रहा है। सत्ता जिस धर्म या समुदाय के साथ होगी वहाँ दूसरे के साथ अन्याय और पक्षपात होना अनिवार्य है। यही आज देश में हो रहा है। राजनीति में तुष्टिकरण और संरक्षण के चलते हिन्दू उपेक्षित ही नहीं सत्ता विरोधी समझा जाने लगा है। इस परिस्थिति के निर्माण में राजनीति में इन दोनों समुदायों की भागीदारी को स्वतन्त्रता के बाद तेजी से बढ़ते हुए देखा जा सकता है। जितने भी राजनैतिक दल हैं वह कांग्रेस की तरह अल्पसंख्यकों के मतों के जाल में उलझ गये हैं। इस मार्ग पर चलकर कांग्रेस, मुलायम, मायावती ने सत्ता पाकर सिद्ध कर दिया है कि इस देश में सत्ता की चाबी अल्पसंख्यकों के पास है। आज उत्तर प्रदेश सरकार को देख सकते हैं। पहले दस बारह सदस्य विधानसभा में मुस्लिम समुदाय के होते थे, उनमें से एक-दो मुस्लिम मन्त्री होते थे, आज विधानसभा का यह स्वरूप बदल गया है कि सत्तर से अधिक विधान सभा सदस्य मुस्लिम समुदाय के हैं और मन्त्री मण्डल में बारह मन्त्री इसी समुदाय के हैं। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि कहने को तो मुख्यमन्त्री अखिलेश यादव हैं परन्तु प्रदेश की पुलिस और प्रशासन की व्यवस्था गृह मन्त्रालय के आधीन होती है और उसका अधिकार आजम खान के पास है। जो देश से पहले अपने को अपने समुदाय का हितैषी समझता है।

आज उत्तर प्रदेश में आजम खान का शासन है। उत्तर प्रदेश में देश की स्थिति विभाजन के पूर्व जैसी होती जा रही है। सत्ता में मुसलमानों की शक्ति बढ़ने के कारण समाज में वे अपना वर्चस्व दिखाने में कैसे पीछे रह सकते हैं। उत्तर प्रदेश में हिन्दुओं की कोई शिकायत सुनी ही नहीं जाती, उस पर कार्यवाही करना तो दूर की बात है। अब जब थाने में, प्रशासन में कोई हिन्दू किसी मुसलमान की शिकायत लेकर जाता है तो थाने वाला उसकी प्रथम सूचना लिखता ही नहीं, समस्या का हल करना तो दूर की बात है। प्रशासन उसकी सुनता नहीं, ऐसे में वह विवश होकर मन मसोस कर रह जाता है। आप अपने को संविधान में धर्म निरपेक्ष कहते रहिए परन्तु व्यवहार में सरकारें हिन्दू विरोधी होती जा रही हैं। उत्तर प्रदेश की सरकार में तो जो कुछ हो रहा है उसे अन्धा भी देख सकता है। सरकार

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

जनता की सुरक्षा करने, आतंक और भय से मुक्त करने के लिए होती है परन्तु उत्तर प्रदेश में इसके विपरीत हो रहा है। आज उत्तर प्रदेश के अनेक भाग ऐसे हैं जहाँ बड़ी संख्या मुसलमानों की है। जनसंख्या का तेजी से बढ़ता अनुपात भी इस समाज को उत्तेजित करने में बड़ी भूमिका निभाता है। जिस हरित प्रदेश की मांग अजीत सिंह करते आये हैं उसे बना दिया जाय तो एक नये पाकिस्तान का निर्माण हो जायेगा। गाँवों में भी जनसंख्या सन्तुलन बिगड़ा है परन्तु नगरों में यह अधिक बढ़ा दिखाई देता है। एक और कारण जो धार्मिक समुदाय में संघर्ष उत्पन्न करता है, वह है पाकिस्तान व अन्य मुस्लिम देशों से चलाया जा रहा आतंकवाद। वह धर्म के नाम पर इस समुदाय को उत्तेजित करने में सक्रिय भूमिका निभाता है। वहाँ से प्रशिक्षित आतंकवादियों को, शस्त्र और मार्गदर्शन भारतीय मुस्लिम समाज से निरन्तर प्राप्त होता रहता है। इसका प्रभाव दंगों की भूमिका में देखा जा सकता है।

आज उत्तर प्रदेश सरकार जिस मार्ग पर चल रही है उसमें सवा सौ से अधिक दंगे उत्तर प्रदेश में मुलायम सरकार के शासन में हो चुके हैं। इन दंगों पर उत्तर प्रदेश की सरकार केवल मुस्लिम सुरक्षा की चिन्ता करती है परन्तु केन्द्र सरकार भी इस पर कुछ कहने से बचती है। उसे भी मुस्लिम मतों की आवश्यकता है। उत्तर प्रदेश के दंगों का और विशेष रूप से मुज्जफरनगर के दंगों का कारण मुस्लिम समुदाय का समाज के दूसरे वर्ग के साथ मनमानी करना और सरकार द्वारा उनका साथ दिया जाना है। आजकल दूरदर्शन देखने वाले भली प्रकार जानते हैं कि दंगा कराने और उसके रोकने के स्थान पर उसे बढ़ाने में मुलायम की सरकार का और विशेष रूप से गृहमन्त्री आजम खान का हाथ है।

दंगों का प्रारम्भ जिस घटना से हुआ है, उसके पीछे लव जिहाद की मुस्लिम समुदाय की योजना को मुख्य कारण कहा जा रहा है। उत्तर प्रदेश में यह लव जिहाद कितना बढ़ गया है इसकी कल्पना इलाहबाद उच्च न्यायालय की उस टिप्पणी से कर सकते हैं जो दो वर्ष पूर्व की गई थी। न्यायालय ने कहा था एक वर्ष में पाँच हजार प्रेम विवाह न्यायालय में पंजिकृत हुए, उनमें एक भी लड़की मुस्लिम नहीं थी और एक भी लड़का हिन्दू नहीं था। न्यायालय की यह टिप्पणी समाज में व्याप्त संकट को समझने के लिए पर्याप्त है इस स्थिति में पीड़ित हिन्दू समाज के व्यक्ति में आक्रोश होना स्वाभाविक है परन्तु इसका समाधान करने के स्थान पर उत्तर प्रदेश सरकार ने इसे बढ़ावा ही दिया है। जब यह दंगा मुजफ्फरनगर में था जो कि मुस्लिम बहुल था तब वहाँ दंगा होने पर उसे रोकने के स्थान पर उसे बढ़ावा दिया गया जैसे दूरदर्शन पर भी दिखाया गया, पुलिस दंगे करने वालों के विरुद्ध कार्यवाही करने से स्वयं सरकार के मन्त्री ने पुलिस को रोका।

आज कल परम्पराओं मर्यादाओं को तोड़ना ही सबसे बड़ी आधुनिकता हो गई है। फिर मुस्लिम संस्थाओं ने अपने धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए जिस साधन का आश्रय लिया है उसे उन्होंने लव जिहाद नाम दिया है। इस्लाम से इतर सम्प्रदायों की लड़कियों से छेड़छाड़ करना, उन्हें बहकाना, फुसलाना सभी कुछ इनके समाज ने मान्य किया है। जब से उत्तर प्रदेश में सपा सरकार आई मुस्लिम समुदाय कुछ अधिक ही उत्साहित है। इसके चलते समाज में उच्छृंखलता बढ़ गई, मलिकपुरा गाँव की एक लड़की को कवाल गाँव का मुस्लिम लड़का छेड़छाड़ करता था। लड़की ने अपने भाई से शिकायत की और लड़की के दोनों भाइयों से उस लड़के का झगड़ा हुआ और झगड़े में वह लड़का मर गया । बाद में मुस्लिम समुदाय ने पंचायत करके उन दोनों लड़कों को मार दिया। इस पर गाँव वालों ने सभा की और मारने वालों पर पुलिस कार्यवाही करने की माँग की।

यहाँ से इस हिंसक दंगे की पटकथा प्रारम्भ होती है। पुलिस ने मुस्लिम युवक को मारने वालों के घर वालों के नाम प्राथमिकी लिखवाई जबकि लड़के को मारने वाले दोनों युवक तो मर चुके थे। उनके स्थान पर सरकार के इशारे पर घरवालों को फंसाया गया था जिन लोगों ने इन दोनों युवकों को मारा था उनके विरुद्ध पुलिस ने न शिकायत लिखी न कोई कार्यवाही की। यह कार्य पक्षपात पूर्ण था। जिस गाँव की घटना है वह गाँव मुस्लिम बहुल है, वहाँ हिन्दू कम संख्या में रहते हैं। नंगला मन्दोड़ में इन लोगों ने पंचायत करके जो हत्या में सम्मिलित नहीं थे उनके नाम प्रथम सूचना से निकालने और दो युवकों की हत्या करने वालों के नाम प्रथम सूचना में उल्लेख करने की मांग की और सात दिन का समय दिया।

इस बीच सरकार ने ३० अगस्त को मुजफ्फरनगर शहर के इस क्षेत्र में धारा १४४ लगा दी फिर भी मुसलमानों ने सभा की, पुलिस ने इन लोगों पर कार्यवाही करने के स्थान पर उनकी सभा में जाकर उनका ज्ञापन लिया और लौट गये। इससे स्थानीय दूसरे पक्ष के लोगों का क्रोधित होना स्वाभाविक था। इस पर उन्होंने ७ सितम्बर को दुबारा पंचायत बुलाई और इस विषय पर विचार विमर्श किया और इस पंचायत में जाने वाले लोगों को घायल किया गया तथा उन घायल लोगों ने पंचायत में जाकर मारपीट की घटना सुनाई जिससे लोगों का रोष स्वाभाविक था। इस अवसर का लाभ उठाकर पहले पक्ष ने पंचायत से लौटते

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

हुए हिन्दू लोगों पर सुनियोजित ढंग से आक्रमण कर दिया। दूरदर्शन और समाचार पत्रों में विस्तार से इस घटना की चर्चा हुई है। इस घटना का स्थान जौली नहर का पुल है। जिस पर लौटते हुए हिन्दू लोगों पर आक्रमण किया गया। ट्रेक्टर नहर में डाल दिये गये, मरने वाले बह गये। दर्जनों ट्रेक्टर नहर से अभी तक निकाले गये हैं। यहाँ कितने लोग मरे, कितने घायल हुए, कितने ट्रेक्टर पानी में डूबे, कितने जलाये गये। पुलिस ने अभी तक इसपर कार्यवाही करने की आवश्यकता नहीं समझी, यह पक्षपात का ही दूसरा उदाहरण है।

इस घटना की प्रतिक्रिया हुई फुगाना, कुरवा, कुरवी गाँवों में हिंसा भड़की, यह आग सारे क्षेत्र में फैल गई। घर जलने लगे, लोग भागने लगे और सरकार ने एक वर्ग के लोगों को बन्द करके इस को बढ़ाने में सहायता की। समाचार पत्रों ने बताया इस क्षेत्र के किरठल गाँव में एक घर से ए.के. ४७ की २१ गोलियाँ मिली तथा ९ एम.एम. की प्रतिबन्धित पिस्तोल मिली। तलाशी रोक दी गई तथा तलाशी करने वाले पुलिस अधिकारियों का स्थानान्तरण कर दिया गया। जहाँ रासुका में कार्यवाही होनी थी वहाँ तलाशी बन्द कर कार्यवाही समाप्त कर दी गई। अपराधियों को फरार होने का अवसर मिल गया। जब तक प्रथम पक्ष हिंसा में सक्रिय था सरकार ने कोई सुरक्षा का कदम नहीं उठाया। एक पक्ष की हिंसा भड़कते ही सारा अपराध दूसरे पक्ष पर डाल दिया। अखिलेश सरकार ने जिन १६ राजनीतिक और सामुदायिक नेताओं के विरुद्ध गैर जमानती वारण्ट जारी किए हैं उनमें एक भी सपा का नेता नहीं है तथा न ही मुस्लिम समुदाय का नेता है। इनमें एक बसपा के सांसद तथा एक भाजपा व एक बसपा के विधायक हैं शेष १२ सदस्य भाजपा व हिन्दुवादी समुदायों से हैं। आजम खाँ और एक सपा विधायक का भारी विरोध होने के बाद भी उनपर कोई कार्यवाही नहीं की गई।

राजनीति के विश्लेषकों के अनुसार यह दंगा सरकार की नीति के अनुसार सुनियोजित था। विश्लेषकों का मानना है कि पिछले अनेक वर्षों से इस क्षेत्र में जाट मुस्लिम गठजोड़ के चलते मुलायम की दाल नहीं गल रही थी, इन दंगों से यह गठ जोड़ टूट जायेगा। इन दंगों का दूसरा लाभ आर्थिक पक्ष में होगा, यह गठजोड़ पूंजीपति गन्ना मिलों के लिए सिरदर्द था। इसके टूटने से पूंजीपतियों द्वारा गन्ना किसानों का शोषण करना सरल होगा और पूंजीपतियों का लाभ राजनेताओं को होना ही है।

सरकार अब दंगा भड़काने वालों के विरुद्ध कार्यवाही कर रही है परन्तु अपने लोगों को बचाकर।

आज आवश्यकता है इसकी निष्पक्ष जाँच हो और अपराधियों को दण्डित किया जाय। जो लोग गुजरात के लिए वर्षों से हाय-तोबा मचा रहे हैं वे इस समय चुप क्यों हैं? निष्पक्ष जाँच के लिए सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशन में टीम बननी चाहिए और उत्तर प्रदेश के दंगों के मुकद्में उत्तर प्रदेश से बाहर चलने चाहिए। यह बात गुजरात के लिए सही हो सकती है तो उत्तर प्रदेश के लिए क्यों नहीं?

जब राजदण्ड का गलत प्रयोग होता है तो वह उसके ही विनाश का कारण बनता है। यह बात मनु ने ठीक ही कही है-

यत्र श्यामो लोहिताक्षो दण्डश्चरति पापहाः।
प्रजास्तत्र न मुह्यन्ति नेता चेत् साधुपश्यति।।

-धर्मवीर

पृष्ठ संख्या ३६ का शेष भाग....

व्यक्ति उसी स्वरूप में अवश्य सामने आते हैं जिनके बारे में कभी सच्चे मन से ईश्वर से प्रार्थना की होती है क्योंकि हम सभी एक ही cosmos में हैं। हमारे विचार, vibrations उन विचारों को, ख्यालों को, स्वप्नों को साकार करने में हमारा सहयोग करते हैं। ईश्वर भी शुभ संकल्पों में अपना वरद-हस्त हमारे सिर पर रखता है।

सो हमें अपनी clarity of mind पर जोर देना चाहिए- कि हम वास्तविक रूप से क्या चाहते हैं? पुरुषार्थ उस दिशा में हो, ईश्वर से प्रार्थना भी हो तो- हमें लक्ष्य प्राप्ति से कोई नहीं रोक सकता। हम अपने स्वयं पर दृढ़ विश्वास व ईश्वरीय कृपा पर विश्वास रखते हुए अपने लौकिक जीवन में व अध्यात्मिक जीवन में अपने लक्ष्य अवश्य प्राप्त कर सकते हैं- तब हम ईश्वर को कह उठते हैं कि-

मुझे सहल हो गई मंजिलें, वो हवा के रुख़ भी बदल गए,
तेरा हाथ हाथ में आ गया कि चिराग राह में जल गए।
मेरे काम आ गईं अखिरिश, यही काविशें, यही गर्दिशें,
बढ़ी इस कदर मेरी मंजिलें कि कदम ख़ार निकल गए।।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

।।ओ३म्।।

दयानन्द मठ, दीनानगर का

हीरक जयन्ती समारोह में

(१८, १९, २० अक्टूबर २०१३)

सब आर्यजन सादर आमन्त्रित हैं।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

मन का स्वभाव

-स्वामी विष्वङ्

अध्यात्म-मार्ग में मन का बहुत अधिक महत्त्व है, इस बात से इन्कार, कोई भी अध्यात्म-मार्गी नहीं कर सकता। **'मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः'** इस संस्कृत वाक्य का कथन प्रायः व्याख्यानों में किया जाता है। मन चाहे मनुष्य को बन्धन=दुःख सागर में गिरा सकता है और चाहे मोक्ष=आनन्द में डुबकी लगवा सकता है। मन दोनों कार्यों (बन्धन व मोक्ष) को कुशलता पूर्वक सम्पन्न कराने में सक्षम है। परन्तु जीवात्मा पर निर्भर करता है कि वह बन्धन की ओर मन को प्रवृत्त करे या मोक्ष की ओर प्रवृत्त करे। कोई कहे आत्मा भला क्यों मन को प्रवृत्त करेगा? मन ही स्वयं प्रवृत्त होता है, मन ही स्वयं जिस में लगना चाहता है, तो लग जाता है। आत्मा नहीं लगवाता है। कहा भी जाता है कि मन नहीं मानता, मन स्वयं जाता-आता है। मैं (आत्मा) स्वयं चाहता हूँ कि मन मेरे अनुसार चले, पर वह तो अपनी इच्छा से जहाँ लगना हो वहाँ लग जाता है, मेरी बात नहीं मानता आदि-आदि। यहाँ पर यह बात अवश्य जाननी चाहिए कि संसार में दो ही प्रकार के पदार्थ हैं। एक प्रकार के पदार्थ स्वयं प्रवृत्त होते हैं, जिन्हें अन्य पदार्थों की प्रेरणा या सहयोग की अपेक्षा नहीं होती है। दूसरे प्रकार के पदार्थ वे होते हैं, जो स्वयं प्रवृत्त नहीं होते हैं और नहीं हो सकते हैं, जिनके प्रवृत्त होने में अन्यों की प्रेरणा या सहयोग की अपेक्षा अवश्यं भावी है। वे दो प्रकार के पदार्थ हैं- पहला चेतन तथा दूसरा अचेतन-जड़। चेतन स्वयं भी प्रवृत्त होता है और अन्य चेतनों से प्रेरित हो कर भी प्रवृत्त होता है। परन्तु जड़ स्वयं प्रवृत्त न हो कर चेतनों से प्रेरणा या सहयोग पा कर ही प्रवृत्त होता है। जड़ व चेतन में यह एक विशेष भेद है।

यहाँ पर यह विचार कर देखा जाये कि क्या मन चेतन है? यदि चेतन होगा तो स्वयं प्रवृत्त होगा और यदि अचेतन-जड़ होगा तो चेतन की प्रेरणा से प्रवृत्त होगा, यह सिद्धान्त स्थापित होगा। दूसरा यह भी सिद्धान्त है कि जगत् के मूल कारण सत्व, रज, तम हैं और ये मूल कारण कार्यजगत् में मूल कारण के रूप में प्रवृत्त नहीं होते हैं। व्यवहार के रूप में जो भी जड़ पदार्थ प्रवृत्त होते हैं, वे कार्य पदार्थ ही होते हैं। मन को कार्य पदार्थ के रूप में स्वीकार किया जाता है। इस सिद्धान्त से यह बात स्पष्ट होती है कि मन कार्य पदार्थ है और कार्य पदार्थ स्वयं प्रवृत्त होता हुआ लोक में कहीं पर भी दिखाई नहीं देता है। जितने भी कार्य पदार्थ (जिन्हें मनुष्यों ने बनाया) लोक में प्रवृत्त होते हुए दिखाई देते हैं, उन सबको प्रेरित करने वाले चेतन ही हैं। जिन कार्य पदार्थों को ईश्वर (सृष्टि कर्त्ता) ने बनाया, उन्हें ईश्वर भी प्रवृत्त करता है और कुछ (महतत्त्व, अहंकार, मन, इन्द्रियों आदि को) को मनुष्य भी प्रवृत्त करता है। इससे यह बात स्पष्ट होती है कि कोई भी कार्य पदार्थ स्वयं प्रवृत्त नहीं होता है। सभी ऋषियों ने मन को कार्य पदार्थ माना है, इसलिए वह मन भी स्वयं प्रवृत्त नहीं होता है।

प्रत्येक पदार्थ का अपना एक विशेष स्वभाव रहता है, जो अन्य पदार्थों से उसे अलग करता है और उसके स्वभाव से उसका पहचान बन जाता है। मन के विषय में भी ऐसा ही समझना चाहिए कि मन की अपनी एक विशेष पहचान है। लोक में चंचलता के रूप में मन की पहचान है। जिस किसी से भी पूछा जाये कि मन का स्वभाव क्या है? उत्तर यही मिलता है कि मन का स्वभाव चंचल है। चाहे पठित-वर्ग हो, चाहे अपिठत-वर्ग हो सबका एक जैसा ही उत्तर आता है। यदि तात्त्विक रूप से विचार किया जाये तो पता चलता है कि मन का स्वभाव चंचल नहीं होना चाहिए। क्योंकि कोई भी पदार्थ बनता है या बनाया जाता है, तो पदार्थ के बनने की प्रक्रिया दो प्रकार की होती है। एक प्रक्रिया में मूल कारणों को सम (=समान मात्रा) मात्रा में ले कर बनाया जाता है। जैसे त्रिकटु (सोंठ, पिप्पली, कालीमिर्च) दूसरी प्रक्रिया में विषम(=असामान मात्रा) मात्रा में ले कर बनाया जाता है। जैसे उत्तर भारत में खीर बनाते हैं, तो दूध की मात्रा सर्वाधिक होती है और चावल, चीनी की मात्रा अत्यल्प होती है।

मन के सन्दर्भ में भी ऐसा ही समझना चाहिए कि मन को परमेश्वर ने बनाया है, तो क्या मूल कारणों को सम मात्रा में ले कर बनाया या विषय मात्रा में ले कर बनाया? यदि सम मात्रा में ले कर बनाया गया है, तो जितने मूल कारण होंगे उतने स्वभाव कार्य में समान रूप से होंगे। यदि विषम मात्रा में मूल कारणों को ले कर बनाया गया है, तो जिस की मात्रा सर्वाधिक होगी, उसी का स्वभाव कार्य पदार्थ में अधिक रहेगा। मन के मूल कारण सत्व, रज, तम हैं। यदि इन तीनों कारणों को सम मात्रा में मिला कर बनाया गया हो, तो तीनों का स्वभाव समान मात्रा में रहेंगे। यदि तीनों कारणों को विषम मात्रा में मिला कर बनाया गया हो, तो जिस कारण की अधिकता होगी, उसी का स्वभाव अधिक

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

होगा, अन्यों का गौण रूप में रहेगा।

लोक में मन के स्वभाव को चंचल कहा जाता है। यहाँ पर यह विचार करना चाहिए कि यह चंचलता किस तत्त्व में है। रज नामक तत्त्व में चंचलता है, ऐसा सभी स्वीकार करते हैं। अब यह विचार करना है कि क्या मन के निर्माण में रज तत्त्व की अधिक मात्रा है? क्योंकि जिस तत्त्व की अधिक मात्रा हो, उसी का स्वभाव कार्य पदार्थ में आता है। यदि मन चंचल है तो मन में सर्वाधिक मात्रा रज तत्त्व की होनी चाहिए। परन्तु महर्षि वेदव्यास ऐसा नहीं मानते हैं। क्योंकि महर्षि वेदव्यास मन की निर्माण प्रक्रिया में लिखते हैं कि **'चित्तं हि प्रख्याप्रवृत्तिस्थितिशीलत्वात् त्रिगुणम्'** (योगदर्शन १.२. व्यासभाष्य) अर्थात् चित्त-मन प्रख्या-सत्त्व, प्रवृत्ति-रज, स्थिति-तम नामक तीनों पदार्थों से बनने के कारण त्रिगुणम्-तीनों तत्त्वों वाला है। महर्षि यह मानते हैं कि यद्यपि मन सत्व, रज, तम नामक तीनों मूल कारणों से बना हुआ है परन्तु **'प्रख्यारूपं हि चित्तसत्त्वम्'** (योग. १.२. व्यासभाष्य) मन सत्व गुण प्रधान है अर्थात् मन में सत्व की मात्रा सर्वाधिक है। तभी मन को प्रख्यारूप-सत्वप्रधान कहा है।

यदि मन सत्व प्रधान वाला है, तो सत्व नामक तत्त्व का स्वभाव मन में अधिक होना चाहिए। सत्व का स्वभाव है शान्त रहना। मन का स्वभाव भी शान्त होना चाहिए न कि चंचल। परन्तु लोक में सबको मन चंचल ही दिखता है, ऐसा क्यों? मन तीनों (सत्व, रज, तम) पदार्थों से बना है, इसलिए मन में तीनों का स्वभाव रहेंगे। परन्तु सर्वाधिक स्वभाव शान्त होने का रहेगा क्योंकि सत्व की अधिक मात्रा है। मन के तीनों स्वभाव मन में ही हैं, परन्तु तीनों स्वभाव अपने आप प्रवृत्त नहीं होते हैं, क्योंकि जड़ होने के कारण। उन तीनों स्वभावों में से कौन से स्वभाव को कार्यान्वित करना है, यह जीवात्मा के ज्ञान के अनुसार निर्भर करता है। अविद्या से युक्त आत्मा मन को चंचल बना कर कार्य करता है। विद्या से युक्त आत्मा मन को शान्त बना कर कार्य करता है।

मन का चंचल बना रहना या मन का शान्त बना रहना जीवात्मा के अज्ञान व ज्ञान पर निर्भर करता है। यह यथार्थता है। यदि मन के स्वभाव के विषय में प्रश्न किया जाये कि मन का क्या स्वभाव है? उत्तर यह ही होना चाहिए कि मन का स्वभाव शान्त है। फिर चंचल क्यों दिखाई देता है? इसका उत्तर मनुष्य का अज्ञान है और अज्ञान को हटा कर देखे तो मन शान्त ही दिखाई देगा। इसलिए मन का स्वभाव चंचल न हो कर शान्त है, ऐसा ही कथन करना चाहिए, यह ही महर्षि पतञ्जलि एवं महर्षि वेदव्यास का कथन है, ऐसा मानना चाहिए।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

विशेषज्ञों की चेतावनी

विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि डॉक्टर मरीज की शारीरिक स्थिति को पूरी तरह से जाँचे बिना ही दवाएँ लिख देते हैं। आँकड़ों के अनुसार गत वर्ष ६ अरब गोलियाँ बेची गई और गोलियों की बिक्री में सालाना ४.१ प्रतिशत की वृद्धि हुई। विशेषज्ञों ने इस बात पर चिन्ता जताई कि अनेकों वयस्क स्त्री पुरुष उन दवाओं के आदी हो गए हैं जो उन्हें आरम्भ में छोटी-मोटी बीमारी में राहत देने के लिए दी जाती थी। एक अनुमान के अनुसार अकेले ब्रिटेन में ३२,००० लोग दर्द निवारक दवाओं के आदी हैं। विशेषज्ञ सबसे ज्यादा चिन्तित कोडाइन युक्त दवा के लिए थे जो कि हेरोइन और मॉरफीन समूह का रसायन है। विशेषज्ञों के अनुसार दर्द निवारक दवा लेते समय लोग डॉक्टर की सलाह भी नहीं लेते हैं क्योंकि वे इसे कोई औषधि नहीं मानते हैं।

सौजन्य-राष्ट्रदूत, दिनांक १८.०१.२०१३

स्वामी सत्यप्रकाश रचित एक कविता

पाप

छिपे-छिपे चोरों से आते हो घुस मन में है शैतान!
छूटेगी कब यह चोरी की बान।
बाना पहन-पहन पुण्य का आते फिर हो जाते क्यों तुम पाप।।
बिना बुलाये आते अपने आप
मधुर स्वाद के मादक में छिप आ जाते हो विष के व्याल।
धीरे-धीरे ड़सते हो हे काल!
कभी-कभी सोते सपने में हर लेते जीवन का सार।
छलियों का सा छद्मित यह व्यवहार।।
हृदय लोक में मचवा देते हो तुम देवासुर संग्राम।
विजय तुम्हारी ही होती अविराम।।
पाप श्यामता से रंग जावे हृदय पटल मेरा भी श्याम।
तो फिर चमक उठेगा उसमें श्वेत शुभ्र प्रभु तेरा नाम।।

- प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु तथा श्री राहुल आर्य के सौजन्य से प्राप्त

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

कुछ तड़प-कुछ झड़प

- राजेन्द्र जिज्ञासु

ऋषि भक्ति से छलकते हृदय से:- परोपकारिणी सभा प्रतिवर्ष ऋषि मेले पर कुछ विशेष कार्यक्रम देकर आर्यों में उत्साह का संचार करने का प्रयास करती है। मात्र अजमेर की यात्रा करने-करवाने की रीति निभाने से लाभ भी कुछ नहीं। संगठन भी सुदृढ़ हो, नये-नये युवक भी जुड़े, कार्यकर्ताओं में मिशन की निरन्तर सेवा की चाह पैदा हो-ऋषि मेला इस दृष्टि से ऐतिहासिक सिद्ध हो, इसके लिए सब आर्य मिलकर प्रयास करें।

इस अवसर पर अटल, ईश्वर विश्वासी, दार्शनिक, तपस्वी, संन्यासी स्वामी दर्शनानन्द जी के निर्वाण-शताब्दी वर्ष पर एक विशेष सम्मेलन का आयोजन होगा। चुने हुए विद्वान् वक्ता इसमें स्वामी जी के शास्त्रार्थों, साहित्य, अथक प्रचार यात्राओं, गुरुकुलों द्वारा सेवा, उनकी देन पर खोजपूण प्रेरणाप्रद व्याख्यान देंगे। इस अवसर पर कई प्रकाशक स्वामी जी का साहित्य वहाँ लायेंगे। महाराज का खोजपूर्ण मौलिक जीवन चरित्र भी प्राप्य होगा।

आर्यो! यह याद रखना कि पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय तथा आचार्य उदयवीर सरीखे गम्भीर विद्वान् स्वामी जी की ही देन है।

ठाकुर भूपालसिंह जी का अनुस्मरण:- आर्यो! आपको यह ज्ञान तो है परन्तु ध्यान नहीं कि ठाकुर मुकन्दसिंह जी, ठाकुर मुन्नासिंह जी, ठाकुर भूपालसिंह जी और ठाकुर कृष्णसिंह जी ये महर्षि के अत्यन्त प्यारे और समर्पित शिष्य थे। सबसे लम्बे समय तक ऋषि के सत्संगी रहे। महर्षि के देह-त्याग के समय ठाकुर भूपालसिंह जी ने जिस श्रद्धा भक्ति से ऋषि की सेवा की, वह शब्दों में कोई नहीं बता सकता। तत्कालीन पत्रों, पं. लेखराम जी, स्वामी सत्यानन्द जी तथा देवेन्द्र बाबू जी के ग्रन्थों में यह सारा प्रसंग बार-बार पढ़िये।

सभा ने ठाकुर भूपालसिंह जी के वंशजों को खोजकर उनसे सम्पर्क साधा है। ठाकुर जी के परिवार को सन्मानित करने के लिए उनके वंशजों में से एक सुयोग्य भाई अलीगढ़ के प्रतिष्ठित आर्यों के साथ ऋषि मेला पर आ रहे हैं। **ऋषि भक्ति से छलकता हृदय लेकर आर्यो! अजमेर पहुँचे।** सबसे पुराने आर्य परिवारों में से एक को सभा प्रथम बार सम्मानित कर रही है। अवसर मत चूकिये।

इतिहास का नया अध्याय लिखा जायेगा:- इस ऋषि मेला से पर्याप्त समय पहले केरल प्रदेश से वहाँ के सबसे पहले वानप्रस्थी, पूर्णकालिक मिशनरी, शान्त गम्भीर विद्वान् तथा यशस्वी लेखक श्री राजू जी ऋषि उद्यान पहुँच गये हैं। वह संन्यास की दीक्षा लेंगे। वह केरल के सबसे पहले विद्वान् संन्यासी होंगे। संन्यास-दीक्षा कौन देगा? इसका निर्णय सभा ने श्री धर्मवीर जी पर छोड़ा। वानप्रस्थी जी ने कहा कि मैं तो सभा पर ही यह निर्णय छोड़ता हूँ। सभा के निर्देश पर इस लेख द्वारा आर्य मात्र को इस ऐतिहासिक समारोह के लिए आमन्त्रित किया जाता है। श्री ओममुनि जी का पत्र केरल जा चुका है। वहाँ से और भी कई आर्य महानुभावों के इस समारोह में आने की सूचना तो मिली है। पूरी जानकारी शीघ्र दी जावेगी। हमारी कामना है कि ये दोनों कार्यक्रम आर्यसमाज तथा सभा के इतिहास में स्वर्णिम अध्याय सिद्ध होंगे।

राव युधिष्ठिर सिंह जी का चित्र:- ऋषि-जीवन चरित्र के गम्भीर पाठक यह जानते हैं कि वर्तमान हरियाणा में केवल रेवाड़ी में ऋषि जी ने १७ व्याख्यान देकर वेद-प्रचार आन्दोलन की धूम मचाई थी। राव युधिष्ठिर सिंह जी की विनती पर स्वामी जी वहाँ पधारे थे। हरियाणा के किसी वृद्ध ने स्वामी ओमानन्द जी को एक मनगढ़न्त कहानी सुनाकर राव जी के बारे में एक नया भ्रम पैदा कर दिया।

हमारे चिरपरिचित स्वामी सुधानन्द जी ने भी प्रामाणिक ग्रन्थों को देखे बिना अपने यादव इतिहास तिथियाँ की गड़बड़ के साथ एक और सुनी सुनाई कहानी जोड़कर एक नया भ्रम पैदा किया है। हमें पूरा विश्वास है कि वह भूल सुधार कर देंगे। परोपकारी द्वारा कुछ वर्षों से इतिहास की सुरक्षा का ठोस कार्य किया जा रहा है यथा पं. लेखराम जी का हस्तलिखित पत्र, श्री श्रद्धाराम फिल्लोरी का ऋषि के नाम पत्र, प्रो. महेशप्रसाद, प्रो. शिवदयाल जी, स्वामी धर्मानन्द जी, पं. विष्णुदत्त जी के चित्र, वीर भक्तसिंह और स्वामी वेदानन्द जी के हस्तलेख परोपकारी भेंट कर चुका है।

अब शीघ्र राव युधिष्ठिर सिंह की कोटि के ऋषि भक्त का एक दुर्लभ चित्र परोपकारी देने जा रहा है। वर्षों की भाग-दौड़ के पश्चात् रेवाड़ी क्षेत्र के आर्यों ने राव जी के दो चित्र उपलब्ध करवाये हैं। एक तो हम ऋषि जीवन में देंगे दूसरा परोपकारी में छपेगा। दौंगड़ा अहीर के सम्मेलन में भी दो सज्जनों ने हमें चित्र उपलब्ध करवाने का वचन दिया था। न जाने वे कैसे भूल गये। प्रिय अनिल आर्य को लम्बे समय से यह कार्य सौंप रखा था। ईश्वर कृपा से ३०-३५ वर्ष की भागदौड़ के पश्चात् यह कार्य सिरे चढ़ गया। हम

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

सबको बताते रहे कि ५३-५४ वर्ष पूर्व स्वामी सुधानन्द जी (तब ब्र. सत्यव्रत) के साथ हमने रेवाड़ी की गोशाला में राव युधिष्ठिर जी का चित्र अवश्य देखा था परन्तु कहीं से मिल नहीं रहा था। ऋषि जीवन का कार्य पूरा होते-होते यह चित्र मिल गया, यह एक आनन्ददायक कार्य हो गया।

खोज तो कर देखिये:- महर्षि ने हरियाणा में सन्देश उपदेश तो केवल रेवाड़ी में ही दिया परन्तु आप पूर्व को जाते-जाते कुछ दिन अम्बाला भी रुके थे। वहाँ प्रचार नहीं हुआ था। महर्षि के घोर निन्दक श्री जीयालाल जैनी ने संवत् १९२४ (सन् १८६७) में हरियाणा के गुड़गाँव जनपद के एक ओर कस्बा में महर्षि के आने की एक घटना दी है। केवल जीयालाल ने ही यह लिखा है कि ऋषि एक बार साधु मण्डली के साथ फ़र्रुखनगर पधारकर वहाँ एक दयानन्द नाम के जैनी बाबा से मिलने गये थे। वह यह भी मानता है कि दयानन्द जैनी कोई बड़ा विद्वान् तो था नहीं सो ऋषि वहाँ से साधुओं के संग कुम्भ मेला पर चले गये।

यह ठीक है कि फर्रुखनगर में फेरी डालने का अब तक तो कोई प्रमाण मिला नहीं। ऋषि जी के स्वलिखित आत्मवृत्त में इसकी चर्चा नहीं परन्तु ऋषि थे तो तब मथुरा के आसपास के क्षेत्र में। जाँच करने में क्या हानि है। श्री धर्मेन्द्र जी जिज्ञासु समय दें तो इस दिशा में खोज हो सकती है। सम्भव है यह जीयालाल की गढन्त हो परन्तु इस हदीस के घड़ने से उसको कुछ लाभ तो था नहीं। इसलिये किसी सत्यनिष्ठ गवेषक को इसके लिए कुछ समय देना चाहिये।

ऐसे आर्यवीर चाहिये:- बातें बनाने वाले तो बहुत देख लिये। एक बन्धु ने कहा कि पहले स्वामी वेदानन्द जी, आचार्य प्रियव्रत जी, आचार्य चमूपति जी, पं. शिवकुमार जी की कोटि के वेद के प्रकाण्ड विद्वान् 'वेदामृत' शीर्षक देकर आर्य पत्रों में वेदोपदेश दिया करते थे। अब तो आर्यसमाज में वेद व्याख्याकारों व इतिहासकारों की बाढ़ सी आ गई है। इस वेदना को हमने भी सुन लिया। क्या प्रतिक्रिया देते? उस भाई की पीड़ा यह थी कि जिस कार्य के करने के हम योग्य हैं, वह कार्य करते नहीं और जिसके हम योग्य नहीं उसके हम विशेषज्ञ बनकर कार्य बनाते नहीं, बिगाड़ते अवश्य हैं।

हमने उस भाई का ध्यान बदलने के लिये कहा कि जो समर्पण भाव श्रद्धा से नये-नये कार्यकर्ता कुछ ठोस कार्य करने में लगे हैं उनकी ओर देखो। उनकी पीठ थपथपाओं। उनको एक उदाहरण दिया। एक सज्जन ने ऋषि जीवन लिखते हुए किसी प्रसंग में जम्मू कश्मीर के महाराज रणवीर सिंह के दीवान का नाम अनन्तराय लिख दिया। हमने उस सज्जन से बहुत कहा कि पं. लेखराम जी ने उसका नाम अनन्तराम लिखा है। उसका शुद्ध नाम यही था। पंजाब, हरियाणा व जम्मू कश्मीर में 'अनन्तराय' नाम होता ही नहीं परन्तु वह मानने वाले कहाँ।

अब ऋषि जीवन को हाथ में लिया तो यह समस्या खड़ी हुई कि दीवान जी के नाम 'अनन्तराम' को कैसे प्रमाणित करें? यह भी तर्क दिया कि हमारा जन्म जम्मू के सीमावर्ती क्षेत्र में हुआ। जम्मू की सीमा पर २८-३० वर्ष की आयु तक रहे। कई पुस्तकों के प्रमाण खोज-खोज कर दिये। फिर यह सूझा कि महाराजा रणवीर सिंह अथवा जम्मू के इतिहास से इसकी पुष्टि के लिये प्रमाण लाया जावे। हम लेखन कार्य छोड़कर कहाँ-कहाँ जायें। श्री मनोज आर्य नाम के एक सुयोग्य उत्साही युवक को यह कार्य सौंपा। उसने अविलम्ब जम्मू जाकर महाराजा रणवीरसिंह पर लिखा गया नवीनतम खोजपूर्ण ग्रन्थ बड़ी कठिनाई से कहीं पाया। उसकी प्रतिछाया भी प्राप्त कर ली। उस आर्यवीर को अब गौरव क्यों न हो कि महर्षि के सबसे बड़े जीवन चरित्र के यज्ञ में उसने भी आहुति डाली है। पं. लेखराम जी की सेना में ऐसे-ऐसे सहस्रों युवक चाहिये।

परोपकारी के प्रेमी पाठकों का आभार:- राधा स्वामी मत के अति उत्साही सज्जनों ने महर्षि दयानन्द जी के बारे में योजनाबद्ध ढंग से जो भ्रामक प्रचार छेड़ रखा है हमने स्वामी देवव्रत जी की प्रेरणा से तीन राधा स्वामी गुरुओं की पुस्तकों के आधार पर उसका 'तड़प-झड़प' में निराकरण कर दिया। कई प्रबुद्ध पाठकों ने इस पर हमें धन्यवाद व बधाई दी। एक भाई ने यह भी पूछा, "क्या हजूर जी महाराज का लिखा ऋषि जीवन आपने पढ़ा है?"

हमने कहा, हम अनुमान प्रमाण से नहीं लिखा करते। हम पं. लेखराम के मानस पुत्र हैं। हमारे पूज्य स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी बिना प्रमाण के लिखने व बोलने को एक पाप समझते थे। हमने यह पुस्तक पढ़ी भी है और अब भी हमारे पास है। एक भाई ने कहा कि देवव्रत जी ने बहुत अच्छा किया जो आपसे उत्तर दिलवा दिया अन्यथा आर्यसमाज तो अब तक उनको युक्ति व प्रमाण से निरुत्तर न कर पाया। अटकलें लगाकर चुप बैठ गये।

राधा स्वामी यह भी कहते व लिखते हैं कि स्वामी दयानन्द जी ने राधास्वामी मत के संस्थापक श्री शिवदयाल से मन्त्र लिया था तभी तो ग्यारहवें समुल्लास में हमारे मत का खण्डन नहीं किया। नये-नये छोटे कई मतों का ऋषि ने खण्डन नहीं किया परन्तु राधा स्वामियों के इस तर्क का मुँह तोड़ उत्तर पं. लेखराम की परम्परा का व्यक्ति ही दे सकता है। पुस्तकों के नाम व संस्करणों की सूचियाँ बनाने वाले किसी प्रहार का प्रतिकार नहीं कर सकते। हमने ऋषि-जीवन में इस भ्रामक प्रचार का प्रतिकार कर दिया

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

है। रही श्री शिवदयाल जी से मन्त्र लेने के कारण उनके मत का खण्डन न करने की बात सो हमारा निवेदन है कि दुर्भाग्य से हमारे लोगों ने पं. लेखराम जी की बजाय मैक्समूलर आदि गोरे लोगों को हृदय में बिठा लिया है। जिस मैक्समूलर को ऋषि वेद विद्या में बालक घोषित करते हैं यह उसे वेदज्ञ बताकर उसके मानस पुत्र बनकर हमें भ्रमित करने पर तुले हुए हैं।

मित्रो! आँखें खोलकर पं. लेखराम जी का साहित्य पढ़ो। उनका लिखा ऋषि जीवन पढ़ो। ऋषि ने बाबा शिवदयाल का नाम लेकर उसके द्वारा प्रसारित अंधविश्वास का प्रबल खण्डन किया है। हमारे वाले ऋषि जीवन में ऋषि का लिखा यह प्रमाण भी मिलेगा। हमारे पुरुषार्थ से जिन्होंने लाभ उठाया उन आर्य भाइयों का हम आभार मानते हैं।

एक ग्रामीण प्रचार सम्मेलनः- उत्सव सम्मेलन तो बहुत देखने को मिलते हैं परन्तु इन दिनों हरियाणा के आर्यसमाज दौंगड़ा अहीर की रंगत ही कुछ निराली देखी। जिला महेन्द्रगढ़ के आर्यों ने मिलकर दो दिवसीय प्रचार सम्मेलन रखा। श्री धर्मवीर जी आर्य, आचार्य विजयपाल जी, आचार्य सोमदेव जी के अतिरिक्त हमें भी आमन्त्रित किया गया। भारी संख्या में भजनोपदेशकों के भजन सुनने का अवसर मिला। किसी राजनेता की शरण लिये बिना उत्सव में उपस्थिति दिल्ली जैसे नगरों के समाजों से कहीं अच्छी थी। दूरस्थ दीनानगर दयानन्द मठ से स्वामी सदानन्द जी भी आकर उत्सव की शोभा देखकर आनन्दित हुए। सैद्धान्तिक प्रचार तथा संगठन को मुख्य रखकर सब विद्वानों ने उपदेश तथा व्याख्यान दिये। संगठन को सुदृढ़ बनाने व अपनी कमियाँ दूर करने के लिये आचार्य विजयपाल जी तथा श्री डॉ. धर्मवीर जी ने अत्यन्त प्रेरणाप्रद व्याख्यान दिये।

गत तीस वर्षों में हमने यह पहला ऐसा विशुद्ध आर्यसमाजी उत्सव देखा। स्त्रियाँ, पुरुष, बालक, बालिकायें, युवक सबने श्रद्धापूर्वक वेद-प्रचार को श्रवण किया। व्यवस्था बहुत अच्छी थी। अधिकारियों तथा कार्यकर्ताओं का परस्पर प्रेम, सहयोग, सेवाभाव व विनम्रता की छाप लेकर हम लौटे। अधिकारी अत्यन्त श्रद्धा व प्रेम से जाने वाले विद्वानों को सड़क तक विदा करने आते रहे। भजनोपदेशकों में श्री पं. नरदेव जी की रंगत बहुत न्यारी व प्यारी थी। उनके भजन व कवितायें सुनकर हमें तो कविरत्न प्रकाश जी की याद आ जाती है।

हम पुनः दोहरा-दोहरा कर कहेंगे कि इस सम्मेलन में किसी राजनेता की परछाई नहीं थी अतः वैदिक धर्म प्रचार ही मुख्य रहा। हाँ! एक कमी सर्वत्र चुभती है वहाँ भी चुभी। किसी भी भजनोपदेशक स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, श्याम भाई, भक्त फूलसिंह, वीर राजपाल, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, पूज्य नारायण स्वामी आदि बलिदानियों पर कोई गीत न सुनाया। आर्यों ने अपने ऊर्जा स्रोतों से अपना कनेक्शन ही काट दिया है। यह घातक नीति है। इस कमी को दूर करना होगा। सब समाजों को दौंगड़ा अहीर के उत्सव से कुछ सीखना चाहिये।

यही धर्म निरपेक्षता हैः- देश में आपा धापी मची हुई है। छोटे-छोटे काम लटकाकर सरकारी कर्मचारी, लोगों को घूस देने के लिये विवश करते हैं। आज तो क्लर्क छुट्टी पर है। आज साहब नहीं आये। आप वह फार्म लाओ। अपना फोटो लाओ। ऐसे-ऐसे अड़ंगे डालकर लोगों को दुःखी किया जाता है। जीना दूभर हो रहा है। कुशासन के सुधार की बजाय सरकार के कर्णधार धर्म निरपेक्षता पर प्रवचन देने व मोदी को कोसने पर लगे रहते हैं। संघ के भागवत जी व तोगड़िया जी दोनों तिलक लगाकर टी.वी. व प्रेस में अपने वक्तव्य देने में रस लेते हैं। हिन्दुओं के दोषों, दुर्बलताओं को दूर करने के लिए इन्होंने कभी कुछ किया तो क्या, कुछ कहा तक नहीं।

जाति बन्धन के कैंसर से हिन्दुओं को मुक्त करने के लिए भागवत जी नागपुर क्षेत्र में ही दो चार सहस्र युवक-युवतियों के विवाह करवा देते तो एक लहर चल पड़ती। इन्होंने कभी यह नहीं कहा कि भगवान् एक है। वह सर्वत्र है। वह निर्विकार है। वह हमारे भीतर बाहर है। हिन्दुओं के भगवान् कितने हैं। विधर्मियों के इस व्यंग्य का तोगड़िया जी उत्तर तो दें? व्यक्ति धर्मात्मा, महात्मा व पुण्यात्मा कैसे बनता है? क्या कर्मों का फल मिलता है अथवा नदियों में स्नान से पाप कटते हैं? देश कंगाल हो रहा है। डॉलर ने रुपये को रौंद दिया है और सब भगवान् मुकट, सिंहासन व चढ़ावों से मालामाल हो रहे हैं। यह क्या? मन्नतें माँगने व कर्मफल सिद्धान्त की क्या संगति है? विवेकानन्द जी के फोटो लगाकर तो इन प्रश्नों का उत्तर न मिलेगा।

हैदराबाद से निज़ाम और कासिम रिज़वी के दीवानों ने ज़वाले हैदराबाद पुस्तक लिखकर हैदराबाद के भारत का अंग बनने पर रक्त रोदन करते हुए भारत के विरुद्ध विष उगला है। वे सब कांग्रेस के कृपा पात्र हैं। कांग्रेस ने इन तत्त्वों पर कभी अंकुश नहीं लगाया। किसी को दण्डित नहीं किया। इन्होंने भारत सरकार से निज़ाम उस्मान का गुणगान करते हुए उसकी जीवनी भी छपवा ली है। जिस निज़ाम ने हिन्दू स्त्रियों, बच्चों, पुरुषों को, ग्रामों को जीवित जलाया। देश के विरुद्ध युद्ध लड़ा। उसे कांग्रेस ने राज प्रमुख बनाया और भारत की स्वतन्त्रता का खुलकर समर्थन करने वाले महाराजा हरिसिंह को नेहरू ने अपमानित किया।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

लाखों हिन्दू घरों से उजाड़ दिये गये। वे धक्के खा रहे हैं। पंजाब में उग्रवाद इतना अकालियों की देन नहीं जितनी कांग्रेस की है। यह इतिहास जानता है। बसों से उतार-उतार कर हिन्दू मारे गये। सिखों को भी आतंकवादियों ने चुन-चुन कर मारा। आज तक पंजाब में निर्दोषों की हत्या पर कोई दिग्विजय, मोहनसिंह, तिवाड़ी, नीतिश नहीं बोला। नैशलिस्ट मुस्लिम, नैशलिस्ट सिख पार्टियाँ व नेता कांग्रेस की उपज रहे अब नैशलिस्ट हिन्दू शब्द पर कांग्रेसी आग उगल रहे हैं। देश का विभाजन होगा। यह रागिनी कांग्रेसी ही छेड़े रखते हैं। देश में समरसता कैसे आये? हिन्दुओं को अपमानित करना, विभाजित करना यही धर्म निरपेक्षता है क्या?

वेद सदन, अबोहर पंजाब-१५२११६

ऋषि उद्यान में अब संस्कृत सीखने का अवसर

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में अब सभी आर्य-जनों के लिए देव भाषा=संस्कृत-भाषा सीखने का अवसर उपलब्ध है। यह प्रशिक्षण नि:शुल्क होगा। संस्कृत-भाषा को सीखने के इच्छुक शीघ्र सम्पर्क करें।

-: सम्पर्क :-

उपाध्याय भैरुलाल, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर, राजस्थान

दूरभाष - ०९८२९१७६४६०

।।ओ३म्।।

वेद गोष्ठी का विषय

वेद और सत्यार्थ प्रकाश का १२वाँ समुल्लास

विषय:- चारवाक, बौद्ध, जैन सिद्धान्तों के खण्डन से सम्बन्धित विषय।

१. पृथिव्यादि भूतों के संयोग से शरीर में चेतनता उत्पन्न होती है।
२. विषयों से उपलब्ध क्षणिक सुख-दु:ख ही पुरुषार्थ का फल है, इससे भिन्न स्वर्ग=मोक्ष कुछ नहीं है।
३. मूल-द्रव्य में जगत् की उत्पत्ति करने का स्वाभाविक सामर्थ्य होने से जगदुत्पत्ति में चेतन कर्त्ता की आवश्यकता नहीं है।
४. सर्वशून्य सिद्धान्त।
५. सर्व संसार दु:खरूप का सिद्धान्त।
६. क्षणिकवाद का सिद्धान्त।
७. स्याद्वाद् और सप्तभङ्गी न्याय।
८. जीव से भिन्न अन्य कोई चेतन तत्त्व नहीं है।
९. ईश्वर की सिद्धि में प्रत्यक्षादि प्रमाण सिद्ध नहीं हैं।
१०. ईश्वर का सृष्टिकर्त्ता होना, व्यापक होना, सदा मुक्त होना रूपी गुणों के खण्डन के द्वारा ईश्वर नहीं है।
११. कार्य जगत्, जीव के कर्म और बन्ध अनादि हैं।
१२. जीव अनन्त हैं।
१३. पाषाणादि मूर्ति पूजा और उससे मुक्ति।
१४. मुक्ति का अनन्त काल है।
१५. एक शरीर में अनन्त जीव हैं।
१६. शरीर व भूगोल के पदार्थों की आयु व परिमाण।
१७. हिंसा व अहिंसा का स्वरूप।

सहयोगी ग्रन्थ

१ - सर्वदर्शन संग्रह
२ - प्रकरण रत्नाकर
३ - वेदों का यथार्थ स्वरूप-पं. धर्मदेव विद्यामार्तण्ड
४ - स्वामी वेदानन्द जी की टिप्पणियाँ (सत्यार्थ प्रकाश में)

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर (प्राथमिक स्तर)

दिनांक : २० से २७ अक्टूबर, २०१३

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति उपलब्ध नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे। साथ ही पढ़ाये गये विषयों की लिखित परीक्षा व आपके द्वारा पालन किये गये शिविर के अनुशासन का भी आकलन किया जायेगा, इसी आधार पर प्रमाण-पत्र भी दिये जायेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ना होगा।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
८. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
९. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ-मंत्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क ५०० से १५०० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जाता है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मंत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

।।ओ३म्।।

अलग-अलग स्तरों में योग-साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि-उद्यान, अजमेर में वर्षों से अब तक योग्य आचार्यों द्वारा योग-साधकों का निर्माण करने के लिए वर्ष में दो बार योग से सम्बन्धित व ध्यान से सम्बन्धित शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है और साधकों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास किया जाता रहा है। समाज में और अधिक योग्य व आदर्श साधकों की आवश्यकता अनुभव करते हुए इस वर्ष जून मास के शिविर में नवीन पाठ्यक्रम की विधि अपनाकर इस दिशा में एक नया मोड़ दिया गया है।

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान में आयोजित १६ से २३ जून २०१३ को योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर) लगाया गया। यह शिविर ध्यान से सम्बन्धित, ईश्वर-जीव-प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को जानने से सम्बन्धित, योगदर्शन व सांख्यदर्शन के कुछ प्रमुख विषयों के सूत्रों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर योगदर्शन व सांख्यदर्शन को जानने-समझने से सम्बन्धित, आत्मनिरीक्षण में कुछ नये विषयों को सूक्ष्मता से समझने से सम्बन्धित, दिनचर्या को अनुशासित व सात्त्विक बनाने से सम्बन्धित तथा विभिन्न सैद्धान्तिक व व्यावहारिक विषयों के ज्ञान से सम्बन्धित प्रारम्भिक स्तर के योग के इच्छुक साधकों के लिए लगाया गया। इस योग-साधना शिविर को आगामी वर्षों में चतुर्थ स्तर तक लगाने की योजना बनाई गई है। प्रारम्भिक स्तर से लेकर द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्तर तक के शिविरों में पूर्व सूचित पाठ्यक्रमित विषयों में अधिक से अधिक सूक्ष्मता, दिनचर्या में और अधिक अनुशासन व सात्त्विकता, आहार-शुद्धि से लेकर मन, आत्मा की शुद्धि पर्यन्त अनुभवात्मक स्तर पर योग-साधकों को ज्ञान करवाया जाएगा। प्रत्येक स्तर के साधकों को उनके सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्धित तथा उनके व्यक्तिगत आचरण व अनुशासन को दृष्टि में रखते हुए परीक्षा-पद्धति के माध्यम से प्रथम-श्रेणी व उच्च प्रथम-श्रेणी के प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे। इस प्रकार की विधि से योग्य साधकों को समाज में सम्मान मिलेगा तथा वे और अधिक उत्साह से समाज व देश के कल्याण के लिए कार्यरत होंगे, उन्हें देखकर अन्य साधक भी प्रेरित होंगे।

परोपकारिणी सभा व गुरुकुल ऋषि उद्यान के योग्य आचार्यों व संयोजकों द्वारा नवनिर्मित इस योजना के प्राथमिक स्तर में पर्याप्त उपलब्धि हुई है। भविष्य में इस योजना में आप सब के सहयोग की आवश्यकता है। अगला शिविर दिनांक २० से २७ अक्टूबर।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

ध्यान प्रशिक्षण योजना

ध्यान का महत्त्व सदा से रहा है। आज के तनाव व प्रतिस्पर्धा के वातावरण में यह अधिक आवश्यक हो गया है। नई पीढ़ी यज्ञादि कर्मकाण्ड की अपेक्षा-ध्यान में अधिक रुचि व आकर्षण रखने लगी है। प्रौढ़ों व वृद्धों की आध्यात्मिक उन्नति की चाह ध्यान के माध्यम से पूरी हो सकती है। समाज सुधार व उन्नति के इच्छुक व इसमें प्रयत्नशील आर्यों को ध्यान प्रशिक्षण का उपाय सार्थक लगेगा। ऐसी इच्छा वाले सज्जन अपने यहाँ किसी भी आर्यसमाज, आर्य संस्था, विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल, सार्वजनिक स्थान आदि में 'ध्यान-प्रशिक्षण' करवाना चाहते हों, तो कृपया अपने व कार्यक्रम-स्थान, समय आदि की पूरी सूचना के साथ सम्पर्क करें।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षित अनेक ध्यान-प्रशिक्षक इस कार्य में सेवा के लिए तैयार हैं। आयोजकों को कार्यक्रम हेतु स्थान, बैठक-व्यवस्था, आवश्यक हो तो माईक आदि की व्यवस्था, प्रशिक्षक के निवास, भोजन, आवागमन यात्रा आदि की व्यवस्था करनी होगी।

सम्पर्क-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षण योजना, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, ३०५००१, दूरभाष-०१४५-२४६०१६४, ईमेल-psabhaa@gmail.com

---

ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर

२४ नवम्बर से १ दिसम्बर, २०१३, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर। अधिकतम संख्या-५०। मात्र पूर्व पञ्जीकृत प्रतिभागियों के लिए। इसमें विद्वद् गोष्ठी द्वारा निर्धारित आर्यसमाज की ध्यान पद्धति का प्रशिक्षण दिया जायेगा व ध्यान करवाने का अभ्यास भी करवाया जायेगा। लिखित एवं प्रायोगिक परीक्षा के बाद योग्य व्यक्तियों को परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षक-प्रमाण पत्र भी दिये जायेंगे। शिविर शुल्क १००० रु. है। २४ नवम्बर सायं ४ बजे तक पहुँचना अनिवार्य है। विलम्ब से आने वालों की शिविर में सहभागिता नहीं हो पायेगी। शिविर का समापन १ दिसम्बर को सायं ५ बजे तक हो जायेगा। इच्छुक व्यक्ति, कृपया सम्पर्क करें-९४१४००३७५६, समय-मध्याह्न १.३० से २.३०।

पता-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर, परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर, राज. ३०५००१। ईमेल-psabhaa@gmail.com

---

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. २० से २७ अक्टूबर-**योग-साधना शिविर प्राथमिक स्तर**, सम्पर्क : ०१४५-२४६०१६४

२. २४ नवम्बर से १ दिसम्बर तक **ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर,** सम्पर्क : ०९४१४००३७५६, समय : मध्याह्न १.३० से २.३० बजे।

३. ऋषि मेला ८, ९, १० नवम्बर, २०१३।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

हमारी विदेश (इंग्लैण्ड) यात्रा

– **उषा व रमेश मुनि**

हम (रमेश मुनि एवं उषा आर्या) १४ जून से ७ जुलाई तक इंग्लैण्ड की पारिवारिक यात्रा पर जाने के लिए ११ जून २०१३ को रात १०.३० बजे अजमेर से चेतक एक्सप्रेस द्वारा दिल्ली के लिए चले। १२ जून को प्रात:काल दिल्ली छावनी स्टेशन पर उतर जनकपुरी बेटे के घर पर गए। उसी सायं आर्य समाज जनकपुरी, सी-३ में महिला सत्संग में ध्यान का प्रशिक्षण देने के लिए गए तथा लगभग ५० श्रोत्रायों को १५-२० मिनट में ध्यान के ९ बिन्दुओं का विस्तृत विवरण समझाया, इसके बाद १५ मिनट का ध्यान क्रियात्मक रूप से करवाया। सभी श्रोताओं को अच्छी अनुभूति हुई। १३ जून को भी सायं ध्यान का अभ्यास कराया गया। इसके बाद साधकों के प्रश्नों, जिज्ञासाओं का समाधान किया गया। इस प्रकार से हमारी यात्रा का प्रारम्भ जनकपुरी आर्यसमाज में दो बार ध्यान प्रशिक्षण देने से हुआ।

१४ जून को प्रात: ९.३० बजे हम दिल्ली के इन्दिरा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हवाई पत्तन के लिए चले। हमारे विमान ने मध्याह्न २.१५ पर उड़ान भरी और लगभग ९ घण्टों की यात्रा के बाद हम लन्दन के हीथरो हवाई अड्डे पर उतरे। वहाँ रह रहा हमारा बेटा संजीव जिसने हमें बुलाया था, लेने आया था, उसके साथ हम लगभग रात्रि १० बजे घर पहुँचे।

१५ जून को हमने लेइसटर में रह रही माता जयाबेन पोरिया जी को यू.के. में पहुँचने की सूचना दी। २० जून को उन्होंने अपने बेटे को मिलने के लिए अमेरीका जाना था, उससे पहले उन्होंने हमें लेइसटर आने को कहा। १६ जून रविवार को हमने आने की सूचना दे दी। प्रात: ८.३० पर हम दोनों बेटे संजीव के साथ चले और ११ बजे माता जी के घर पर पहुँच गए। वहाँ कुछ प्रात:राश ले कर माता जी हमें एक हॉल में ले गईं। वहाँ उनके जान-पहिचार के परिवार की माता लक्ष्मी देवी जी (आयु ८५ वर्ष) के जन्म दिन के उपलक्ष्य में यज्ञ का कार्यक्रम था। माता जयाबेन पोरिया जी ने यज्ञ करवाया। मुझे १५ मिनट प्रवचन का समय दिलवाया। ईश्वर की सत्ता, ईश्वर की शक्ति, प्राप्ति के उपाय बताए। माता लक्ष्मी देव जी ने इसके लिए मुझे ६० पाऊंड दक्षिणा दी। वहाँ ही भोजन का प्रबन्ध था, भोजन करके माता जया बेन को उनके घर छोड़ हम वापिस चल पड़े और सांय ६ बजे घर वापिस आ गए। यू.के. में जून-जुलाई में सूर्योदय प्रात: ४ बजे के लगभग और सूर्यास्त रात्रि १० बजे के आसपास होता है।

१७ जून को श्रीमती ममता बंसल (बहू) ने अपने परिचित परिवारों की महिलाओं को यज्ञ और ध्यान सीखने के लिए आमन्त्रित किया। उन्हें प्रात: ११ बजे पहुँचने का समय दिया। लगभग २० महिलाएँ आईं। १२ बजे से यज्ञ किया, यज्ञ की महत्ता और विधि के बारे में समझाया। फिर ध्यान को करने की विधि १५-२० मिनट में समझाई (९ बिन्दू समझाए) फिर १५ मिनट क्रियात्मक ध्यान करवाया। सभी ने कहा ऐसा कार्यक्रम हमें यहाँ देखने या सुनने में नहीं आता। सभी को अच्छा अनुभव हुआ।

२१ जून को दक्षिण प्रान्तों के भारतीय परिवारों को आमन्त्रित किया जो पहले नहीं बुलाए थे। इसमें ९ महिलाएँ आईं, इन्हें भी यज्ञ की विधि और ध्यान करने का प्रशिक्षण दिया।

२३ जून को आर्यसमाज लन्दन (इलिंग) के कार्यक्रम में जो दोपहर बाद २.३० पर आरम्भ होता है। पहले यज्ञ, भजन, वेद सुधा (विद्वान् द्वारा किसी एक वेद मन्त्र की व्याख्या) ४ बजे तक, इसके बाद मुझे २० मिनट प्रवचन के लिए दिए। पश्चात् आरती के भजन के बाद नाश्ता दिया जाता है। ६ बजे हम वापिस चले, ७.३० पर घर पहुँचे।

२५ जून को पहली पारी में आईं २० महिलाओं से श्रीमती तरुणा जी, श्री अनिल कुमार जी ने अपने घर पर यज्ञ करने और ध्यान सिखाने के लिए बुलाया। वहाँ लगभग १० महिलाएँ थीं। उनके घर श्रीमती तरुणा जी से यज्ञ करवाया और ध्यान क्रियात्मक रूप से करवाया।

२७ जून को अन्य परिवारों को घर आमन्त्रित किया। ९-१० महिलाएँ आईं। इनको भी यज्ञ करने की विधि और ध्यान का प्रशिक्षण दिया। आमन्त्रित महिलाओं का भोजन भी घर पर ही होता था।

२८ जून को श्रीमती सुशमिता जी के घर पर यज्ञ करके ध्यान विधि सिखाई। इसमें श्रीमती रीमा जी के पतिदेव और दो बच्चे थे।

३० जून को दूसरी बार आर्यसमाज लन्दन गए। वहाँ मुझे २० मिनट वेद सुधा का समय बोलने को दिया गया।

१ जुलाई को श्रीमती डोली जी-श्री नीरज जी के घर पर ध्यान पद्धति सिखाई, इनके पतिदेव और दो बच्चे थे। उनका फ्लैट होने से वहाँ यज्ञ करना सम्भव नहीं हो पाता।

३ जुलाई को श्रीमती रीमा जी-श्री राम नन्दुला जी के

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

घर पर ध्यान की विधि सिखाई। इनके घर पर श्रीमती तरुणा जी, उनके पतिदेव और दो बच्चे, गृहिणी के पतिदेव और दो बच्चे भी थे। उन्होंने ५० पाऊंड दान दिया।

५ जुलाई को श्रीमती ममता बंसल जी ने पहली बार बुलाए परिवारों को बच्चों सहित बुलाया। २४-२५ बच्चे, २०-२२ महिलाएँ और ४-५ पुरुष भी आए। यज्ञ ममता जी से करवाया, बच्चों से सामग्री की आहुतियाँ डलवाईं। सभी महिलाओं और पुरुषों ने भी आहुति डाली। यज्ञ के बाद बच्चों को ईश्वर से हमारे सम्बन्ध, ईश्वर के कार्य और ईश्वर का सच्चा स्वरूप समझाया।

६ जुलाई को श्रीमती श्वेता जी-भरत गुप्ता जी के घर पर यज्ञ करवाया, भजन गाए और यज्ञ की महत्ता के बारे में समझाया। इनके पतिदेव और बच्चे भी थे। इन्होंने गुरुकुल के लिए मिठाई का डिब्बा भेंट में दिया।

बच्चों के स्कूल में खेलों के कार्यक्रम थे। एक दिन आदित्य बंसल के (बड़ा पोता), दूसरे दिन अंश बंसल (छोटा पोता) के दौड़ के कार्यक्रम देखने गए। एक दिन आदित्य के क्रिकेट मैच को देखने और एक दिन अंश का नाटक देखने गए।

७ जुलाई को हमने अंश (आयु ७ वर्ष) को कहा, आज आप यज्ञ पर बैठोगे, वह कहने लगा, मैं घी डालूँगा तो बैठूँगा, हमने उसे बिठाया और उसने ठीक प्रकार से घृत आहुति डाली।

वहाँ रहने वाले भारतीय परिवारों में से कुछ परिवार खाद्य पदार्थों में अण्डा होने पर भी प्रयोग कर लेते हैं। कुछ परिवार मांसाहारी भी हैं। हमने जिन घरों में यज्ञ किया वे मांसाहारी नहीं हैं। हमारे लिए भोजन उन्होंने बिना लहसुन और प्याज का ही बनाया और बिना लहसुन प्याज वाला भोजन सभी ने प्रयोग करके खूब सराहा।

७ जुलाई हमारा इंग्लैण्ड में आखिरी दिन था। हम सांय ४ बजे हीथरो हवाई अड्डे के लिए चल पड़े। सामान जमा करवाया, सुरक्षा जाँच (सिक्युरिटी क्लियर) करवाकर अन्दर प्रवेश किया। रात को वहाँ के समयानुसार ८.४५ की उड़ान थी। जहाज समय पर उड़ा, ८ जुलाई को प्रातः ९.१५ दिल्ली इन्दिरा गाँधी हवाई पत्तन पर उतरा। अवनीश बंसल (बेटा) लेने आया था। घर पहुँच गए।

९ जुलाई को प्रातः आर्यसमाज जनकपुरी सी-३ में प्रवचन दिया। रात ११.१५ हरिद्वार एक्सप्रेस से चल कर १० जुलाई प्रातः ७ बजे ऋषि उद्यान, अजमेर में पहुँच गए।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

श्री नन्दलाल जी- एक प्रेरणास्पद जीवन

- **ब्र. राजेन्द्रार्य**

परमपिता परमेश्वर की असीम कृपा से विगत दिनों (१७ जून से ७ जुलाई २०१३ तक) देवभूमि उत्तराखण्ड में रहने, स्वाध्याय, साधना, सत्संग व योगाभ्यास करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इसी समय केदारघाटी में बादल फटने व उसके फलस्वरूप बाढ़ व भूस्खलन से भयंकर त्रासदी हुई। मेरे शुभचिन्तकों ने दूरभाष पर त्रासदी सूचना दी व आगे पहाड़ों पर न जाने की सलाह दी। अतः मैंने आगे न जाकर हरिद्वार, ऋषिकेश, देहरादून आदि स्थानों पर स्थित आर्य संस्थाओं का भ्रमण किया। इस दौरान पूज्य आचार्य श्री आशीष जी दर्शनाचार्य के आत्मिक स्नेह के कारण पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी, श्री प्रभु आश्रित जी महाराज एवं महात्मा चयनमुनि जी की साधना स्थली- वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नालापानी, देहरादून में दिनाङ्क १९/६/२०१३ से २/७/२०१३ तक साधना, स्वाध्याय एवं क्रियात्मक योगाभ्यास का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ। पूज्य आचार्य जी ने युवकों के अन्दर वैदिक धर्म-संस्कृति- राष्ट्रप्रेम व चरित्र निर्माण की शिक्षा प्रदान करने के लिए दिनाङ्क १९/६/२०१३ से २३/६/२०१३ तक 'दिव्य जीवन निर्माण शिविर' का आयोजन किया था। जिसमें चण्डीगढ़, दिल्ली, हरियाणा, उत्तरप्रदेश एवं उत्तराखण्ड के लगभग ६५ छात्रों ने भाग लिया। ये छात्र मेडिकल, इंजीनियरिंग, डिप्लोमा एवं स्नातक आदि में शिक्षारत हैं। सभी छात्रों ने मार्शल आर्ट, ध्यान योग, यज्ञ प्रशिक्षण, अध्यात्म एवं शंका समाधान की कक्षाओं में अनुशासन का पालन करते हुए प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त किया। पूज्य आचार्य जी व ट्रस्टियों के प्रयास से शिविरकाल में प्रातराश, भोजन, फल व दूध आदि की उत्तम व्यवस्था की गई थी। शिविर समापन समारोह के समय ट्रस्ट के माननीय मन्त्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी एवं विशिष्ट अतिथियों द्वारा शिविरार्थियों को 'प्रमाण पत्र' के साथ सत्यार्थ प्रकाश, लव जेहाद, क्या है आपके जीवन की सच्चाई?, वैदिक संस्कृति एक सरल परिचय आदि साहित्य का एक-एक सेट प्रदान किया गया। पूज्य आचार्य आशीष जी ने मार्शल आर्ट के प्रशिक्षकों को यज्ञशाला की 'इदन्न मम साधना स्थली' पर यज्ञोपरान्त सम्मानित किया। शिविर से प्रेरणा प्राप्त कर अनेक युवकों ने मांस, शराब, गुटका आदि जैसे दुर्व्यसनों का परित्याग करने का संकल्प लिया। वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नालापानी, देहरादून में साधनाकाल में श्रद्धेय श्री उत्तममुनि जी, पूज्य आचार्य श्री आशीष जी एवं वानप्रस्थी श्री सत्यप्रिय जी (दिल्ली) ने मेरी विशेष सहायता की। मैं इन सभी महानुभावों के उपकारों के प्रति सर्वदा कृतज्ञ रहूँगा। कुछ माताओं ने मेरे मन्त्रोच्चारण को शुद्ध कराया। पूज्या माता कृष्णा कपूर (झांसी) ने मुझे यजुर्वेद की मूल संहिता सस्नेह भेंट में प्रदान की। वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर, हरिद्वार से पधारी माता विनीता आर्या जी ने हमें हरिद्वार में योगाभ्यास व ध्यानादि का अभ्यास करने के लिए निमन्त्रण दिया। इस दौरान पूज्या माता जी के मामा जी सम्माननीय डॉ. शिवलाल कुमार जी ने अपने पूज्य पिता जी के आर्यत्व के कुछ संस्मरण सुनाये जिन्हें मैं प्रेरणा के लिए उन्हीं की भाषाशैली में यहाँ पर संक्षेप में उद्धृत कर रहा हूँ-

मेरे पिता श्री नन्दलाल जी हकीम स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के पक्के अनुयायी थे। मेरे दादा श्री सोनू राम जी हकीम ने जब मुल्तान (पाकिस्तान) में स्वामी दयानन्द सरस्वती के दर्शन किये थे, तभी से उन्होंने अपने बच्चों को वैसे संस्कारों में ढ़ाला था। वे मन, वचन, कर्म से कट्टर आर्य समाजी थे। इन्हीं संस्कारों से प्रेरित होकर मेरे पिता जी और प्रभु आश्रित जी ने स्वामी कृष्णानन्द जी से दीक्षा ली थी। और दोनों लोग आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में कार्य करने लगे। महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज को कौन नहीं जानता। ये दोनों लोग गुरु भाई थे।

मेरे पिता जी पाकिस्तान में आर्यसमाज के प्रधान रहे। स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों से प्रेरित होकर उन्होंने वहाँ पर आर्य हाई स्कूल की स्थापना की तथा विद्यालय के प्रबन्धक पद के उत्तरदायित्वों को निष्ठापूर्वक संभालते रहे। स्कूल में प्रतिदिन अन्य विषयों के अतिरिक्त 'धर्म-शिक्षा' की शिक्षा भी दी जाती थी और प्रतिदिन सन्ध्या हवन भी करवाया जाता था।

पाकिस्तान से जब हम लोग सोनीपत में आये तो वहाँ भी हमारे पिता जी ने आर्यसमाज का बढ़-चढ़कर प्रचार कार्य किया तथा नगर आर्यसमाज के, जो सोनीपत में मुख्य आर्यसमाज थी, उसके प्रधान रहे। पिता जी के कुशल नेतृत्व में नगर आर्यसमाज सोनीपत फलने-फूलने लगा। हमारे पिता जी जब भी आर्यसमाज मन्दिर में जाते थे, रास्तें में काफी लोगों को बुला-बुलाकर वहाँ साथ ले जाकर उन्हें सत्संग सुनने का सौभाग्य प्राप्त कराते थे। प्रतिदिन घर पर सन्ध्या, हवन, स्वाध्याय, जप आदि को श्रद्धापूर्वक सम्पादित करते थे। स्वाध्याय अधिकांश ऋषि ग्रन्थों का करते थे। वेदों का स्वाध्याय तो रोज़ का नियम था। वे दूसरे मित्रों को भी वेद पढ़ाया करते थे।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

पिता जी बड़े माने हुए चिकित्सक थे। पुरानी से पुरानी बीमारी का निदान वे नाड़ी देखकर ही करते थे तथा ईश्वर पर भरोसा रखकर ही दवाई देते थे। दवाई बनाते समय गायत्री मन्त्र का जाप किया करते थे। वे जब तक कार्य क्षेत्र में रहे रोगियों को विना फीस लिए घर पर देखने जाते थे। लोगों का उन पर अटूट विश्वास था। दवाई से ज्यादा परहेज पर बल देते थे। वे बहुत ही मधुर भाषी थे। लोग उनके बारे में कहते थे कि उनके मुख से जब बोलते हैं, फूल झड़ते हैं और रोगियों की आधी बीमारी तो उनके बोलने से ही दूर हो जाती थी। सोनीपत में आर्य गर्ल्स हायर सैकेन्ड्री स्कूल के पिता जी अन्त तक संरक्षक रहे।

हमारे पिता जी सत्यवादी थे। मैंने स्वामी दयानन्द जी महाराज के साहित्य का खूब अध्ययन किया है। जो अहिंसा और सत्य पर दृढ़ रहते हैं, उन्हें भविष्य में घटने वाली घटनाओं का ज्ञान हो जाता था। स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन के ऐसे कई प्रसंग आते हैं। यदि मैं उनको लिखने लगूँ तो यह लेख काफी लम्बा हो जायेगा। हाँ अपने पिता जी की एक भविष्य ज्ञान का जिक्र जरूर करना चाहूँगा। वह इस प्रकार है -

एक रात्रि को पिता जी को स्वप्न आता है कि महात्मा प्रभु आश्रित महाराज, जिन्होंने शहर सुल्तान (पाकिस्तान) में मौन और अदर्शन व्रत रखा हुआ था, उनके कान में दर्द हो रहा है और दर्द से कराह रहे हैं। वे जतोई से शहर सुल्तान दवाईयाँ लेकर पैदल ही चल पड़े (क्योंकि वहाँ रात्रि को कोई वाहन नहीं था) और वहाँ जाकर देखा कि महात्मा जी को असह्य कान में दर्द है। यह है सच्चे मनुष्यों का सच्चा सपना। इसका जिक्र महात्मा जी ने अपनी पुस्तकों में भी किया है।

पिता जी ईमानदार इतने थे कि मेरे पास कोई शब्द नहीं हैं कि मैं उनकी ईमानदारी के बारे में लिखूँ। हाँ एक बात मुझे याद है, उसका जिक्र जरूर करना चाहूँगा। वह इस प्रकार है -

एक दिन वे गन्नौर में किसी रोगी को देखने गये थे। गाड़ी उस समय रेलवे स्टेशन पर आई हुई थी। टिकट लेने का समय नहीं था। रोगी की काफी गंभीर अवस्था थी, अत: वे बिना टिकट गाड़ी पर चढ़ गये। जब गन्नौर से वापस सोनीपत आये तो उन्होंने बजाये एक टिकट लेने के दो टिकटें खरीदी। यह है उनकी ईमानदारी का सबूत। ऐसे कई उदाहरण हैं। एक उदाहरण और बताना चाहता हूँ। वह इस प्रकार है -

वे पाकिस्तान में जैसा कि ऊपर लिखा है स्कूल के प्रबन्धक थे। जब सन् १९४७ में पाकिस्तान बना तो अध्यापकों को एक माह की पगार स्कूल नहीं दे पाया था। विभाजन के कारण सारे अध्यापक कोई कहीं और कोई कहीं चले गये। एक मास की पगार उन अध्यापकों की रह गई थी। हमारे पिता जी ने उन अध्यापकों का पता करवाया और सब को बुलाकर अपनी जेब से पगार दी। यह है ईमानदारी की मिसाल। उनकी उदारता देखकर सब अध्यापक हैरान थे। उनमें पितृभक्ति कूट-कूट कर भरी थी। यदि मैं यह कहूँ कि श्रवण कुमार के बाद पितृभक्ति का उदाहरण उन पर शत-प्रतिशत घटता है तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। उन्होंने अपने पिता जी की खूब सेवा की। यह सोनीपत में बच्चा-बच्चा जानता है। ऐसे उदाहरण आजकल बिरले ही मिलते हैं।

एक और उनके अन्दर गुण था कि वे समय के बड़े पाबन्द थे। वे प्रतिदिन सैर पर जाया करते थे। लोग उनको देखकर अपनी घड़ियाँ मिलाया करते थे। यह है उनके समय की पाबन्दी की मिसाल।

एक उनमें और विशेषता थी, जिसे लिखे मैं नहीं रह सकता। पिता जी जब कभी अपने रिश्तेदारों के यहाँ जाते थे तो उनका यह नियम था कि जिस घर में हवन नहीं होता था, वहाँ कुछ भी भोजनादि नहीं लेते थे। मैं जब सन् १९५९ में राजकीय नौकरी में समांलखा में था तो एक दिन पूज्य पिता जी हमारे घर पधारे। जब खाने का समय हुआ तो मैंने पूछा पिता जी खाना लगायें? ''उन्होंने मुझसे पूछा कि आज हवन किया है? मैंने कहा कि नहीं। वे कहने लगे कि मेरा नियम है कि जहाँ हवन नहीं होता है मैं वहाँ खाना नहीं खाता। यदि मुझे खाना खिलाना है तो पहले हवन करो। फिर हम पति-पत्नी ने बैठकर हवन किया फिर हम सभी ने मिलकर खाना खाया। यह उनकी हवन के प्रति परम निष्ठा और नियम की मिसाल।''

पिता जी लगभग एक सौ वर्ष की आयु पर्यन्त तक जिये और यम-नियम पूर्वक चलते रहे। वे कभी अस्वस्थ नहीं होते थे। यदि कभी मौसमी नज़ला, जुखाम वगैरा हो जाता तो बिना इलाज, परहेज से ही ठीक हो जाते थे। सप्ताह में एक दिन उपवास जरूर रखते थे।

उनमें एक और विशिष्ट गुण अतिथि सेवा का था। उनके जीवन में अतिथि सेवा कूट-कूट कर भरी थी। वे पहले अतिथि को खाना खिलाते थे फिर स्वयं खाते थे। उनके होते हुए पता नहीं कितने रिश्तेदार आये। वे लोग वहाँ पढ़ने को आते थे क्योंकि जतोई ही में हाई स्कूल था। उनकी पढ़ायी-लिखायी, रहने का प्रबन्ध, खाने-पीने का प्रबन्ध पिता जी महाराज स्वयं ही करते थे।

१० वर्ष के बाद पूज्य पिता जी दिल्ली मेरे दोनों भाईयों

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

के पास चले गये। दोनों भाई डॉक्टर थे। एक किंग्सवे कैम्प और दूसरा रानीबाग में। दोनों भाईयों ने वह सेवा की जिसको मैं शब्दों में नहीं लिख सकता। अन्तिम दिनों में वे पूज्य बड़े भाई के पास रानीबाग में थे। पूज्य भ्राता जी ने, जैसे मेरे पिता जी ने अपने पिता जी की सेवा की थी, ठीक वैसे ही सेवा करते थे। जब उनका देहावसान हुआ और जब अन्तिम संस्कार के लिए हम चले तो, तो पूज्य भ्राता जी ने हमसे कहा कि शिवलाल अब मेरा समय कैसे बीतेगा। मैं इनकी सेवा में लगा रहता था। उनकी जुदाई को उन्होंने बहुत महसूस किया और जब हम उनकी मृत्यु के चौथे दिन शान्तियज्ञ कर रहे थे तो देहली और सोनीपत से आये लोगों द्वारा आर्य समाज रानीबाग का हॉल खचाखच भरा हुआ था। पूज्य भाई साहब अन्त में जब सभा समाप्त होनी वाली थी, उठे और जनता को धन्यवाद करने लगे। स्टेज पर बैठे, वेदमन्त्र पढ़ा और जनता का धन्यवाद करते-करते जनसमूह के सामने ही उन्होंने अपने प्राण त्याग दिये। यह उनकी पितृभक्ति की मिसाल सारी देहली और सोनीपत में फैल गई। अन्त में मैं यही कहूँगा कि वे योगी थे, इसमें अतिशयोक्ति नहीं होगी।

उपर्युक्त प्रेरणात्मक संस्मरण विनीत पुत्र डॉ. शिवलाल कुमार वानप्रस्थी, १/१५ ए, आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार-२४९४०७, उत्तराखण्ड के अनुसार उद्धृत किये हैं। स्वाध्यायशील जन विशेष जानकारी के लिए मोबाइल-८४४५४७४३१० पर सम्पर्क कर सकते हैं।

तप-स्वाध्याय-ईश्वर प्रणिधान क्रिया योग की इस तीर्थयात्रा में हमें कुछ अन्य विद्वानों का भी सत्संग एवं आशीर्वाद प्राप्त हुआ। यथा माननीय श्री प्रदीप मिश्रा जी (देहरादून), श्री नन्द किशोर अरोड़ा जी (दिल्ली), माता नरेन्द्र बब्बर जी (तपोवन आश्रम), पूज्य स्वामी वेदानन्द सरस्वती (उत्तरकाशी), श्रद्धेय डॉ. स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती (पातंजल योगाधाम आर्य नगर, ज्वालापुर), श्री डॉ. योगेश शास्त्री जी (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार), पं. सत्यपाल पथिक (अमृतसर, पंजाब), डॉ. विनोदचन्द्र विद्यालंकार (हरिद्वार), सम्माननीया विदुषी बहन ब्र. सन्तोष जी (आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर) एवं डॉ. श्रीमती निष्ठा विद्यालंकार (दिल्ली)।

श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द की कर्मभूमि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार तथा पूज्य स्वामी रामदेव जी के पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार का भी अवलोकन किया। इस प्रकार से साधना व स्वाध्याय हेतु देवभूमि का प्रवासकाल मेरी आत्मिक उन्नति में सार्थक रहा।

- आर्यसमाज शक्तिनगर,
जनपद- सोनभद्र (उ.प्र.)

ओ३म्

१३०वाँ बलिदान-समारोह

ऋषि-मेला

इस वर्ष प्रतिवर्ष की भाँति ऋषि बलिदान समारोह का समारोह कार्तिक शुक्ला षष्ठी से अष्टमी संवत् २०७० तदनुसार ८, ९, १० नवम्बर, शुक्रवार, शनिवार, रविवार २०१३ को ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में भव्य समारोह के साथ मनाया जा रहा है।

इस अवसर पर ऋग्वेद पारायण यज्ञ गुजरात के प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान् डॉ. कमलेश कुमार शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न होगा।

इस अवसर पर ऋषि उद्यान में जीर्णोद्धार के पश्चात् बनी भव्य यज्ञशाला का उद्घाटन समारोह भी होगा।

स्वामी दर्शनानन्द बलिदान शताब्दी मनायी जायेगी।

आर्यसमाज के वैदिक विद्वान्, कार्यकर्ता, आर्य पाठविधि की सेवा करने वाले आचार्य, वेदपाठी, ब्रह्मचारियों का सम्मान किया जायेगा।

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष निरन्तर २६ वर्ष से सम्पन्न हो रही वेदगोष्ठी में अनेक विद्वानों के पत्र वाचन होंगे, इस वर्ष वेदगोष्ठी का विषय 'वेद और सत्यार्थप्रकाश का १२वाँ समुल्लास' होगा।

इस समारोह में अधिक से अधिक संख्या में सपरिवार इष्ट मित्रों सहित पधारकर धर्म लाभ उठायें।

मुक्त हस्त से आर्थिक सहयोग कर सभा के कार्यों की अभिवृद्धि में सहयोगी बनें।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

वैचारिक क्रान्ति हेतु सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र प्रचार-प्रसार की भव्य योजना

विचार किसी भी देश, समाज व जाति की अमूल्य निधि (सम्पत्ति) है। जिसके पास में ठोस श्रेष्ठ विचार नहीं या फिर विचार को फैलाने के साधन नहीं हैं या फिर जो व्यक्ति, समाज व राष्ट्र अपने विचारों की अवहेलना करते रहते हैं, उनका अस्तित्त्व भी एक दिन समाप्त प्राय: हो जाता है। आज हर सम्प्रदाय, समाज, समूह व देश अपने विचारों का प्रचार-प्रसार बड़ी प्रबलता से हर क्षेत्र में व हर साधन से कर रहे हैं, लेकिन काफी समय से आर्यसमाज में वैचारिक शिथिलता देखी जा रही है। इस शिथिलता को दूर करने का मात्र एक ही उपाय है कि हम सभी आर्य जन ऋषि दयानन्द सरस्वती कृत **अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र का प्रचार नये शिक्षित लोगों में करें।** इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर सभा के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला २०१४ दिल्ली में प्रचार-प्रसार की योजना तैयार की गयी है।

सत्यार्थप्रकाश ही क्यों?-१. यदि कोई व्यक्ति, समाज, समूह, संस्था या राष्ट्र एक ग्रन्थ (पुस्तक) पढ़कर विस्तृत ज्ञान प्राप्त करना चाहे तो यह सत्यार्थप्रकाश से ही सम्भव है। **२.** आज के दूषित वातावरण में वैदिक वाङ्मय को ठीक-ठीक जानने हेतु, पढ़ने-पढ़ाने हेतु प्रथम सत्यार्थप्रकाश और महर्षि के अन्य ग्रन्थों का पढ़ना-जानना अत्यन्त आवश्यक है। **३.** दर्शनशास्त्र, इतिहास, भारतीय परम्परा, कर्त्तव्य, धर्म-अधर्म, उचित-अनुचित, न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य तथा मानवता आदि क्या हैं? यह सारी जानकारी सत्यार्थप्रकाश से प्राप्त होती है व होगी। **४.** पाखण्ड, मक्कारी, कुरीतियों व बुराइयों का नाश भी सत्यार्थप्रकाश से सम्भव है। **५.** सत्यार्थप्रकाश व ऋषि के अन्य ग्रन्थों की उपस्थिति में कोई विधर्मी अपनी शेखी नहीं मार सकता तथा किसी भी हिन्दू को बहकाकर विधर्मी नहीं बना सकता। **६.** सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव ने न जाने कितनों का जीवन ही बदल डाला। सत्यार्थप्रकाश के जोड़ की दूसरी पुस्तक दुर्लभ है, जिसमें ज्ञान का अमूल्य खजाना भरा पड़ा है। इसलिए इसका प्रचार-प्रसार अनिवार्य है, जरूरी है। **योजना का विवरण निम्न प्रकार का होगा-१.** सत्यार्थप्रकाश हिन्दी में आकार लगभग ६०० पृष्ठ व साईज डमई आकार में होगी। लागत मूल्य ५०/- रुपये प्रति पुस्तक। **२.** ऋषि जीवन चरित्र हिन्दी में लगभग २०० पृष्ठ व साईज डमई आकार में। लागत मूल्य ३०/- रुपये प्रति पुस्तक। **३.** सत्यार्थप्रकाश हिन्दी से इतर (अन्य) भाषियों के लिए सी.डी.या डी.वी.डी. के माध्यम से उपलब्ध करवाया जायेगा। इस डी.वी.डी. में लगभग १८ भाषाओं में सत्यार्थप्रकाश होगा। लागत मूल्य लगभग २५/- होगा। **४.** संक्षिप्त ऋषि जीवन चरित्र अंग्रेजी में। लागत मूल्य १०/- रुपये।

नोट-यह साहित्य वैचारिक क्रान्ति के लिए व वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार के लिए गैर आर्यसमाजी सज्जनों व संस्थानों आदि को नि:शुल्क या अल्प मूल्य में वितरित किया जायेगा। साहित्य का ठीक-ठीक उपयोग हो व योग्य शिक्षित विचारवान् व्यक्तियों तथा संस्थानों तक पहुँचे इसके लिए अच्छी वितरण व्यवस्था की जाएगी। योग्य प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं का चयन कर कार्य में नियुक्त किया जायेगा। प्रत्येक व्यक्ति, संस्था आदि से एक फार्म भरवाया जायेगा, जिसमें उनका पूर्ण पता सम्पर्क आदि हो। जिससे भविष्य में परिणाम का मूल्यांकन किया जा सके। ग्रन्थों की प्रामाणिकता, शुद्धता व साज-सज्जा सुन्दरता का विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस प्रचार-प्रसार योजना का उद्देश्य सत्यार्थप्रकाश व महर्षि के जीवन-चरित्र के प्रचार-प्रसार के माध्यम से मानव मात्र का कल्याण करना है। यह प्रचार-प्रसार मुख्य रूप से शिक्षित गैर आर्यसमाजी लोगों के लिए होगा। यह कार्य पूर्णरूप से महर्षि के मन्तव्यों के अनुरूप हो इसका विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस कार्य की सफलता के लिए सभी आर्यजनों से, समाजों से व संस्थानों से निवेदन है कि इस महान् कार्य में तन-मन-धन से अपना सहयोग करने व अपने इष्ट मित्रों को भी सहयोग करने की प्रेरणा करें।

नोट-अपना आर्थिक सहयोग आप परोपकारिणी सभा अजमेर के नाम प्रेषित करते समय **सत्यार्थप्रकाश प्रचार-प्रसार शीर्षक** अवश्य लिखें। धन प्रेषित करने हेतु आप चैक, ड्राफ्ट व सीधे राशि सभा के बैंक खाते में जमा करवाकर जमा पर्ची की प्रतिलिपि प्रेषित कर देवें या फिर ईमेल, दूरभाष द्वारा सूचित कर सकते हैं। धन्यवाद।

खाता धारक का नाम-**परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक खाता संख्या-**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
बैंक खाता संख्या-**091104000057530**
IFSC-IBKL0000091
email : psabhaa@gmail.com

नोट : इस योजना हेतु दिया गया दान आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत कर मुक्त होगा।

सम्पर्क : आचार्य दिनेश, चलदूरभाष-७७३७९०४९५०

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

स्वामी शंकराचार्य का समय

- विरजानन्द दैवकरणि

आचार्य विरजानन्द दैवकरणि, प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्त्व के विशेषज्ञ हैं। आपने महाभारत के काल का विवेचन करते हुए आचार्य शंङ्कर के काल निर्णय का प्रयास किया है। यह पाठकों व शोधार्थियों के लिए मार्गदर्शक लेख है। - सम्पादक

१. विक्रम संवत् १९३९ (१८८२ ईसवी) में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश के एकादश समुल्लास में लिखा था-

"बाईस सौ वर्ष हुए कि एक शङ्कराचार्य द्रविड़देशोत्पन्न ब्राह्मण ब्रह्मचर्य से व्याकरणादि सब शास्त्रों को पढ़कर सोचने लगे कि अहह! सत्य आस्तिक वेदमत का छूटना और जैन नास्तिक मत का चलना बड़ी ही हानि की बात हुई है, इनको हटाना चाहिए।"

जिस समय की यह घटना है उस समय आर्यावर्त देश में सुधन्वा नामक जैन राजा का राज्य था। महर्षि दयानन्द जी को उक्त वाक्य लिखे १३१ वर्ष व्यतीत हो गये। आज विक्रम संवत् २०७० और ईसवी सन् २०१३ है। तदनुसार आदि शंकराचार्य को आज तक लगभग २२००+१३१=२३३१ वर्ष हो चुके हैं।

२. आजकल के इतिहासकार आचार्य शंकर को ७८८ ईसवी से ८२० ईसवी तक मानते हैं।

इस प्रकार उपर्युक्त दोनों मत लगभग ११०० वर्षों का अन्तर है। अब अन्य प्रमाणों से इस विषय का विवेचन किया जायेगा कि कौन सत्य के अधिक निकटतम है।

३. आदि शङ्कराचार्य ने अपने जीवन काल में चार मठों की स्थापना की थी।

१. उत्तर दिशा में बदरिकाश्रम में ज्योतिर्मठ,

स्थापना-युधिष्ठिर संवत् २६४१ से २६४५ के मध्य।

२. पश्चिम दिशा में द्वारिका में शारदामठ, स्थापना-युधिष्ठिर संवत् २६४८।

३. दक्षिण दिशा में शृंगेरी मठ, स्थापना-युधिष्ठिर संवत् २६४८।

४. पूर्व दिशा में जगन्नाथपुरी में गोवर्द्धनमठ, स्थापना-युधिष्ठिर संवत् २६५५।

स्वामी शंकराचार्य जी अन्तिम दिनों में कांची के कामकोटिमठ में निवास करते रहे थे। इस मठ की स्थापना २६५८ युधिष्ठिर संवत् में हुई थी।

इन मठों में आदि शंकराचार्य से लेकर आज तक के सभी आचार्यों का नाम, काल, वर्ष निर्देशपूर्वक लिखते आ रहे हैं। किसी मठ की परम्परा बीच में त्रुटित हो गई हो सो पृथक् बात है। श्री आचार्य उदयवीर जी शास्त्री ने अपने ग्रन्थ 'वेदान्तदर्शन का इतिहास' में पृष्ठ ३१४ से ३३१ तक चारों मठों में विद्यमान पूर्ण गुरु परम्परा का नाम-वर्ष निर्देशपूर्वक वर्णन किया है। स्वामी शङ्कराचार्य के सही समय निर्धारण के लिये इन मठों द्वारा सुरक्षित गुरु परम्परा सर्वाधिक उपयोगी और प्रामाणिक है। त्रुटित परम्परा अपवाद हो सकती है। जैसे बदरिकाश्रम के ज्योतिर्मठ की परम्परा लगभग ८०० वर्ष तक खण्डित रही है। इन मठों में विद्यमान गुरु परम्परा के अनुसार शारदा मठ में आदि गुरु श्री शङ्कराचार्य के लिये लिखा है-

युधिष्ठिरशके २६३१ वैशाखशुक्लपञ्चम्यां श्रीमच्छङ्करावतारः।........ तदनु २६६३ कार्तिकशुक्ल-पूर्णिमायां............ श्रीमच्छङ्करभगवत्पूज्यपादा........ निजदेहेनैव ....निजधाम प्राविशन्निति।

अर्थात् युधिष्ठिर संवत् २६३१ में वैशाख मास के शुक्लपक्ष की पञ्चमी को श्री शङ्कराचार्य का जन्म हुआ और युधिष्ठिर संवत् २६६३ कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को देहत्याग हुआ।

युधिष्ठिर संवत् कलिसंवत् से ३८ वर्ष अधिक होता है। कलिसंवत् को आज २०७० विक्रमसंवत् में ५११४ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। इस प्रकार आज युधिष्ठिर संवत् ३८+५११४=५१५२ सिद्ध होता है। इस गणना से श्री शंकराचार्य के जन्म को आज ५१५२-२६३१=२५२१ वर्ष हो गये हैं। तदनुसार इनके देहावसान को ५१५२-२६६३=२४८९ वर्ष बीते हैं। इसे हम इस प्रकार भी समझ सकते हैं-

२५२१-२०७०=४५१ वर्ष विक्रमपूर्व शंकराचार्य का जन्म।

२५२१-२०१३=५०८ वर्ष ईसवीपूर्व शंकराचार्य का जन्म।

२४८९-२०७०=४१९ वर्ष विक्रमपूर्व देहत्याग।

२४८९-२०१३=४७६ वर्ष ईसवीपूर्व देहत्याग।

४. आदि शंकराचार्य के समकालीन जैन राजा सुधन्वा

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

ने शंकराचार्य का शास्त्रार्थ जैन पण्डितों से कराया था। उस राजा का एक ताम्रपत्र मिला है। उस ताम्रपत्र का लेख द्वारिकापीठ के एक आचार्य ने 'विमर्श' नामक ग्रन्थ के २९वें पृष्ठ पर प्रकाशित किया है। उसमें लिखा है-

निखिलयोगिचक्रवर्त्ती श्रीमच्छङ्करभगवत्पाद-पद्मयोर्भ्रमरायमाणसुधन्वनो मम सोमवंशचूडामणि-युधिष्ठिरपारम्पर्यपरिप्राप्तभारतवर्षस्याञ्जलिबद्धपूर्विकेयं राजन्यस्य विज्ञप्तिः..........युधिष्ठिरशके २६६३ आश्विन शुक्ल १५।

राजा सुधन्वा द्वारा प्रदत्त इस ताम्रपत्र में युधिष्ठिर संवत् २६६३ लिखा है। तदनुसार आज इस ताम्रपत्र को लिखे हुये ५१५२-२६६३=२४८९ वर्ष हो गये हैं। यही वर्ष आचार्य शंकर के देहत्याग का वर्ष था। अर्थात् आचार्य के ३२ वर्ष के वयस् में उनके जीवित रहते हुये मृत्यु से एक मास पूर्व यह ताम्रपत्र लिखा गया था।

५. एक अन्य ताम्रपत्र संस्कृतचन्द्रिका (कोल्हापुर) के खण्ड १४, संख्या २-३ में प्रकाशित हुआ था। उसके अनुसार गुजरात के महाराज सर्वजिद्वर्मा ने द्वारिका स्थित शारदापीठ के प्रथम आचार्य श्री सुरेश्वराचार्य (पूर्वनाम-मण्डनमिश्र) से लेकर २९वें आचार्य श्री नृसिंहाश्रम तक सभी आचार्यों के नाम, समय आदि का विवरण लिखवाया है। इसमें प्रथम आचार्य का समय २६६९ युधिष्ठिरसंवत् दिया है। इसके अनुसार भी प्रथम आचार्य ५१५२-२६६९=२४८३ वर्ष पूर्व विद्यमान थे। यह समय भी ४५३ वर्ष विक्रमपूर्व और ५१० वर्ष ईसापूर्व सिद्ध होता है।

६. शङ्कराचार्य के मठों में गुरु के देहत्याग पर श्रद्धाञ्जलि के रूप में पूर्व गुरुओं के स्मरण हेतु श्लोक पाठ किया जाता है। उन श्लोकों में पूर्वाचार्यों के स्वर्गवास सम्बन्धी तिथि, मास, वर्ष, स्थान आदि का निर्देश होता है। ये श्लोक सर्वज्ञसदाशिवकृत "पुण्यश्लोकमञ्जरी", आत्मबोध द्वारा रचित "गुरुरत्नमालिका" तथा उसकी टीका "सुषमा" में उपलब्ध हैं। प्रत्येक गुरु के स्वर्गारोहण पर उसी सम्बन्धी श्लोक बनाकर संग्रह करते जाते हैं। इसी प्रकार यह परम्परा चली आ रही है। उनमें एक श्लोक इस प्रकार है-

तिष्ये प्रयात्यनलशेवधिबाणनेत्रे,
ये नन्दने दिनमणावुदगध्वभाजि।
रात्रोदितेरुडुविनिर्गतमंगलग्ने-
त्याहूतवान् शिवगुरुः स च शंकरेति।।

अर्थ- अनल=अग्नि=३, शेवधि=निधि=९, बाण= कामबाण=५, नेत्र=२ अर्थात् ३९५२। "अंकानां वामतो गतिः" इस नियम से अंक उलटे विपरीत लिखे जाते हैं, अतः इनको सीधा लिखने पर २५९३ कलिसंवत् बना। आज ५११४ कलिसंवत् है। ५११४-२५९३=२५०१ वर्ष पूर्व शंकराचार्य का जन्म प्रतिपादित किया है। तदनुसार-

२५२१-२०७०=४५१ वर्ष विक्रमपूर्व और २५२१-२०१३=५०८ वर्ष ईसापूर्व यह तिथि निश्चित होती है।

७. दर्शन के प्रसिद्ध विद्वान् श्री कुमारिलभट्ट श्री शंकराचार्य के समकालीन थे। जैन मतावलम्बी लोग कुमारिलभट्ट को अपना घोर विरोधी मानते थे। जैनग्रन्थ जिनविजय में लिखा है।

ऋषिर्वारस्तथा पूर्णं मर्त्याक्षौ वाममेलनात्।
एकीकृत्य लभेताङ्कः क्रोधीस्यात्तत्र वत्सरः।।
भट्टाचार्यस्य कुमारस्य कर्मकाण्डैकवादिनः।
ज्ञेयः प्रादुर्भवस्तस्मिन् वर्षे यौधिष्ठिरे शके।।

जैन लोग युधिष्ठिरसंवत् को ४६८ कलिसंवत् से प्रारम्भ हुआ मानते हैं। इनका आधार कल्हणकृत राजतरंगिणी ग्रन्थ है। तदनुसार कलिसंवत् ५११४-४६८=४६४६ युधिष्ठिरसंवत् जैनों के मतानुसार आज है। श्लोकार्थ-ऋषि=७, वार ७, पूर्ण (शून्य)=०, मर्त्याक्षौ=२ ७७०२ इस संख्या को 'वामतो गति' के अनुसार पलटकर लिखने से २०७७ युधिष्ठिर संवत् आया। आज के जैन युधिष्ठिरसंवत् ४६२६ से २०७७ घटाने पर आज से २५६९ वर्ष पूर्व कुमारिलभट्ट का जन्म सिद्ध हुआ।

शंकराचार्य के प्रथमजीवनी लेखक और सहपाठी श्री चित्सुखाचार्य ने बृहत् शंकर दिग्विजय में लिखा है कि श्री कुमारिलभट्ट श्री शंकराचार्य से ४८ वर्ष बड़े थे। इस प्रकार कुमारिलभट्ट के जन्म २५६९ वर्ष पूर्व से ४८ घटाने पर २५२१ वर्ष पूर्व आचार्य शंकर का जन्म प्रमाणित होता है। यही समय ४५१ वर्ष विक्रमपूर्व और ५०८ वर्ष ईसापूर्व सिद्ध होता है। कुमारिलभट्ट भी ४९९ वर्ष विक्रम पूर्व और ५५६ वर्ष ईसापूर्व उत्पन्न हुये थे, यह निश्चित है। जैनों का कलियुग भी ४६४६-२०७०=२५७६ वर्ष विक्रमपूर्व और ४६४६-२०१३=२६३३ वर्ष ईसापूर्व प्रचलित हुआ था।

८. आदि शंकराचार्य के देहावसान के विषय में जैन ग्रन्थ जिन विजय में इस प्रकार लिखा है-

ऋषिर्बाणस्तथा भूमिर्मर्त्याक्षौ वाममेलनात्।
एकत्वेन लभेताङ्कस्ताम्राक्षस्तत्र वत्सरः।।

ऋषि=७, बाण=५, भूमि=१, मर्त्याक्षौ=२।७५१२ इस संख्या को विपरीत करने पर २१५७ जैनमतों का युधिष्ठिरसंवत् आया। जैनों के युधिष्ठिरसंवत् ४६४६ से २१५७ न्यून करने पर २४८९ युधिष्ठिरसंवत् आया। २४८९-२०७०=४१९ वर्ष विक्रमपूर्व और २४८९-२०१३=४७६ वर्ष ईसापूर्व में आचार्य शंकर का देहावसान प्रमाणित होता है। अर्थात् आज से २४८९ वर्ष पूर्व आचार्य शंकर दिवंगत हुये थे।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

९. श्री शंकराचार्य के सहाध्यायी श्री चित्सुखाचार्य ने इनके जन्म विषय में अपने ग्रन्थ बृहत् शंकरविजय में लिखा है–

षड्विंशके शतके श्रीमद् युधिष्ठिरशकस्य वै।
एकत्रिंशेऽथ वर्षेतु हायने नन्दने शुभे।।
..।
प्रासूत तन्वंसाध्वी गिरिजेव षडाननम्।।

यहाँ युधिष्ठिर शक (संवत्) के २६वें शतक= २६×१००=२६०० वर्षों से ३१ वर्ष अधिक अर्थात् २६३१ युधिष्ठिरसंवत् में आचार्य शंकर का जन्म हुआ था। आज ५१५२ युधिष्ठिरसंवत् है। ५१५२–२६३१=२५२१ वर्ष पूर्व आचार्य शंकर उत्पन्न हुये थे। २५२१–२०७०=४५१ वर्ष विक्रमपूर्व और २५२१–२०१३=५०८ वर्ष ईसापूर्व जन्म सिद्ध होता है।

१०. आन्ध्रवंशीय प्रसिद्ध शासक हाल और शंकराचार्य समकालिक थे। गुरुरत्नमालिका में **'अपि हालपालित पालितम्'** लिखकर इसकी पुष्टि की है। हालराजा ने कलि संवत् २६०८ से २६१३ तक राज्य किया था। उसी समय कश्मीर में गोनन्दवंशीय 'नर' राजा का शासन चल रहा था। यह राजतरंगिणी से सिद्ध है। आज के ५११४ कलियुग से २६०८ घटाने पर ज्ञात हुआ कि २५०६ वर्ष पूर्व श्री शंकराचार्य इस भूतल पर विद्यमान थे। तदनुसार २५०६–२०७०=४३६ वर्ष विक्रमपूर्व तथा २५०६–२०१३=४९३ वर्ष ईसापूर्व में राजा हाल तथा आचार्य शंकर की विद्यमानता सिद्ध होती है।

इस उपर्युक्त विवरण का साक्ष्य द्वारिका की शारदा पीठ, जगन्नाथपुरी की गोवर्द्धनपीठ और कांची की कामकोटिपीठ की गुरु परम्परा से चली आ रही वंशावलियों में स्पष्ट मिलता है। इनको असत्य कहना अप्रामाणिक और सत्य से मुख मोड़ना है। यह कभी नहीं हो सकता कि पुराकाल में सभी ने सम्मति करके किसी असत्य को सत्य का पुट देने की प्रतिज्ञा की हो और उसका प्रचार किया हो। पुरी की गोवर्द्धनपीठ पर गृहस्थाश्रम के अनन्तर संन्यासी होकर शंकराचार्य का पद मिलता है जबकि द्वारिका की शारदापीठ और कांची की कामकोटि पीठ पर ब्रह्मचर्य से ही सीधी संन्यस्तदीक्षा देकर शंकराचार्य बनाया जाता है। यही कारण है कि इन दोनों मठों के आचार्य प्राय: दीर्घजीवी हुये हैं तथा जगन्नाथपुरी की गोवर्द्धनपीठ के महानुभाव शंकराचार्य के पद पर अल्पकाल तक ही रह पाये हैं। संयम, ब्रह्मचर्य और तपस्या के करने और न करने का ही यह परिणाम है।

आचार्य उदयवीर जी शास्त्री ने वेदान्तदर्शन के इतिहास में इन आचार्यों की नामावली दी है। तदनुसार शारदापीठ के ७७ आचार्य, कामकोटिपीठ के ६८ आचार्य और गोवर्द्धनपीठ के १४४ आचार्य सन् १९७० तक हो चुके हैं। ज्योतिर्मठ के आचार्यों की परम्परा विच्छिन्न हो जाने से विक्रम संवत् १५०० से ही इनकी वंशावली उपलब्ध होती है। इससे पहले की नामावली लुप्त है। इसी प्रकार शृंगेरीमठ की आचार्य परम्परा भी लुप्त होने के कारण केवल ३७ आचार्यों के नाम इस समय ज्ञात हैं। कालक्रम में भूल कहाँ हुई–

१. इतने प्रमाण उपलब्ध होते हुये भी क्या कारण है कि वर्तमान इतिहासज्ञ आदि शंकराचार्य को ७८८ ईसवी ८२० ईसवी तक विद्यमान होना मानते हैं। यह भूल हुई है शंकराचार्यों के नाम और उपाधियों की साम्यता के कारण। जिसको वर्तमान इतिहासकार आदि शंकराचार्य मानते आ रहे हैं वे वस्तुत: कामकोटिपीठ के ३८वें आचार्य श्री अभिनवशंकर थे। ये ईसवी सन् ७८७ से ८४० तक विद्यमान थे। वे चिदम्बरम् वासी श्री विश्व जी नामक ब्राह्मण के पुत्र थे। इन्होंने कश्मीर के पण्डित वाक्पतिभट्ट को शास्त्रार्थ में पराजित किया और तीस वर्ष तक मठ के आचार्य पद पर रहने के पश्चात् कैलास चले गये। वहाँ आत्रेय पर्वत की दत्तात्रेय गुफा में शरीर त्याग कर दिया। यही गुफा कालान्तर में आदि शंकराचार्य की गुफा कहलाने लगी। जबकि आदि शंकराचार्य ने कांची में ही शरीर त्याग किया था।

२. प्राचीन बृहत्तरभारत के दक्षिणपूर्वी भाग कम्बोडिया में एक शिलालेख मिला है। उसमें भगवान् शंकर के शिष्य शिवसोम का वर्णन है। वहाँ लिखा है–

येनाधीतानि शास्त्राणि भगवच्छङ्कराह्वयात्।
निश्शेषसूरिमूर्द्धालिमालालीढाङ्घ्रिपङ्कजम्।।

इस श्लोक में शिवसोम के द्वारा भगवान् शंकर से विद्याग्रहण की चर्चा है। यह शिवसोम राजा इन्द्रवर्मन् का गुरु था। राजा इन्द्रवर्मन् का शासन ८७८ ईसवी सन् से प्रारम्भ होता है, उस समय भारत में कामकोटि की पीठ पर ३८वें आचार्य अभिनवशंकर विराजमान थे। अत: उपर्युक्त श्लोक में जो विद्वान् आदि शंकराचार्य का वर्णन मानते हैं, उन्हें अपने कथन पर पुनर्विचार करना चाहिये। माधव द्वारा रचित शंकरविजय नामक पुस्तक में प्रथम और ३८वें दोनों आचार्यों की जीवनियों को मिलाजुलाकर लिख दिया है। दोनों के जीवन की पर्याप्त घटनायें समान होने से ऐसा हुआ है।

श्री सदाशिवब्रह्मेन्द्र कृत गुरुरत्नमालिका की सुषमा नामक टीका में श्री आत्मबोध ने १७वीं शताब्दी के प्रारम्भ में ही इस भावी भूल की ओर ध्यान दिला दिया था। वे

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

लिखते हैं-

.........इत्यादिना मूलकारे पौषप्रपञ्चायिष्यमाणेभ्यो नवशंकरेन्द्रादिभ्योऽस्य भेदाग्रहणजन्मदिग्विजय निर्माण-प्रमुखेषु स्थलेषु तयोर्द्वयोरपि वृत्तजातमेकतः सकलीकृत्य निबबन्धुः। अस्य किमपि किमप्यर्वाचीना अविदितभुवनवृत्तान्ताः कपितये कवय इत्यवगन्तव्यम्।

इसके अनुसार दोनों शंकराचार्यों की जीवनी की समान घटनाओं के कारण एकाकार किया जाने का सन्देह व्यक्त किया जा सकता है, यह आशंका जताई है। जब आदिशंकराचार्य के जन्मस्थान कालडी की जानकारी नहीं हुई थी, तब तक उनको चिदम्बरम् में ही उत्पन्न हुआ माना जाता था। वास्तव में चिदम्बरम् तो ३८वें आचार्य अभिनवशंकर का जन्म स्थान था। आदि शंकराचार्य की भाँति अभिनवशंकर भी कश्मीर गये थे और वहाँ के सर्वज्ञपीठ की कुछ काल तक अध्यक्षता भी की थी।

इसी प्रकार नाम-गुण की साम्यताओं के कारण अभिनवशंकर द्वारा रचित आनन्दलहरी और सौन्दर्यलहरी नामक ग्रन्थ भी आदि शंकराचार्य के नाम से प्रसिद्ध हो गये अथवा कर दिये गये।

डॉ. विन्सेंट स्मिथ के अनुसार स्वामी शंकराचार्य गौतम बुद्ध के देहावसान के ६० वर्ष पश्चात् उत्पन्न हुये थे। ये गौतम बुद्ध का निर्वाण ५५० ई. पूर्व मानते हैं। तदनुसार शकराचार्य ४९० ईसवी पूर्व सिद्ध होते हैं। यद्यपि प्राचीन भारतीय मान्यता के अनुसार महात्मा बुद्ध का यह समय नहीं है जो डॉ. विन्सेंट स्मिथ ने लिखा है, पुनरपि आदि शंकराचार्य के काल के विषय में इनका कथन सत्य ही है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से सिद्ध है कि आदि शंकराचार्य का जन्म २६३१ युधिष्ठिरसंवत्, २५९३ कलिसंवत्, ४५१ वर्ष विक्रमपूर्व और ५०८ वर्ष ईसापूर्व हुआ था। वे कुल ३२ वर्ष तक जीवित रहे। उनका स्वर्गवास २६६३ युधिष्ठिरसंवत् २६२५ कलिसंवत्, ४१९ वर्ष विक्रमपूर्व और ४७७ वर्ष ईसापूर्व में हुआ था।

कालक्रम के निर्धारण में भेद का प्रमुख कारण यह है कि हम परमुखापेक्षी हो गये हैं। हमारा प्राचीन भारतीय संस्कृत वाङ्मय किसी विषय में क्या कहता है, इसे न देखकर, हम बाहर की ओर झांकते हैं कि यूनानी लेखक और यात्री क्या कहते हैं, चीनी अथवा मुस्लिम यात्रियों का क्या कथन है, अथवा विदेशी आंग्ल इतिहासकारों ने क्या लिखा है। बहुत से विदेशी यात्रियों ने तो एक स्थान पर बैठकर ही सुनी-सुनाई बातें लिख दी हैं उनमें बहुत-सा अनर्गल भी लिखा है। किसी यात्री ने यात्रा करते हुये भी एक मतविशेष का ही वर्णन किया है, जबकि देश में अन्य मतावलम्बी विद्वान् और राजा भी थे। इसलिये इतिहास के अन्वेषण के लिये अति सावधानी से गहरायी तक जाँच करनी चाहिये। इसलिये १००-१५० वर्षों के भीतर पाश्चात्यदेशीय इतिहासकारों द्वारा लिये महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक निर्णयों की परीक्षा की दृष्टि से पुनरीक्षण करना अत्यावश्यक है। इसी कारण यह प्रयास किया गया है।

ई-मेल द्वारा परोपकारी निःशुल्क

परोपकारी के पाठकों को प्रसन्नता होगी कि अब परोपकारी ई-मेल द्वारा भी भेजी जा रही है। परोपकारिणी सभा की वेब-साइट पर तो परोपकारी पहले से ही निःशुल्क उपलब्ध है। विश्व में कहीं भी कोई भी इसे वेब-साइट पर पढ़ सकता है। इसके साथ ही अब यह सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है कि परोपकारी आपके पास ई-मेल द्वारा पहुँच जाये। इससे यह पत्रिका शीघ्र व अधिक सुन्दर रूप में आप तक पहुँच सकेगी। आप जहां भी रहें, कभी भी पढ़ना चाहें, यह आपके पास रहेगी। डाक की अव्यवस्था से छुटकारा मिल सकेगा। यह आपको नियमित मिलती रहेगी। इससे रासायनिक रंगों व कागज का उपयोग भी कम होगा, खर्च भी घटेगा। अतः पाठकों से अनुरोध है कि **कृपया अपना ई-मेल पता सभा को ई-मेल से भिजवा देवें।** आप जिन इष्ट-मित्रों, परिजनों व संस्थाओं को परोपकारी भिजवाना चाहते हैं, उनके ई-मेल पते भी भिजवा देवें, उन्हें भी यह निःशुल्क भेज दी जायेगी। ई-मेल- psabhaa@gmail.com

-व्यवस्थापक

पुरानी यादें

गुजरे दिनों की यादें हमें गर्माहट का अहसास देती है। चीन और नीदरलैण्ड के विद्यार्थियों पर कुल ५ अलग-अलग अध्ययन किये गये। जिससे पता लगा कि अतीत की खूबसूरत यादें ठण्ड के मौसम में गर्माहट देती है। इसके लिए वैज्ञानिकों ने ५ अलग-अलग प्रयोग किए और पाया कि पुरानी यादें तापमान बढ़ा देती हैं। शोधकर्ताओं ने कहा कि दिमाग का जो क्षेत्र पुरानी यादों में जाता है वही शरीर को तापमान का अहसास भी कराता है।

सौजन्य-राष्ट्रदूत, दिनांक ०९.१२.२०१२

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

।।ओ३म्।।

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में
१३० वाँ ऋषि बलिदान समारोह

महापुरुषों का यज्ञमय जीवन हमको प्रत्येक कदम पर प्रेरणा व मार्गदर्शन देता रहता है। जिस कारण हम उनके ऋणी हो जाते हैं। इस ऋण से मुक्त होने का एक ही उपाय है - महापुरुषों की विचारधारा का यथासामर्थ्य प्रचार-प्रसार। विराट व्यक्तित्त्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३० वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ - ६ नवम्बर से 'ऋग्वेद पारायण यज्ञ' का आरम्भ किया जायेगा, इस यज्ञ की पूर्णाहुति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन १० नवम्बर को होगी। यज्ञ के **ब्रह्मा डॉ. कमलेश कुमार शास्त्री** होंगे। यह यज्ञ ऋषि-उद्यान, अजमेर की यज्ञशाला में होगा।

वेदगोष्ठी - प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी अन्ताराष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसंधान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से संपन्न होने वाली वेदगोष्ठी का आयोजन किया गया है। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है-**वेद और सत्यार्थप्रकाश का १२वाँ समुल्लास**। जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रेषित करना चाहते हैं, वे १५ अक्टूबर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। ८-९ नवम्बर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता - प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गतवर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। ८ नवम्बर को परीक्षा एवं ९ नवम्बर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय १५ अक्टूबर, २०१३ तक 'आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि-उद्यान, अजमेर' इस पते पर भेज दें।

सम्मान - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान-समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

अक्टूबर के आरम्भ में अजमेर में हलकी ठंड होने लगती है, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें।

सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तदनुसार व्यवस्था की जा सके।

सभी से निवेदन है कि १३० वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकर्त्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

ऋषि मेले में आमन्त्रित विद्वान्-आचार्य बलदेव जी, प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी-अबोहर, आचार्य विजयपाल जी-झज्जर, पं. शिवदत्त पाण्डे, पं. धीरेन्द्र पाण्डे, स्वामी ऋतस्पति, डॉ. ब्रह्ममुनि जी-महाराष्ट्र, डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी-गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, डॉ. वेदपाल जी-बड़ौत, आचार्या सूर्या देवी जी-शिवगंज, डॉ. राजेन्द्र जी विद्यालंकार, डॉ. विनय विद्यालंकार, सत्येन्द्रसिंह जी-मेरठ, डॉ. कृष्णपालसिंह जी-जयपुर, धर्मपाल जी-दिल्ली, श्री सत्यानन्द आर्य-दिल्ली, श्री राजवीर-मुरादाबाद, श्री जगदीश शर्मा-जयपुर, श्री शिवकुमार चौधरी-इन्दौर, श्री जयदेव आर्य-राजकोट, श्री प्रकाश आर्य-महू, विनय जी-दिल्ली, श्री सत्यपाल पथिक, पं. भूपेन्द्र सिंह जी आदि

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अंतर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

गजानन्द आर्य	**धर्मवीर**	**ओम मुनि वानप्रस्थ**
प्रधान	**कार्यकारी प्रधान**	**मंत्री**

ईमेल व वेबसाईट-email : psabhaa@gmail.com, www.paropkarinisabha.com

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रात: एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नि:शुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का नि:शुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा नि:शुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ नि:शुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में नि:शुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

अतिथि यज्ञ के होता
(०१ से १५ सितम्बर २०१३ तक)

१. एम.एल. गोयल, अजमेर, २. सुधीर बाहेती, नासिक, महाराष्ट्र ३. सत्यपाल मोंगा, लुधियाना, ४. किशनचन्द, अजमेर, ५. मुमुक्षु मुनि, अजमेर, ६. देव मुनि, अजमेर, ७. जी.के. शर्मा, किशनगढ़, राजस्थान, ८. विजय गहलोत, अजमेर, ९. लक्ष्मण प्रसाद त्रिवेदी, जुनागढ़, १०. मेहता माता, अजमेर, ११. सीमा सुधीर गुप्ता, बिलासपुर, १२. शैल वस्त्रालय, बिलासपुर, १३. रामचन्द्र हंस, भुवनेश्वर, ओडिसा, १४. विजय कुमार सैनी, गुड़गाँव, हरियाणा, १५. ओमप्रकाश नवाल, ब्यावर, १६. उर्मिला राजोत्या, अजमेर, १७. उमा मोंगा, नई दिल्ली, १८. सोमित्र कुमार गुप्ता, बिलासपुर, छ.ग., १९. प्रेमलता गुप्ता, बिलासपुर, छ.ग., २०. निर्मला देवी गुप्ता, बिलासपुर, छ.ग., २१. सरला गम्भिर, नई दिल्ली, २२. स्वास्तिकमह, अमरावती, महाराष्ट्र।

-परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला जो परमार्थ हेतु संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगत अतिथियों को निःशुल्क वितरित किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता
(१६ से ३० अगस्त २०१३ तक)

१. आज़ाद हलवाई, अजमेर २. राधेश्याम, अजमेर, ३. राजेश त्यागी, अजमेर, ४. वृद्धिचन्द गुप्ता, जयपुर, राजस्थान, ५. देवदत्त तनेजा, अजमेर, ६. माता अंजली, बिकानेर, राजस्थान, ७. मीरा कश्यप, अजमेर, ८. माता तुलसी बाई, अजमेर, ९. मुमुक्षु मुनि, अजमेर, १०. उर्मिला उपाध्याय, अजमेर, ११. डॉ. चन्द्रदेव शर्मा, अजमेर, १२. यतीन्द्र शास्त्री, अजमेर, १३. गायत्री सिंह, अजमेर, १४. जगदीश प्रसाद आर्य, नीमच, एम.पी., १५. कंचन गेहलोत, अजमेर, १६. राजपूताना म्यूजिक हाऊस, अजमेर, १७. मेधाव्रत सत्यार्थी, भिवानी, हरियाणा, १८. इन्दु भारत कुमार आर्य, बिलासपुर, १९. पुनम सिद्धार्थ राठौड़, बिलासपुर, छ.ग., २०. शालिनी गुप्ता, बिलासपुर, २१. शालिनी चौक्से, बिलासपुर, २२. सिद्धु सिंह, सिहोर, एम.पी. २३. उर्मिला राजोत्या, अजमेर, २४. धर्मवीर शास्त्री, सोनीपत, हरियाणा, २५. हुमन वेलफेयर फाउन्डेशन गुड़गाँव, हरियाणा, २६. सदर्शन कुमार कपूर, पंचकूला, हरियाणा, २७. उमा मोंगा, नई दिल्ली, २८. प्रेमलता शर्मा, अजमेर।

-परोपकारिणी सभा, अजमेर।

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अतः सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अतः लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छः माह या अधिक समय भी लग सकता है, अतः कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

हमारी प्रचार सम्बन्धी प्राथमिकताएँ

- रामनिवास गुणग्राहक

आर्यसमाज का प्रचार कार्य अन्य मत-पन्थों व सम्प्रदायों के प्रचार कार्य से बहुत अलग रंग-ढंग का, अलग प्रकार के परिणाम पैदा करने वाला कार्य है। पहला सबसे महत्त्वपूर्ण अन्तर तो यह है कि शेष सभी मत-पन्थों के प्रचारक परम्परागत प्रवृत्तियों को ही भावपूर्ण या विचारोत्तेजक भाषा में परोसकर लोगों को उसी पुरानी लीक पर चलाकर लकीर का फकीर ही बनाते हैं, जबकि आर्यसमाज के प्रचारक को उस वैदिक विद्या का प्रचार करना होता है, जो पुरानी परम्पराओं व प्रचलित धारणाओं, मान्यताओं से हटकर एक नई तार्किक सोच को जगाने वाली है। भौतिक सुख-सुविधाओं के पीछे भागने वाला आज का मानव धर्म-कर्म जैसी परम्परागत मान्यताओं से हटकर नये चिन्तन को स्वीकारने के लिए बुद्धि पर जोर डालने के लिए तैयार नहीं दिखता। ऐसे में हमारा काम स्वाभाविक रूप से कठिन हो जाता है। दूसरी बात हमारे पहली-दूसरी पीढ़ी के आर्य प्रचारकों के जीवन में जो सिद्धान्त-निष्ठा, तप-त्याग और कुछ कर गुजरने की भावना हिलोरे लेती रहती थी, उसका नितान्त अभाव हमारे वर्तमान प्रचारकों में स्पष्ट दिखाई देता है। आर्यसमाज के वेद प्रचार के माध्यम से हम जनता में जो जागरुकता, जो तर्कपूर्ण चेतना पैदा करना चाहते हैं, उस तर्क युक्त चेतना के पैदा होने से जीवन में जो निखार, जो पवित्रता-निर्मलता और दूरदृष्टि उत्पन्न होती है वह यदि हमारे प्रचारकों के जीवन में दिखेगी तो उसका प्रभाव जनमानस पर भी अवश्य पड़ेगा। सरल शब्दों के साथ संक्षेप में कहा जा सकता है कि हमारे हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, सिख, जैन व बौद्ध आदि सम्प्रदायों के प्रचारकों को वही कुछ बताना होता है, जो उन्हें बचपन से परिवारों में देखने, सुनने व करने-कराने को मिलता रहता है। दूसरी ओर हमारे आर्योपदेशकों को ऐसी अनुकूलता प्राय: नहीं मिलती, उन्हें लुप्त-गुप्त वेद-विद्या का एक नया संसार रचना पड़ता है, नये विचार, नई धारणाएँ, नये विश्वास और नये जीवन मूल्य सिखाने पड़ते हैं जो निश्चित रूप से एक कठिन व तप:साध्य काम है।

चूँकि जिस वेद-विद्या का प्रचार-प्रसार हमें करना है, वह जनमानस के लिए नई होने के साथ-साथ पूर्णत: तर्क और विवेक पर आधारित है। यहाँ मानने से पहले जानने पर बहुत बल दिया जाता है इसलिए यहाँ परम्परागत विश्वासों और मान्यताओं की पूँछ पकड़कर चलने की अपेक्षा बुद्धिवादी दृष्टिकोण लेकर जीवन को जाँचने-परखने की आवश्यकता होती है। तर्कयुक्त चेतना और बुद्धिवादी दृष्टिकोण पैदा करके हम जनजीवन में जिन वैदिक आदर्शों को जीवित करना चाहते हैं, उन वैदिक आदर्शों को अपने जीवन में साकार करके एक व्यावहारिक शिक्षा दिये बिना हम कैसे दूसरों से यह अपेक्षा कर लें कि जो परिवर्तन मेरे जीवन में नहीं आ सका, वह मेरा उपदेश सुनने वालों के जीवन में आ जाएगा? आर्यसमाज के प्रचार कार्य से किसी भी रूप में जुड़े उपदेशकों, आर्यसमाज के पदाधिकारियों व संगठन के बड़े पदों पर बैठकर प्रचार की योजना बनाने वाले आर्यजनों को चाहिए कि यदि वे प्रभाव पैदा करने वाला प्रचार-अभियान चलाना चाहते हैं, वेद प्रचार के लिए खर्च किये गये धन को व्यर्थ नहीं जाने देना चाहते हैं तो वेद-विद्या के प्रचार-प्रसार के लिए ऐसे आर्य विद्वानों को प्राथमिकता दें, जिनका जीवन बोलता हो, जिनका व्यवहार वाणी का साथ देता हो और वाणी व्यवहार का साथ देती हो। यह मानव स्वभाव का एक बहुत बड़ा सत्य है कि जिसके वाणी और व्यवहार में अन्तर होता है तो जनता उसकी वाणी से व्यवहार को अधिक महत्त्व देती है। किन्हीं दुर्बलताओं की ओर संकेत करने की अपेक्षा मैं उन विशेषताओं की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूँ जिनके कारण हमारा प्रचार कार्य अधिक सफल और सार्थक हो सकता है। हम जो काम कर रहे हैं जिस काम (वेद प्रचार) के लिए समय, श्रम व संसाधन खर्च कर रहे हैं अगर उस काम में थोड़ा-सा सुधार करके अपने समय, श्रम व संसाधनों का सच्चे अर्थों में उचित लाभ लिया जा सके तो यह बहुत सुख-सन्तोष और पुण्य देने वाली बात होगी।

वेद-विद्या के प्रचार-प्रसार के लिए पहली प्राथमिकता तो यह है कि हम सिद्धान्तवादी उपदेशकों की अपेक्षा सिद्धान्त जीवी उपदेशकों को इस पवित्र कार्य में प्रोत्साहित करें। वेद विद्या का प्रचार-प्रसार अन्य मत वालों के समान केवल वाणी का विषय नहीं है। लच्छेदार भाषणों से जन भावनाओं का शोषण करना गुरुडमवाद के फैलाने का सफल अस्त्र हो सकता है, वेद-विद्या के प्रचार-प्रसार के लिए तो जीवन को तपाकर एक ऐसी प्रखर ज्योति हृदय में जलानी होती है जो आत्म-कल्याण और जन-कल्याण दोनों को समान रूप से प्रकाशित करती रहती है। एक दूसरा लक्ष्य, जिस पर हम सबको गम्भीरता से विचार करना है वह यह है कि हमें एक नया प्रयोग भी करना

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

चाहिए। जो प्रचार-प्रसार हम करते चले आ रहे हैं, वह अपनी गति से सिद्धान्त जीवी उपदेशकों द्वारा चलता रहे, मगर इसके साथ-साथ हमें नई पीढ़ी के लिए विशेष कार्य योजना के साथ विद्यालयों में प्रचार कार्य करना चाहिए। आज की युवा पीढ़ी माना कि पाश्चात्य जीवन-शैली के अनुरूप ढ़लती जा रही है, लेकिन इसके साथ यह भी मानना ही पड़ेगा कि हमारी युवा पीढ़ी अब अधिक तर्कशील और बुद्धि से काम लेने वाली है। उनमें जो उद्दण्डता व उच्छृंखलता दिख रही है, वह उनके माता-पिता के आलस्य प्रमाद की देन है। मैंने कई वर्ष इस दिशा में काम किया है, मेरा अनुभव है कि सहृदयता और तर्कशीलता के साथ पाश्चात्य धारा और वैदिक जीवनशैली के गुण-दोषों को मनोवैज्ञानिक ढंग से समझाया जाए तो हमारी युवा पीढ़ी का एक बड़ा भाग आज भी सम्भाला जा सकता है। अगर हम एक विद्यालय-महाविद्यालय में २०-३० युवक-युवतियों को भी वैदिक धर्म का अनुरागी बना सके तो उनके सहयोग से चमत्कारी परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं। यह अलग बात है कि आगे चलकर वे युवक-युवतियाँ जब शिक्षा पूरी करके कार्य क्षेत्र में विभिन्न पदों पर पहुँच कर भविष्य में आर्यसमाज को कितना बड़ा सहयोग कर सकते हैं। प्रत्येक आर्यसमाज अपने पुरोहित के माध्यम से यह काम करके अतिरिक्त पुण्य कमा सकता है। इसके लिए पुरोहित को स्वाध्यायशील व साधनाशील होना चाहिए। समाज उसके आर्थिक पक्ष का विशेष ध्यान रखे क्योंकि परिवार-पोषण की चिन्ता से त्रस्त पुरोहित या उपदेशक वेद विद्या प्रचार जैसे पुण्य कार्य के साथ न्याय नहीं कर सकेगा। विद्यालय-प्रचार योजना कम लागत में अधिक लाभ देने वाला काम है, इस पर विचार ही नहीं अविलम्ब कार्य होना चाहिए।

एक महत्त्वपूर्ण काम जो हमें प्राथमिकता के साथ करना चाहिए, वह है आर्य सभासदों व पदाधिकारियों के लिए सुविधानुसार ४-६ या ८ दिन की सैद्धान्तिक कार्यशाला लगाना। जैसे हम वेद-प्रचार उत्सव करते हैं, उसी प्रारूप में प्रातः दो घण्टे संध्या व स्वाध्याय पर विचार व व्यवहार परक कक्षा लगाना और सायं को परस्पर खुली चर्चा करना आर्यसभासदों व पदाधिकारियों को कर्त्तव्य बोध पर शान्त मन से हृदय को छू लेने वाला विचार-विमर्श। परदोष दर्शन से सर्वथा अलग रहकर स्वदोष-दर्शन करते हुए उनका मार्जन करना। प्रत्येक आर्यजन को उसके कर्त्तव्य का बोध कराकर, ऋषि के तप, त्याग और बलिदान की हृदयभेदी भावना से अभिभूत करके बहुत अच्छे परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं। हमारे सम्मेलनों व उत्सवों में जनता को बाँधे रखने वाले औपचारिक भाषण-व्याख्यान होते हैं। लोक-दिखावे से हटकर हृदय व मस्तिष्क को झकझोर देने वाली सटीक शैली में अगर मानव के संवेदनशील अंशों को प्रेरित व उत्साहित किया जाए तो कोई कारण नहीं कि मनुष्य आत्म-सुधार न कर सके। कर्त्तव्य पालन के सुख लाभ व कर्त्तव्यहीनता के दु:खद परिणाम किसी के मन-मस्तिष्क में गहराई से अंकित कर दिये जाएँ तो कालान्तर में सुखद परिणाम आने से कोई रोक नहीं सकता। सुधी पाठक व समाज के सक्षम पदाधिकारी इन बातों पर गम्भीरता से विचार करके इस दिशा में अवश्य कदम उठाएँ। विचार व व्यवहार के लिए लेखक से सम्पर्क किया जा सकता है।

गाँव सूरौता, पत्रालय अवार, जनपद भरतपुर, राजस्थान-३२१००१

चलभाष-०९९७११७१७९७, ०९६९४५५३३४६

ऋषि मेला २०१३ हेतु स्टॉल आवंटन

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष ऋषि मेला ८, ९, १० नवम्बर शुक्र, शनि, रविवार २०१३ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्य जगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टॉलें लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उस क्रम से स्टॉलों का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉलों की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

स्टॉल सुविधा :- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाईट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज**-७.५ × १५ फीट।

ध्यातव्य : -१. स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। **२.** अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टेन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। **३.** बिस्तर रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। **४.** स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना अनुमति के पूर्व में स्टॉलों में सामान न रखें, न अधिकृत करें। **५.** आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

ध्यान-प्रशिक्षकों के अनुभव

परोपकारिणी सभा के तत्त्वावधान में महर्षि दयानन्द, वेद व आर्ष ग्रन्थों के अनुसार आर्यसमाज में ध्यान-पद्धति की रूपरेखा निश्चित करने हेतु अब तक तीन गोष्ठियाँ सम्पन्न हो चुकी हैं। इन गोष्ठियों में वैदिक-ध्यान का १५ मिनट व ३० मिनट का एक संक्षिप्त प्रारूप तैयार किया गया है। इसी दिशा में १५ मिनट के वैदिक-ध्यान का प्रशिक्षण देने के लिए ११ से १७ अप्रैल २०१३ को एक ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर लगाया गया, जिसमें ५० प्रतिभागियों को 'ध्यान प्रशिक्षक' का प्रशिक्षण दिया गया। आगामी २४ नवम्बर से १ दिसम्बर २०१३ को भी ऐसा ही ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर लगाया जाएगा, जिसमें वैदिक-ध्यान के १५ मिनट के स्वरूप के साथ-साथ ३० मिनट के संक्षिप्त स्वरूप का भी परिचय दिया जाएगा।

प्रथम सम्पन्न शिविर में 'ध्यान प्रशिक्षक' का प्रमाण-पत्र प्राप्त प्रशिक्षक अपने-अपने क्षेत्र में इस वैदिक-ध्यान का प्रशिक्षण दे रहे हैं। इन प्रशिक्षकों के कार्यक्रमों के विवरण व उनके तत्सम्बन्धि अनुभव **परोपकारी** के सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हैं। **- सम्पादक**

(क) श्यामसिंह सहयोगी के कार्यक्रम व अनुभव- २२ अप्रैल से ३१ जुलाई २०१३ तक

कार्यक्रम - १

तिथि - चैत्र शुक्ल एकादशी से लगातार २२/४/२०१३
स्थान - आर्य निवास, उमाही कलाँ, सहारनपुर
संख्या - ०८ से १०

कार्यक्रम - २

तिथि - वैशाख कृष्ण तृतीया (२८/४/२०१३)
स्थान - आर्य समाज भवन रामपुर,मनिहारान, सहारनपुर
संख्या - लगभग १००

कार्यक्रम - ३

तिथि - ज्येष्ठ कृष्ण नवमी २ जून २०१३
स्थान - आर्य समाज वार्षिकोत्सव हरपाल, सहारनपुर
संख्या - लगभग १५०

कार्यक्रम - ४

तिथि - ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया (११/६/२०१३)
स्थान - वार्षिकोत्सव आर्य समाज बम्बयाला, सहारनपुर
संख्या - लगभग १५०

कार्यक्रम - ५

दिनांक - १३ से २६ जुलाई २०१३ तक
स्थान - मेरा निवास स्थान, उमाही कलाँ, सहारनपुर
संख्या - १३ से १५ वर्ष की आयु के ७ किशोर

कार्यक्रम - ६

दिनांक - २९/७/२०१३
स्थान -डी.ए.वी. हाई स्कूल, रामपुर, मनिहारान, सहारनपुर
संख्या - दो सौ लगभग

अनुभव- महोदय! संन्यासी और वानप्रस्थी से ज्ञान-ध्यान की बात जानना हमारी पुरातन परम्परा में रचा-बसा है। मुझे लगता है कि ध्यान-प्रशिक्षक का प्रशिक्षण देने के लिए इन्हें प्राथमिकता दी जाय। साप्ताहिक सत्संग एवं आर्यसमाज उत्सव के अवसर पर वैदिक-ध्यान के लिए कहीं-कहीं समय मिल जाता है परन्तु अन्य अवसर जुटाना टेढ़ी खीर है। परोपकारिणी सभा और उसके कार्यक्रमों से सम्पूर्ण आर्यसमाज परिचित भी नहीं है। ग्रामीण क्षेत्र, जहाँ मेरा कार्य क्षेत्र है, इस सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानता। स्वयं हमारा तप, स्वाध्याय, संयम भी इतना नहीं है जो हर किसी को सन्तुष्ट कर विश्वास में ले सकें।..... कृपया परोपकारी में बार-बार 'वैदिक-ध्यान की आवश्यकता' शीर्षक से कुछ पक्तियाँ प्रकाशित करते रहेंगे तो शायद हम कुछ लोगों के कानों तक इस आवाज को पहुँचाने में समर्थ हो जाये।

उमाही कलाँ, सहारनपुर, उ.प्र.-२४७४५१

(ख) श्रीमती कुसुम बाला जी के कार्यक्रम

-१८/४/२०१३ को महिला आर्यसमाज मानसरोवर सत्संग में २१ महिलाओं को ध्यान कराया तत्पश्चात् प्रत्येक गुरुवार महिला आर्यसमाज मानसरोवर में ध्यान कराया जा रहा है।

- दिनांक २२ से ३० अप्रैल २०१३ तक राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, मानसरोवर की १५ शिक्षिकाओं व अन्य स्टाफ सदस्यों को ध्यान कराया गया।

- दिनांक १ से १६ मई २०१३ निरन्तर उच्च प्राथमिक विद्यालय, मानसरोवर में लगभग २२ महिलाओं को ध्यान कराया गया।

- ६ पारिवारिक सदस्यों/सम्बन्धियों को ध्यान कराया

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

गया।

– दिनांक २५ से २७ मई २०१३ तक आर्ष गुरुकुल माउण्ट आबू के उत्सव के अवसर पर कुछ महिलाओं को ध्यान कराया गया।

मानसरोवर, जयपुर

(ग) श्रीमान् के.एम. राजन जी के कार्यक्रम –

केरल में सुचारू रूप से वैदिक ध्यान पद्धति की कक्षायें प्रारम्भ करने की तैयारी कर रहे हैं जो कि अभी प्रारम्भिक रूप में है। परोपकारिणी सभा ने जो १५ मिनट की ध्यान पद्धति का उल्लेख किया है उसका एक-एक शब्द हम मलयालम भाषा में अनुवादित कर रहे हैं। मैं आर्यसमाज वेल्लीनेरी के साप्ताहिक सत्संगों में वैदिक ध्यान पद्धति विषय को रख रहा हूँ।

हमारी योजना का कार्यान्वयन ७ दिन के सत्र में किया जायेगा। (प्रतिदिन १ घण्टे के लिए) यह वैदिक ध्यान समाज में २७ मई से २ जून २०१३ तक किया गया। यह शिविर ऋषि उद्यान शिविर में सीखे गये विषय के अनुसार लगाया गया। कभी हम इस शिविर के कैमरा चित्र एवं अन्य विवरण समयानुसार प्रेषित कर देंगे। धन्यवाद

आर्यसमाज, पं. लेखराम स्मृति भवन, पो. वेल्लीनेझी, जि. पलक्कड, केरल-६७९५०४

(घ) श्रीमान् सेवराम आर्य के कार्यक्रम – मई व जून २०१३ में सम्पन्न कार्यक्रम

– दिनांक १२ मई २०१३ को प्रात: ८ बजे आर्यसमाज, हसनगंज पार, डालीगंज, लखनऊ, उ.प्र. में ११ प्रतिभागियों को ध्यान का प्रशिक्षण दिया

– दिनांक १२ मई २०१३ को सायं ६ बजे सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट, जानकीपुरम्, लखनऊ, उ.प्र. में १९ प्रतिभागियों को ध्यान का प्रशिक्षण दिया

– दिनांक १६ मई २०१३ को साायं ६ बजे वैदिक सत्संग, एम.एस.-१२०, अलीगंज, लखनऊ, उ.प्र. में १५ प्रतिभागियों को ध्यान का प्रशिक्षण दिया

– दिनांक १७ मई २०१३ को प्रात: ८ बजे आर्यसमाज, हसनगंज पार, डालीगंज, लखनऊ, उ.प्र. में १९ प्रतिभागियों को ध्यान का प्रशिक्षण दिया

– दिनांक १८ मई २०१३ को सायं ६ बजे आर्यसमाज, हसनगंज पार, डालीगंज, लखनऊ, उ.प्र. में २५ प्रतिभागियों को ध्यान का प्रशिक्षण दिया

– दिनांक २८ मई २०१३ को प्रात: ८ बजे वार्षिकोत्सव पर आर्यसमाज, महावीरगंज, अलीगंज, लखनऊ, उ.प्र. में १७ प्रतिभागियों को ध्यान का प्रशिक्षण दिया

– दिनांक ३१ मई २०१३ को सायं ६ बजे गुरुकुल आश्रम, जानकीपुरम्, लखनऊ के विद्यार्थी, सचिवालय कॉलोनी, मारुति पार्क के निकट, त्रिवेणी नगर, लखनऊ, उ.प्र. में ११ प्रतिभागियों को ध्यान का प्रशिक्षण दिया।

जून माह में आर्यसमाज शाहाबाद, जि. हरदोई, उ.प्र. के वार्षिकोत्सव में उपस्थित सज्जनों को ध्यान का प्रशिक्षण दिया। संख्या निम्नानुसार रही।

तिथि	**समय**	**प्रतिभागी संख्या**
११/६/२०१३	प्रात: ६.०० बजे	२५
११/६/२०१३	सायं ६.०० बजे	५०
१२/६/२०१३	प्रात: ६.०० बजे	१५
१२/६/२०१३	सायं ६.०० बजे	३५
१३/६/२०१३	सायं ६.०० बजे	५५

आर्यसमाज हसनगंज पार, डालीगंज, लखनऊ, उ.प्र.-२२६०२०

(ङ) श्रीमान् लक्ष्मण प्रसाद जी के कार्यक्रम व अनुभव

मैंने उपरोक्त शिविर में ११ से १७ अप्रैल २०१३ तक भाग लिया। यह शिविर परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा आयोजित किया गया था। लौटते समय मुझे यहाँ से प्रमाण-पत्र भी मिला। मैंने हमारे आर्यसमाज में ध्यान प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी (आर्यसमाज इन्दिरा नगर, लखनऊ में) यह कार्य मैंने प्रात: दैनिक यज्ञ के उपरान्त नियमित रूप से प्रारम्भ कर दिया। इस हेतु मैंने डी.ए.वी. स्कूल इन्दिरा नगर, लखनऊ का चयन किया (यह कार्य एक अथवा दो बार प्रति सप्ताह के हिसाब से ग्रीष्म अवकाश समाप्त होने के पूर्व प्रारम्भ कर दिया।) इस सम्बन्ध में मेरे अनुभव के अनुसार कुछ समस्यायें उत्पन्न हो गईं:-

१. डी.ए.वी. के विद्यार्थियों की पढ़ाई का माध्यम अंग्रेजी भाषा है अत: वे ध्यान प्रक्रिया का अंग्रेजी में भाषानुवाद चाहते हैं। मैं ध्यान की पद्धति का विवरण उन्हें अंग्रेजी व हिन्दी भाषा के माध्यम से बतलाता हूँ जिससे वे लोग पूर्णतया ध्यान पद्धति को जान सकें। अंग्रेजी के माध्यम से ध्यान पद्धति उनके लिए सरल, सुगम्य हो सकती है।

२. आर्यसमाज के सदस्यों को लगता है कि ध्यान हेतु जो १५ मिनिट उनको उपलब्ध किये जाते हैं, उसमें से १० मिनिट ओ३म् के जाप एवं प्राणायाम में लग जाते हैं। शेष ५ मिनिट ही मात्र गहन ध्यान हेतु रह जाते हैं। हम दीर्घ ध्यान हेतु उन्हें राय देते हैं तथा उन्हें इसकी विभिन्न प्रक्रिया बताते हैं, इसमें मौन ध्यान को सम्मिलित नहीं कर सकते क्योंकि गहन ध्यान हेतु ५ मिनिट अपर्याप्त होते हैं। वे चाहते हैं कि न्यून से न्यून उन्हें मौन ध्यान हेतु १५ मिनिट मिलने चाहिए।

३. बाह्य प्राणायाम का जहाँ तक प्रश्न है, इसमें श्वास को बाहर ही रोक कर मूल इन्द्रियों को ऊपर की तरफ

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

खींचा जाता है जब तक बलपूर्वक प्राणों को बाहर ही रोका जाता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसका वर्णन सत्यार्थप्रकाश में इसी रूप में किया है। इस प्रकार एक छोटी-सी राय सत्यार्थप्रकाश में वर्णित वाक्य के स्पष्टीकरण की आवश्यकता है। इसके साथ यह भी स्पष्ट करें कि वह कौन-सी विधि है जिसके अन्तर्गत स्तम्भवृति सरल, सुगम्य हो सके (दीर्घ श्वसन के अन्तर्गत) इस पर पूर्ण रूपेण मार्गदर्शन चाहिए जिससे ध्यान के विषय में जान सके।

उपरोक्त बातों के अन्तर्गत मैं प्रार्थना करता हूँ कि आपका अमूल्य निर्देश हमारे कार्यक्रम को अति फलदायी बना सकता है। अत्यन्त श्रद्धा सहित।

- १३/३९९, इन्दिरा नगर, लखनऊ, उ.प्र.-२२७०१६

(च) श्रीमान् कैलाश धाकड़ के कार्यक्रम व प्रश्न-

मैंने विगत मई माह में दिनांक १५ से १९ मई २०१३ तक ग्रा. सुवास, तह. बड़नगर, जि. उज्जैन, म.प्र. में आर्यसमाज के प्रवचन कार्यक्रम में पाँच सत्रों में लगभग २०-२५ व्यक्तियों को (प्रत्येक सत्र में) ध्यान करने का प्रशिक्षण दिया। आगे भी इसी प्रकार से प्रशिक्षण देता रहूँगा, ऐसा विश्वास दिलाता हूँ।

आगे मेरी कुछ शंकाएँ हैं जो मैं आपके सामने रख रहा हूँ, कृपया मार्गदर्शन प्रदान करें।

१. ध्यान और संध्या में क्या अन्तर है? क्या ध्यान और संध्या साथ-साथ कर सकते हैं या अलग-अलग समय पर?

२. मैं ध्यान प्रशिक्षण की विधि को और अधिक प्रभावी और सशक्त बनाना चाहता हूँ, कृपया बताये क्या करूँ?

३. ध्यान सिखने में आर्यसमाजी लोग रुची नहीं लेते हैं और उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं?

- खाचरौद, जि. उज्जैन, म.प्र.

(छ) श्रीमान् प्रेमशंकर शुक्ल के कार्यक्रम -

ध्यान की तिथि	**प्रतिभागियों की संख्या**
२६/४/१३	१०
२७/४/१३	१०
१७/५/१३	१७
१८/५/१३	१८
१९/५/१३	६४

समय - प्रात: एवं सायं ६ बजे

स्थान - जागेश्वर मन्दिर, अलीगंज, लखनऊ, उ.प्र.
- आर्य समाज डालीगंज, लखनऊ, उ.प्र.

- बी.जी.-१, गोयल फ्लैट्स, १२१/१, फैजाबाद रोड, निकट इदिर ब्रिज, लखनऊ, उ.प्र.-२२६००७

(ज) श्रीमान् लक्ष्मीनारायण आर्य के कार्यक्रम व प्रश्न-

संथूला, जोधपुर, राजस्थान में मेरे द्वारा निम्न लिखित संख्या अनुसार अंकित दिनांक को ध्यान कराया गया।

दिनांक	**संख्या**
२४/४/२०१३	२
२५/४/२०१३	६
२६/४/२०१३	५
२७/४/२०१३	८
०२/५/२०१३	३२
०३/५/२०१३	२
०४/५/२०१३	२

श्रीमान् जी निम्न अंकित बिन्दुओं पर निर्देश प्रदान कराने की कृपा करावें-

१. बड़े विद्यार्थियों व पुरुषों को अजमेर के योग शिविर में भाग लेने हेतु प्रेरित कर सकते हैं।

२. राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के विद्यालयों में ध्यान कराया जावे या नहीं।

३. ध्यान के नौ बिन्दु मांगे जाने पर अलग से पेपर पर लिखकर दे सकते हैं अथवा नहीं।

४. अगर कोई सज्जन स्वेच्छा से धन देना चाहता है। उस स्थिति में मुझे क्या करना है। वैसे मेरी धन लेने की बिल्कुल इच्छा नहीं है। मैं निष्काम भाव से ध्यान कराना चाहता हूँ। कृपया इस सम्बन्ध में स्पष्ट निर्देश प्रदान करावें।

- चौपासनी रोड, चौथा पुलियाँ, सूंथला महादेव मंदिर के पीछे, गली नं. २, वार्ड संख्या २, जोधपुर, राजस्थान

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग १० मास से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

-: चिकित्सक :-

डॉ. रमेश मुनि, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर, राजस्थान

दूरभाष - ०९४६८८९६९१८

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

पुस्तक-परिचय

(१)

पुस्तक – स्वामी दर्शनानन्द जीवन चरित

लेखक – प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

प्रकाशक – विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द

पृष्ठ – २९६, **मूल्य** – २५०/-

हमारे भारत की धरा पर सहस्रों महापुरुषों ने जन्म लिया है। प्रत्येक महापुरुष ने अपने जीवन में विशेष कार्यों को कर संसार को नई दिशा दी है। आर्यसमाज में ऋषि दयानन्द जी के पश्चात् अनेकों संन्यासी, विद्वान्, शास्त्रार्थ महारथी हुए। वे अपने में एक से बढ़कर एक थे। उन्होंने अपने जीवन काल में वैदिक सिद्धान्तों की स्थापना और अवैदिक मत का खण्डन सदैव किया। इससे समाज में से अन्धविश्वास, पाखण्ड, अविद्या दूर हुई और विद्या का प्रकाश फैला।

इन सभी विद्वानों में से एक निराले ईश्वर भक्त, दर्शनों के मर्मज्ञ, अनेक गुरुकुलों के संस्थापक, शास्त्रार्थ महारथी, महर्षि दयानन्द के अनेक बार दर्शन करने वाले स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज हुए हैं। स्वामी दर्शनानन्द जी का जीवन ऋषि दर्शन के बाद आर्यसमाज का हो कर रह गया। स्वामी जी ने अपने घर रहते हुए और संन्यास लेने के बाद अपने व्याख्यानों, पुस्तकों, ट्रेक्टों, लेखों और शास्त्रार्थों के द्वारा केवल ऋषि मिशन का ही काम किया।

स्वामी दर्शनानन्द जी के जीवन परिचय के लिए ''स्वामी दर्शनानन्द जीवन चरित'' नाम से पुस्तक, आर्यसमाज के इतिहास मर्मज्ञ, लेखनी के धनी, आर्यसमाज की ओर टेढ़ी उंगली उठाने वालों की उंगली अपनी लेखनी रूपी तलवार से काटने वाले, ऋषि के अनन्य भक्त प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने लिखी। यह पुस्तक पण्डित लेखराम बलिदान पर्व पर सन् १९९० में अर्थात् आज से लगभग २३ वर्ष पूर्व छपी थी। पूर्व का संस्करण समाप्त होने से अब इसका दूसरा संस्करण स्वामी दर्शनानन्द निर्वाण शताब्दी वर्ष २०१३ में छपा है। इस पुस्तक को आर्यजगत् की वैदिक साहित्य से सेवा करने वाले गोविन्दराम हासानन्द प्रकाशक ने प्रकाशित किया है।

इस पुस्तक को लेखक ने सात भागों में विभक्त किया है। प्रथम भाग को ७६ पृष्ठों में जन्मभूमि तथा कुल-युगवार्ता से लेकर हंसते-हंसते धन लुटाते थे' तक पूरा किया है। द्वितीय भाग दस पृष्ठों का है जिसमें आर्य पत्रों में प्रकाशित..... कुछ पद्य से लेकर उनका रहन-सहन, व्यवहार तथा स्वभाव तक है। तृतीय भाग ९ पृष्ठों का जिसमें उनके ज्ञानोद्यान गुरुकुलों के विषय में लिखा है। चतुर्थ भाग में २७ पृष्ठ हैं, इसमें स्वामी जी का अन्तिम समय, मृत्यु और उनके प्रति श्रद्धा सुमन दिया है। पञ्चम भाग २१ पृष्ठों में है, इसमें स्वामी जी की विशेषताएँ विभिन्न लेखकों द्वारा लिखी हुई दी हैं। षष्ठ भाग ३१ पृष्ठों का है, जिसमें स्वामी जी की विशेषताएँ स्वयं लेखक ने खोज-खोज कर दी हैं। सप्तम भाग ५० पृष्ठों का है और अन्त में स्वामी दर्शनानन्द सूक्ति सुधा और पाद टिप्पणियाँ देकर पुस्तक को पूरा किया है। इस पुस्तक में लेखक ने स्वामी जी के एक लेख से उनके हृदय उद्गार उद्धृत किये हैं ''हमने अपनी कोई वस्तु अपने लिए नहीं बनाई, प्रत्युत जो कुछ किया आर्यसमाज के लिए किया....... हमने अपने पास केवल एक ही वस्तु रखी और वह है अन्तरात्मा। इसका कारण केवल यह है कि इसे हम ऋषि के सिद्धान्तों के अर्पण कर चुके थे।''

पुस्तक में लेखक द्वारा लिखी हुई द्वितीय संस्करण की भूमिका व आमुख, वीतराग संन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी (दीनानगर) द्वारा प्राक्कथन और श्रीमान् अजयकुमार द्वारा लिखा प्रकाशकीय पाठकों को पढ़ने को मिलेगा। सुन्दर आवरण, कागज, छपाई से युक्त यह पुस्तक आर्यों को प्रेरणा देने वाली सिद्ध होगी। इसी आशा के साथ

सोमदेव, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

(२)

पुस्तक का नाम – प्रारम्भिक शिक्षा

लेखक – स्वामी शान्तानन्द सरस्वती

प्रकाशक – सन्त ओधवराम वैदिक गुरुकुल, भवानीपुर, कच्छ, गुजरात

सहयोग राशि – १०/- **पृष्ठ संख्या** – ८८

आज का युग भौतिकवादी है। नई तकनीक है, विज्ञान का बोलबाला है। प्रत्येक क्षेत्र में नई चांदनी दिखाई देती है। विद्यार्थी इस चान्दनी में अपने को सराबोर करना चाहता है। विद्यार्थी भारतीय संस्कृति के स्थान पर पाश्चात्य का दास बनता जा रहा है। विद्यार्थी जिन संस्कारों में पोषित हो रहे हैं वे उनके लिए घातक सिद्ध हो रहे हैं। उसी चिन्तन के लिए उपयुक्त नाटिका है।

विद्यार्थी ज्ञानार्जन करके भावी राष्ट्र का कर्णधार बनता है। वही देश का नागरिक है। विद्यार्थी के जीवन के लिए चरित्र, राष्ट्रभक्ति, ईश्वर भक्ति, धार्मिक विचार, सदाचारी होना परमावश्यक है। इस हेतु प्राचीन वैदिक संस्कृति,

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

सभ्यता, धर्म इतिहास, ईश्वर, जीव, प्रकृति, वेद वेदाङ्ग, योग तथा ऋषियों, महापुरुषों के संदर्भ में वास्तविक ज्ञान होना आवश्यक है। लेखक विद्यार्थियों के लिए नाटक रूप में प्रस्तुति दे रहे हैं। अपेक्षा है कि विद्यार्थी, अध्यापक, पाठकगण जीवन को उपयोगी बनायेंगे। लेखक ने मांसाहार क्यों, मानव बनना है या दानव, मदिरापान, वर्तमान, भूत, भविष्य पर दृष्टि, गोहत्या, तनाव से बचने के उपाय साथ-साथ ईश्वर प्रार्थना, दैनिक यज्ञ, अथ अग्निहोत्र, यज्ञ प्रार्थना, वैदिक प्रार्थना आदि पर पूर्ण प्रकाश डाला है। जीवन प्रकाश (ज्ञान) मय बने। कर्त्तव्य पथ को आदर्श सूचक बनायें।

आज के परिप्रेक्ष्य में जीवन निर्माण आवश्यक है। यह कब संभव है जब पुस्तिका को हृदयङ्गम कर सके। लेखक ने बालकों के निर्माण हेतु दूरदर्शिता का परिचय दिया है। ऐसी लेखनी की नितान्त आवश्यकता है। आशा है लेखक का प्रयास सफलीभूत होगा।

- देवमुनि, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

प्रतिक्रिया

श्रीमान् डॉ. धर्मवीर जी, सादर नमस्ते

महोदय जी, परोपकारी (अगस्त द्वितीय) २०१३ का अंक पढ़ा 'बेकसूर प्राणियों के खून में सने हमारे ये बर्बर शौक' डॉ. नेमीचन्द जी जैन का लिखा यह लेख पढ़ा। लेख वास्तव में रोंगटे खड़े करने वाला है। गाय जैसे पालतू पशु की हत्या करना बेहद दु:ख की बात है। इसी तरह से बन्दर, शेर, लोमड़ी, खरगोश आदि जानवरों को मारना, पर्यावरण को बिगाड़ना है क्योंकि परमात्मा की सृष्टि में कोई भी प्राणी बेकार नहीं है। सभी प्राणी मनुष्यों के लिये हितकर है। मेंढ़क, मछली, कछुवा आदि पानी के जीव भी हमारे लिये लाभदायक हैं। छोटे कीट-पतंग से लेकर हाथी जैसे जानवर भी हमारे लिये लाभदायक हैं। इस भयंकर स्थिति से बचने के लिये दुनियाँ के सभी मनुष्यों को शाकाहारी होना चाहिये। सभी को सूती वस्त्रों का प्रयोग करना चाहिये। सभी को देशी चमड़े के जूते पहनना चाहिये जो मौत से मरने वाले जानवरों की खाल के होने चाहिये। सभी को आयुर्वेदिक औषधी काम में लेनी चाहिये, यदि वे रोगी हो तो। अपना जीवन सादा एवं अन्न, दूध, फल एवं सब्जियों पर निर्वाह करें। यदि सभी ऐसा करे तो इस विकट स्थिति से निजात पा सकते हैं। विस्तार से लेख लिखने पर बधाई।

विनीत- कन्हैयालाल साहू, संरक्षक आर्यसमाज डोहरिया, भीलवाड़ा, राजस्थान

वेदान्त दर्शन का अध्यापन

महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर, राजस्थान में उपाचार्य श्री सत्येन्द्र आर्य जी के द्वारा ०१/१०/२०१३ तदनुसार आश्विन कृष्ण पक्ष द्वादशी विक्रम संवत् २०७३ को महर्षि व्यास प्रणीत ब्रह्मसूत्रों का ब्रह्ममुनि भाष्य सहित अध्यापन कराया जाएगा। यह अध्ययन लगभग छ: महिने तक चलेगा।

वेदान्त दर्शन के ४ अध्यायों के ५५५ सूत्रों में ईश्वर, जीव व प्रकृति के स्वरूपों और इनके साक्षात्कार का उपाय बताया गया है। उपनिषद् के संदिग्ध स्थलों की भी इसमें व्याख्या की गई है। पढ़ने के इच्छुक महानुभाव सम्पर्क करें।

सम्पर्क सूत्र - उपाचार्य सत्येन्द्र आर्य
दूरभाष संख्या - ८९५५९२४९४५, ९७८५९८४४७६
समय - प्रात: १०.३० से ११.१५ तक
- सायं ७.३० से ८.३० तक

अनमोल रचना

-ईश्वर दयाल माथुर

प्रभु की सृष्टि में तो बन्दे,
नरतन यह अनमोल।

जीवन चढ़ती-ढलती छाया,
जो बोया था सो ही पाया।
कितना तेरे पुण्यों का लेखा,
कर ले स्वयं ही तोल।

ठण्डा लोहा गरम को काटे,
मत जग में कड़वा तू बाँटे,
समझ ले इसको मूलमन्त्र है,
सत्य मृदु ही बोल।

धन वैभव की होड़, दौड़ में,
वर्चस्वों के जोड़-तोड़ में,
सभी लगे हैं, उठा-पटक में,
घट गए जीवन मोल।

-२५/४७ कावेरी पथ, मानसरोवर, जयपुर, मो. ९३५१२१९३४८

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

दृढ़ विश्वास–लगाए पार

– सुकामा आर्या

हमारे जीवन में कई ऐसे क्षण आते हैं जब हमें अपने सामने सब कुछ असंभव सा प्रतीत होने लगता है। जो स्वप्न संजोए थे, वो सब ध्वस्त होते नज़र आते हैं और स्वाभाविक तौर पर हम इसका दोष दूसरे व्यक्तियों पर, परिस्थितियों पर डालकर अपने में कुछ राहत महसूस करते हैं।

परन्तु थोड़े गम्भीर होकर चिन्तन करें तो पता चलता है कि दोष दूसरों के बजाए हमारे में ज्यादा होते हैं। असफलता का मुख्य कारण हमारे दोष, नाकाबलियत होती है, दूसरों की कुछ हद तक इसमें दख़लांदाजी होती है। हम स्वयं कई बार अपने आग्रह से अपने लिए परेशानियाँ खड़ी कर लेते हैं। इसका कारण ढूंढें तो पता चलेगा– अपने पर, स्वयं पर और ईश्वर पर विश्वास की कमी। जब मैं और वो ईश्वर है तो हमें तीसरे की आवश्यकता ही क्यों पड़ती है? ईश्वर सर्वशक्तिमान् है, उसमें कोई भी न्यूनता नहीं है– जब उसका साथ है, उसके हाथ में हाथ है, तो फिर हम असफल हो रहे हैं तो इसका मतलब है कि हमारे पुरुषार्थ में कमी है। हमारे आत्मविश्वास में कमी है। ऐसी परिस्थिति में फिर हम दूसरे बाहर के सहारे चाहे वो किसी व्यक्तियों का हो, वस्तुओं का हो या परिस्थितियों का हो–वो ढूंढ़ने लगते हैं।

यहाँ यह विषय विचारणीय है कि व्यक्ति, वस्तु व परिस्थितियाँ हमेशा तो एक जैसी नहीं रहती, इनमें परिवर्तन होता रहता है। व्यक्ति है– तो उसके स्वभाव में परिवर्तन आ सकता है। प्रेम करने वाला उपेक्षा भाव भी रख सकता है। वस्तु कभी है तो कभी मुहैया नहीं भी होगी। परिस्थितियाँ कभी अनुकूल होंगी कभी नहीं। तो इन Variables पर आधारित न होते हुए हमें Constants पर निर्भर करना चाहिए। वो तो– फिर दो हैं– या मैं स्वयं हूँ या ईश्वर है।

सो स्वयं पर दृढ़ विश्वास होना चाहिए– जो सफल होने के लिए आवश्यक है। इसके लिए समय-समय पर अपना विश्लेषण करें– जैसे पहले मैं इस व्यक्ति पर, इस परिस्थिति पर या इस वस्तु पर किस-किस तरह से आधारित था? कैसे इनसे प्रभावित होता था? इन से सम्बन्धित मन ऊचाट होता था तो कितने समय तक होता था? अब मैंने कितनी अपनी स्वतन्त्रता बना ली है। दूसरे व्यक्तियों पर मेरी निर्भरता घटी है या बढ़ी है? वस्तुओं पर से कितनी मेरी निर्भरता कम हो गई है? अगर बाहरी साधनों एवं व्यक्तियों पर निर्भरता घट रही है– तो आप प्रगति के पथ पर हैं। आप स्वावलम्बी होते जा रहे हैं। साधना के लिए, अध्यात्म के लिए स्वावलम्बी होना अत्यन्त आवश्यक है। कभी किसी समय कोई पुस्तक न उपलब्ध हो, गुरुजन का सानिध्य न हो तो घबराना नहीं चाहिए। क्योंकि दूरी तीन प्रकार की होती है– समय की, स्थान की व ज्ञान की। अगर किसी समय विशेष पर वस्तु अथवा व्यक्ति उस स्थान पर उपलब्ध नहीं भी है तो ये ढूंढ़ने की कोशिश करें कि क्या इन दोनों से उपलब्ध ज्ञान मेरे पास है– तो आपको राहत मिलेगी व वस्तु, व्यक्ति की दूरी खलेगी नहीं। आप धीरे-धीरे स्वावलम्बी बनते जाएंगे। फिर वस्तुएँ, व्यक्ति हमारे पथ के अवरोधक नहीं बनेंगे। क्योंकि जीवन की राह तो बहुत लम्बी है– चलना तो हमें स्वयं ही है– कहाँ तक हम दूसरों की बैसाखियों के सहारे चलेंगे–

मैंने जा कर देख लिया है, हद्दे-नज़र से आगे भी।
रहगुज़र ही रहगुज़र हैं हद्दे-नज़र से आगे भी।।

दूसरा ये विश्लेषण करें कि ईश्वर पर विश्वास कितना बढ़ा है? अगर यह पहले से अधिक पक्का हो गया है– तो हम प्रगति के पथ पर है। उसके लिए अपनी साधना, उपासना में तनिक भी ढ़ील न आने दें। ईश्वरीय विश्वास यकीनन मंजिल तक पहुँचा देता है –

इरादे मज़बूत हों पहाड़ भी रस्ते से हटते जाएगें।
पथ के पैने कांटे फूल बन स्वागत में मुस्कुराएंगे।।
कंकर पत्थर झाड़-झंखाड की औकात ही क्या?
ये सब तो साथी बन, मंज़िल तक पहुँचाएंगे।।

सो हम ईश्वर का पल्ला पकड़े, उसके सान्निध्य में होकर रहें– वो हर समय, उसके सान्निध्य में होकर रहें– वो हर समय, हर स्थान, हर क्षण हमारे साथ है, हमारी सहायता करता है। सबसे बड़ी बात वो कभी शिकायत नहीं करता, कभी समय की अनुपलब्धि का बहाना भी नहीं बनाता और वो कृपा करके एहसान भी नहीं जताता। He is ever loving. He is always with us to guide, to lead and to support. Hold the hands of omnipotent god to be successful in life!

हम स्वयं पर व ईश्वर पर विश्वास रखते हुए अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर सकते हैं। इसमें कई बार समय लगता है पर वो ही परिस्थिति, वही वस्तु, वही

शेष भाग पृष्ठ संख्या ०६ पर....

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

जिज्ञासा समाधान – ४८

–आचार्य सोमदेव

सत्यार्थप्रकाश सप्तम समुल्लास में निम्न जिज्ञासाएँ उत्पन्न की गई –

जिज्ञासा १– जीव शरीर में भिन्न विभु है, वा परिच्छिन्न? उत्तर– परिच्छिन्न, जो विभु होता तो जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, मरण, जन्म, संयोग, वियोग, आना, जाना कभी नहीं हो सकता। यह जाना–आना आदि किस का है? जीव का या शरीर का? कृपया इसको विस्तार से समझा दीजिये।

जिज्ञासा २– जीव का शरीर में स्थान नियत है या बदलता रहता है?

ज्ञानप्रकाश कुकरेजा, ७३६/८, अर्बन स्टेट, करनाल, हरियाणा–१३२००१

समाधान १– यहाँ महर्षि दयानन्द ईश्वर और जीव की तुलना करते हुए जीव के स्वरूप को दर्शा रहे हैं कि जीव शरीर में विभु न होकर परिच्छिन्न है। ऐसा कहकर आगे इसके कारण लिखे हैं। कारणों पर चर्चा करने से पहले विभु व परिच्छिन्न शब्दों के अर्थों को देख लेते हैं। विभु कहते हैं सर्वव्यापक, सर्वगत, सर्वोपरि को। ये अर्थ (गुण) जीव में कभी नहीं घट सकते। परिच्छिन्न के अर्थ हैं सीमित, परिसीमित, सीमाबद्ध, एकदेशीय यही अर्थ जीव में घटते हैं। महर्षि जीव के विभु न होकर परिच्छिन्न होने के कारण कह रहे हैं ''जो विभु होता तो जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, मरण, जन्म, संयोग, वियोग, जाना, आना कभी नहीं हो सकता।'' स्वप्न, जाग्रत, सुषुप्ति शरीर धारियों में होती है। विभु परमेश्वर कभी शरीर धारण नहीं करता इसलिए ये अवस्थाएँ भी विभु परमेश्वर में नहीं होती। शरीर नहीं तो जन्म मरण किसका। विभु (व्यापक) में संयोग–वियोग, जाना–आना भी नहीं हो सकता क्योंकि संयोग अप्राप्त से होता है और परमेश्वर व्यापक होने से उसको कुछ अप्राप्त है ही नहीं। वियोग प्राप्त से होता है यहाँ भी परमेश्वर सर्वव्यापक होने से किसी पदार्थ से हट नहीं सकता, तो उसका वियोग भी नहीं हो सकता। वैसे ही जाना–आना भी सर्वव्यापक का नहीं हो सकता, यह तो एकदेशीय में ही सम्भव है।

महर्षि ने जीव परिच्छिन्न कहा और परिच्छिन्न होने में जो हेतु दिये हैं, वे सब जीव में ही घटते हैं। जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति शरीर में रहते हुए जीव की अवस्थाएँ हैं। जन्म–मरण–शरीर का मिलना और शरीर का छूटना एकदेशीय परिच्छिन्न जीव के लिए है। संयोग–वियोग–शरीर से संयोग और उससे वियोग जीवात्मा का होता है अथवा शरीर के माध्यम से आत्मा किसी अन्य से संयुक्त होता है और वियुक्त होता है। इसी प्रकार संसार में आत्मा शरीर में रहते हुए जाना–आना करता है और मोक्ष में परमेश्वर के आधार से जाना–आना परिच्छिन्न जीव करता है, अर्थात् **यह जाना–आना आदि शरीर के माध्यम से जीव करता है।** आपका उत्तर तो आ गया होगा। कुछ और प्रमाण आत्मा के परिच्छिन्न होने में लिखते हैं– मुण्डकोपनिषद् में स्पष्ट कहा

''एषोऽणुरात्मा चेतसा वेदितव्यः।''

मुं. ३.१.६।

अर्थात् यह अणु (परिच्छिन्न) आत्मा शुद्ध अन्तःकरण द्वारा जानने योग्य है।

बालादेकमणीयस्कमुतैकं नैव दृश्यते।
ततः परिष्वजीयसी देवता सा मम प्रिया।।

अथर्व. १०.८.२५

अर्थात् जीवात्मा बाल से भी सूक्ष्म है और एक प्रकृति है जो दीखती नहीं। इन दोनों में जो व्याप्त देवता है, वही मुझे प्रिय है। इसी बात को श्वेताश्वतर में और स्पष्ट किया–

बालाग्रशतभागस्य शतधा कल्पितस्य च।
भागो जीवः स विज्ञेयः स चानन्त्याय कल्पते।।

श्वेता. ५.९

बाल के अग्र के सौ भाग किये जाएँ फिर उनमें से एक भाग के सौ भाग किये जाएँ, उस एक भाग के बराबर जीव का परिमाण है और वह मुक्ति के लिए समर्थ है।

२. जीव का शरीर में स्थान– इस विषय में ऐतरेय उपनिषद् में अलग–अलग स्थानों में इसके अनेक प्रमाण मिलते हैं। महर्षि दयानन्द जी ने भी सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ८ में लिखा है ''जीव के जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति अवस्था के भोगने के लिए स्थान विशेषों का निर्माण.....।'' यह शास्त्रीय प्रमाणों और महर्षि की साक्षी से जीव का मुख्य स्थान हृदय प्रतीत होता है। जैसे **'हृदि ह्येष आत्मा।' प्रश्नो. ३.६।** आत्मा का निवास स्थान हृदय है।

स वा एष आत्मा हृदि तस्यैतदेव निरुक्तं हृद्यमिति।
तस्माद्धृदयमहरहर्वा एवं वित्स्वर्गं लोकमेति।।

छां. ८.३.३

वह आत्मा हृदय में है। हृदय को हृदय कहते भी इसलिए हैं क्योंकि हृदि+अयम्=वह हृदय में है। जो इस रहस्य को दिन प्रतिदिन जान जाता है, वह उसे बाहर ढूंढने के स्थान में हृदय के भीतर ढूंढता है, और वही मानो स्वर्ग को पा जाता है। इस प्रकार और भी अनेक प्रमाण शास्त्रों में मिलते हैं। महर्षि ने भी ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में उपासना के लिए हृदय देश ही उत्तम माना है।

ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

संस्था-समाचार

१. योगासन प्रतियोगिता:- वर्तमान समय में हमारी नई पीढ़ी विशेषकर विद्यालय-महाविद्यालय में पढ़ने वाले छात्र-छात्राएँ, अपनी संस्कृति से किस तीव्रता से विमुख हो रहे हैं, यह तो सर्वविदित है। इस स्थिति के लिए केवल उन्हें ही जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता, हम भी इसमें उतने ही दोषी हैं क्योंकि हमने अपना सांस्कृतिक ज्ञान उन तक न पहुँचाया और न पहुँचने दिया। परोपकारिणी सभा का सदैव यह प्रयास रहा है कि युवा पीढ़ी के समक्ष अपने सांस्कृतिक मूल्य व धरोहर प्रस्तुत की जाए। इसी उद्देश्य से २५ व २६ अगस्त २०१३ को ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर स्थित अपने मुख्य परिसर में दो दिवसीय जिला स्तरीय योगासन प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें नगर के १० विद्यालय व महाविद्यालयों से लगभग २२० छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। प्रतिभागियों को उनकी अवस्था के आधार पर चार वर्गों में वर्गीकृत किया गया था, पुन: अपने प्रदर्शन के आधार पर प्रत्येक वर्ग के प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर चयनित छात्र-छात्राओं को पृथक-पृथक् स्मृति चिह्न व प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। इस प्रकार पुरस्कार वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

२. संस्कृत सम्भाषण शिविर:- परोपकारिणी सभा वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को संरक्षित करने के लिए कृतसंकल्प है। चूँकि वैदिक संस्कृति व सभ्यता के मौलिक स्रोत वेद, उपनिषद्, दर्शन आदि आर्ष साहित्य संस्कृत-भाषा में ही निबद्ध है, अत: ऐसी देवभाषा-संस्कृत भाषा का संरक्षण, संवर्धन करना, सभा का लक्ष्य हो जाता है। वर्तमान समय में हम अपनी भाषा के महत्त्व से अनभिज्ञ होते जा रहे हैं, अत: आज 'संस्कृत भाषा-अवबोधन' हमारे लिए एक कठिन लक्ष्य हो रहा है।

संस्कृत भाषा हमारी लोकभाषा बने, इस उद्देश्य से परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में वर्तमान समय में संस्कृत भाषा का प्रशिक्षण देने का अभियान प्रारम्भ हो चुका है। इस अभियान के अन्तर्गत उपाध्याय श्री भैरुलाल जी, जो कि ऋषि उद्यान में ही निवास करते हैं, संस्कृत-भाषा का व्यावहारिक सम्भाषण प्रयोग का प्रशिक्षण दे रहें हैं। जुलाई व अगस्त माह में उपाध्याय भैरुलाल जी के द्वारा अजमेर व आस-पास के क्षेत्रों में जो 'संस्कृत-सम्भाषण-शिविर' लगाए गए, उनके विवरण इस प्रकार हैं-

(क) दिनांक - २९ जुलाई से १२ अगस्त २०१३ तक
स्थान - राजकीय उच्च प्राथमिक संस्कृत विद्यालय, पुष्कर, अजमेर
संख्या - लगभग ५० छात्र

(ख) दिनांक - ०१ से १० अगस्त २०१३ तक
स्थान - श्री रमा बैकुण्ठ आचार्य संस्कृत विद्यालय, पुष्कर, अजमेर
संख्या - लगभग ८५ छात्र

(ग) दिनांक - १३ से २४ अगस्त २०१३ तक
स्थान - राजकीय वरिष्ठ उपाध्याय संस्कृत विद्यालय, पुष्कर, अजमेर
संख्या - लगभग ७० छात्र

३. डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम:- सम्पन्न कार्यक्रम-

(क) १ सितम्बर २०१३- आर्यसमाज जनकपुरी-सी ब्लॉक के साप्ताहिक सत्संग में 'मन का स्वरूप व उसके कार्य' विषय पर व्याख्यान दिया।

(ख) ०२ से ०८ सितम्बर तक- आर्यसमाज, ग्रेटर कैलाश-१ में वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत मुण्डकोपनिषद् को आधार बनाकर व्याख्यान दिए। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत कौटिल्य राजकीय विद्यालय व आर्य शिशु मन्दिर के बच्चों को भी मार्गदर्शन प्रदान किया।

(ग) १०-११ सितम्बर को जोधपुर, राजस्थान के दो आर्य परिवारों में यज्ञ सम्पन्न करवाया तथा प्रवचन प्रदान किए।

(घ) १३ सितम्बर से-ऋषि उद्यान में प्रात: काल यज्ञोपरान्त प्रवचन प्रदान कर रहे हैं।

- आगामी कार्यक्रम

(क) ६ अक्टूबर २०१३- श्री हंसमुनि जी वानप्रस्थ के नारनौल स्थित आश्रम में कुटिया का उद्घाटन करेंगे।

(ख) १२ से १५ अक्टूबर २०१३- ऋषि उद्यान परिसर में स्वामी देवेन्द्रानन्द जी द्वारा समायोजित 'सामवेद पारायण' यज्ञ सम्पन्न करवाएंगे।

(ग) १८ से २० अक्टूबर २०१३- दीनानगर मठ के वार्षिकोत्सव में भाग लेंगे।

४. यज्ञ एवं प्रवचन:- जैसा कि विदित है कि ऋषि उद्यान, आर्यजगत् के उन स्थानों में से एक है, जहाँ पूरे वर्ष दोनों समय अपरिहार्य रूप से यज्ञ एवं प्रवचन का कार्यक्रम होता है। प्रात:काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा पूर्व निर्धारित मन्त्र का महर्षि दयानन्द कृत भाष्य का स्वाध्याय भी किया जाता है। प्रात: प्रवचन के क्रम में सामान्य दिनों में डॉ. धर्मवीर जी जहाँ विभिन्न विषयों पर अपने विचार रखते हैं, वहीं स्वामी विष्वङ् जी अपने

-०१ से १५ सितम्बर २०१३

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

योगदर्शन के क्रम को आगे बढ़ाते हैं। सायं सत्संग में जहाँ सोमवार से बुधवार को आचार्य सत्येन्द्र जी व्यवहार भानु आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय कराते हैं वहीं गुरुवार से शनिवार आचार्य कर्मवीर जी सत्यार्थप्रकाश का स्वाध्याय कराते हैं। रविवार को गुरुकुल के ब्रह्मचारियों में से कोई एक ब्रह्मचारी किसी विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करते हैं।

१ से १२ सितम्बर तक के प्रात:कालीन प्रवचन के अपने क्रम में स्वामी विष्वङ् जी ने योगदर्शन के प्रथमपाद के प्रथम व द्वितीय सूत्र की व्याख्या प्रस्तुत की। आपने बताया कि 'अथ योगानुशासनम्' नामक प्रथम सूत्र की व्याख्या करते हुए महर्षि व्यास जी ने मन की पाँच अवस्थाएँ गिनायी हैं। क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध- इनमें प्रथम तीन की चर्चा विगत दिनों की जा चुकी है। चित्त की एकाग्र अवस्था में मन 'सम्प्रज्ञात समाधि' वाला होता है। यह सम्प्रज्ञात समाधि चार प्रकार की होती है-

(क) वितर्क समाधि (ख) विचार समाधि (ग) आनन्द समाधि (घ) अस्मिता समाधि

इन समाधियों में पृथक्-पृथक् पदार्थों का साक्षात्कार होता है यथा-

'**वितर्क**' नामक समाधि में आत्मा पञ्चमहाभूतों का साक्षात्कार करता है।

'**विचार**' नामक सम्प्रज्ञात समाधि में पञ्च तन्मात्राओं का साक्षात्कार किया जाता है।

'**आनन्द**' नामक सम्प्रज्ञात समाधि में पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, मन, अहंकार, बुद्धि तथा सतो, तमो व रजो गुण कुल १६ पदार्थों का साक्षात्कार किया जाता है।

'**अस्मिता**' नामक सम्प्रज्ञात समाधि में योगी स्वयं अपनी आत्मा का/अपने आत्म स्वरूप का साक्षात्कार करता है, इस प्रकार सम्प्रज्ञात समाधि के चारों प्रकारों में कुल २७ पदार्थों का साक्षात्कार किया जाता है।

चित्त की निरुद्ध अवस्था में होने वाली असम्प्रज्ञात समाधि की भूमिका में आपने बताया कि सम्प्रज्ञात समाधि में साधक यह अनुभव करता है कि यहाँ मैं जो आनन्द प्राप्त कर रहा हूँ यद्यपि वह प्रकृति का है लेकिन मैं इसे उस परम कृपालु परमपिता की कृपा से ही प्राप्त कर पा रहा हूँ। अत: मुझे उस आनन्द स्वरूप ईश्वर को जानना चाहिए। यद्यपि सम्प्रज्ञात समाधि का आनन्द मेरा अभी तक का सर्वोत्कृष्ट अनुभूत आनन्द है तथापि यह त्याज्य है, क्योंकि यह मुझे मुक्ति नहीं दिला सकता और बिना मुक्ति के मैं पुन: जन्म-मरण के चक्र में फंसकर पूर्व की भाँति ही दु:ख उठाऊँगा। अत: मुझे असम्प्रज्ञात समाधि की ओर बढ़ना चाहिए। इस प्रकार के विवेक-वैराग्य से साधक असम्प्रज्ञात समाधि की ओर बढ़ता है तथा परमेश्वर की कृपा से उसके स्वरूप को जान पाता है।

'**योगश्चित्तवृत्तिनिरोध**' (१/२) की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि साधक व्यक्ति को मन का वास्तविक स्वभाव क्या है, यह जानना आवश्यक है। क्या मन चंचल है? अथवा इससे भिन्न स्वभाव वाला है? मन के स्वभाव को जानने के लिए, मन के उपादन कारणों को भी जानना होगा। मन सतो गुण, रजो गुण व तमो गुण की विभिन्न मात्रा के परस्पर मिश्रण से बना है। इस मिश्रण में सतो गुण सर्वाधिक मात्रा में है, सतो गुण से आधी मात्रा में रजो गुण तथा रजो गुण की आधी मात्रा में तमो गुण मिलकर संयुक्त रूप में मन का निर्माण करते हैं। प्रख्या-सतो गुण का लक्षण है, प्रवृत्ति- रजो गुण का तथा स्थिति तमो गुण का लक्षण है। अत: यहाँ इस आधार पर कहा जा सकता है कि मन का स्वभाव-सत्व गुण प्रधान है।

२ से ५ सितम्बर के सायंकालीन प्रवचन के क्रम में आचार्य सत्येन्द्र जी ने स्पष्ट किया कि व्यक्ति का सौन्दर्य दो प्रकार का होता है- **(क) आन्तरिक सौन्दर्य (ख) बाह्य सौन्दर्य।**

आन्तरिक सौन्दर्य अर्थात् धैर्य, त्याग, तपस्या, क्षमा की पूंजी, इनका संचय, वर्धन हमारे हाथों में होता है जबकि **बाह्य सौन्दर्य** तो ईश्वर प्रदत्त है, इसमें हम एक सीमा के बाद परिवर्तन भी नहीं कर सकते हैं अत: हमें अपने आन्तरिक सौन्दर्य को बढ़ाना चाहिए, इससे बाह्य सौन्दर्य भी स्वत: ही मिल जाएगा।

आचार्य कर्मवीर जी ने अपने प्रवचन क्रम में सत्यार्थप्रकाश का स्वाध्याय कराते हुए बताया कि समाज में बुराई तभी बढ़ती है, जब इसका प्रतिकार नहीं किया जाता है और इसका पाप उन सामर्थ्यवान् लोगों को भी अवश्य मिलता है जो उन बुराईयों को रोकने में समर्थ होते हुए भी इसे रोकते नहीं है। आगे आपने बताया कि अधर्मी व्यक्ति को पापाचरण में मिलने वाली छोटी-छोटी सफलताएँ ही पतन की ओर ले जाती हैं क्योंकि इन सफलताओं को पाकर व्यक्ति उत्तरोत्तर बड़े-बड़े पाप कर्म करते चला जाता है।

१ सितम्बर के रविवारीय प्रवचन में डॉ. रमेश मुनि जी ने मृत्यु व मोक्ष की लौकिक उदाहरणों से तुलना कर, मुक्ति प्रयास को श्रेष्ठ बताया।

८ सितम्बर को ब्र. निरञ्जन जी ने कुरान की कुछ ईश्वर, व्यवहार विषयक आयतों को अरबी भाषा में उद्धृत कर हिन्दी में उसका अनुवाद कर बताया कि इस्लाम मतानुयायियों में भी कितनी ऐसी बातें हैं, जिनका उनके धर्मग्रन्थों में निषेध है।

१५ सितम्बर को ब्र. वामदेव जी ने महर्षि दयानन्द के भारतवर्ष पर उपकारों की चर्चा बड़ी ही भावुक शैली में किया। इत्योम्

ब्र. लक्ष्यवीर व दीपक आर्य

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आर्यजगत् के समाचार

१. पौधारोपण समारोह- २५/८/२०१३ को यज्ञ समिति झज्जर के तत्त्वावधान में महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर में यज्ञ-भजन-प्रवचन-अभिनन्दन समारोह का विशेष आकर्षक बिन्दु रहा- एक ही मौहल्ले भट्टी गेट झज्जर के नर्सरी कक्षा से दसवीं कक्षा तक के सवा सौ से अधिक बच्चों ने गायत्री महामन्त्र का भावार्थ कविता के रूप में किया। आर्यसमाज के विशाल बगीचे में सवा सौ से अधिक नई पौध आरोपित की। यह कार्यक्रम स्व. महाशय महाराम जी की स्मृति में आयोजित किया गया।

२. सहायता हेतु अपील- लगातार भारी वर्षा से नर्मदा नदी में भयंकर बाढ़ आई जिससे नर्मदा नदी के तट पर स्थित आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद के भवनों में चार फुट पानी भर गया जिससे गुरुकुल की कृषि नष्ट हो गई, गायों का भूसा सड़ गया, ईधन की लकड़ी बह गई, साग-सब्जी की फसल ख़राब हो गई, भवनों को क्षति पहुँची। पाँच लाख रुपयों की मूंग एवं पाँच लाख रुपयों की धान सड़-गल कर नष्ट हो गई, भूसा लकड़ी आदि में लगभग दो लाख रुपयों की हानि हुई। इस प्रकार गुरुकुल को जुलाई-अगस्त २०१३ में लगातार वर्षा व भयंकर बाढ़ से बारह लाख रुपयों की हानि हुई, ईश्वर की कृपा से गुरुकुल जनहानि से बच गया। आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद मुख्य रूप से दान के सहारे से ही चल रहा है, प्रतिदिन एक सौ व्यक्तियों के भोजन का प्रबन्ध करना होता है जिसमें प्रतिदिन कम से कम चार हजार रुपये और मासिक एक लाख बीस हजार रुपयों का मात्र भोजन पर खर्च होता है इस समय गुरुकुल के पास भोजन व्यवस्था के लिए भी राशि नहीं है व्यापारियों से भोजन सामग्री दाल, चावल, तेल आदि उधार लाया जा रहा है, मंहगाई की मार तो झेलनी ही पड़ रही है अत: आप सभी दानी महानुभावों, धर्मप्रेमी सज्जनों, आर्यजनों व सभा संस्थाओं से विनम्र प्रार्थना है कि आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद, मध्य प्रदेश की तत्काल आर्थिक सहायता करने की कृपा करें। गुरुकुल सदैव आपका आभारी रहेगा। आप अपना सहयोग गुरुकुल के निम्न खाते में जमा करा सकते हैं-

खाता धारक- आर्ष गुरुकुल समिति

शाखा- सैन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया

खाता संख्या - १४६८३२८९६४ (1468328964)

आईएफएससी कोड संख्या - सीबीआईएन-०२८०७५७ (IFSC Code-CBIN-0280757)

निवेदक- आचार्य जगद्देव नैष्ठिक, अध्यक्ष, आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद, म.प्र.

दूरभाष संख्या - ०९८२७५१३०२९

३. शोधसंगोष्ठी सम्पन्न- दिनांक १७ अगस्त २०१३ शनिवार को स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान, गुरुकुल प्रभात आश्रम में 'अखिल भारतीय वैदिक शोध संगोष्ठी' सम्पन्न हुई। जिसका विषय था- 'वेदों में इतिहास'। शोध-संगोष्ठी का शुभारम्भ गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा सरस्वती वन्दना एवं स्वागत गीतिका प्रस्तुत करके किया गया। संगोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में दृढ़तापूर्वक वेदों में अनित्य इतिहास का निराकरण किया। शोध-संगोष्ठी में इन विद्वानों के अतिरिक्त भारतवर्ष के विभिन्न विश्वविद्यालय से आये विद्वानों ने अपने-अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये। अन्त में शोधसंस्थान के अध्यक्ष एवं गुरुकुल के कुलाधिपति स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी ने ऋषि दयानन्द विषयक संस्मरणों को उपस्थापित कर वेदों में लौकिक इतिहास ढूंढ़ना विदेशियों का एक षड्यन्त्र बताया है। तदुपरान्त शान्तिपाठ के साथ शोध संगोष्ठी का समापन हुआ।

४. वेद प्रचार सप्ताह मनाया- आर्यसमाज शाहपुरा, भीलवाड़ा (राज.) द्वारा मिति श्रावण सुदी पूर्णिमा दि. २१ से २८ अगस्त २०१३ से अलग-अलग स्थानों पर वेद पाठ, यज्ञ-भजन आदि के कार्यक्रम रखे गये। उपरोक्त कार्यक्रमों में आर्यसमाज के प्रधान कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान हीरालाल आर्य, मन्त्री सत्यनारायण तोलम्बिया, पुरोहित बाली मुकन्द बगेरवाल, शान्तिलाल लखोटिया, मदन मोहन सुगंधी, गोपाल राजगुरु, अन्नपूर्णा शर्मा, रमेश शर्मा, विश्वबन्धु पाठक, सज्जनसिंह आदि एवं मोहल्लेवासियों की उपस्थिति रही।

५. श्रावणी पर्व मनाया- गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी आर्यसमाज नई मण्डी, मुजफ्फरनगर का श्रावणी पर्व राष्ट्र समृद्धि यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। राकेश कुमार आर्य ने ब्रह्मापद से बोलते हुए बताया कि श्रावणी पर्व से ऋषि कृत ग्रन्थों का स्वाध्याय प्रारम्भ किया जाये। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री आनन्दपाल सिंह आर्य, डॉ. नरेशकुमार आर्य, बाबू आनन्दस्वरूप आर्य, ई. करणसिंह आर्य, ई. रणवीरसिंह आर्य, जितेन्द्र कुमार एड., राजपालसिंह चाहल एड., देवीसिंह आर्य, देवीसिंह सिम्भालका आदि का सहयोग रहा। कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री अनूपसिंह एडवोकेट ने ओ३म् ध्वज फहराकर किया।

६. स्वतन्त्रता दिवस समारोह- महर्षि दयानन्द

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

सरस्वती (एम.डी. शिक्षा समिति ढाबांझालार, श्रीगंगानगर) में स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया, जिसमें महान् धर्मप्रचारक स्वामी सूर्यदेव जी (भटिंडा, पंजाब) के करकमलों द्वारा ध्वजारोहण किया गया। स्वामी जी का स्वागत श्री सुशील जी, श्री विनोद जी गोठवाल, श्रीमती रोशनीदेवी, भूतपूर्व सरपंच समस्त स्कूल स्टाफ ने किया। सभी ग्रामवासियों ने समय पर पहुँचकर स्वतन्त्रता दिवस की शोभा बढ़ाई। जितेन्द्र आर्य (व्यायाम शिक्षक, आर्यवीर दल, ऋषि उद्यान, अजमेर) ने पधार कर विद्यार्थियों को जुडो-कराटे, सूर्य नमस्कार, आसन, तलवार व लाठी आदि का प्रशिक्षण दिया। विद्यालय के व्यवस्थापक श्री आत्माराम जी आर्य (रुड़वासरा) ने कहा- विद्यालय परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है। सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरण किया।

७. सम्मान- श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय, गुरुकुल शादीपुर के आचार्य डॉ. राजकिशोर शास्त्री का दिनांक १३ अगस्त २०१३ को हरियाणा प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री जगन्नाथ पहाड़िया ने हरियाणा राज्य भवन चण्डीगढ़ में '**विद्यामार्तण्ड पं. सीताराम शास्त्री आचार्य सम्मान**' से अभिनन्दन किया। जिसमें श्री पहाड़िया जी ने ५१०००/- रु. का चेक सहित दुशाला प्रशस्ती पत्र एवं स्मृति चिह्न भेंट कर शिक्षा जगत् में उच्च उपलब्धि प्राप्त करने पर उनका मान बढ़ाया।

८. वेद प्रचार उत्सव- गत वर्ष की भाँति डबरा नगर, ग्वालियर (म.प्र.) में चार दिवसीय वेद प्रचार उत्सव दिनांक २३ से २६ अगस्त २०१३ तक आयोजित किया गया। नगर के प्रतिष्ठित समाजसेवी श्री राजेन्द्र कंदेले के व्यवसायिक काम्पलेक्स व्हाइट हाउस में उत्सव का आयोजन किया गया। प्रत्येक दिवस सुबह ८.३० से ११ बजे तक चार अलग-अलग परिवारों में यज्ञ का आयोजन किया गया। चारों दिवस विद्यालयों में आचार्य जी का उद्बोधन हुआ।

९. वेद प्रचार समारोह- आर्यसमाज डी ब्लॉक, शास्त्री नगर, मेरठ, उ.प्र. का वेद प्रचार समारोह दिनांक ८ से ११ अगस्त २०१३ तक बड़े धूमधाम से मनाया गया जो हर प्रकार से सफल रहा। इस समारोह में उद्भट् विद्वान् श्री चन्द्रदत्त शर्मा बदायूँ, पं. भानुप्रकाश जी बरेली, वेदाचार्य निष्ठा जी कानपुर, श्रीमती सुदेश जी दिल्ली आदि के सारगर्भित प्रवचन एवं सुमधुर भजन हुये। समारोह के अन्तिम दिवस पर आर्यवीर दल के सदस्यों एवं मन्त्र सुनाने वाले बच्चों को सम्मानित किया गया।

१०. योग शिविर- पातंजल योगधाम आश्रम, आर्यनगर, ज्वालापुर में ७ से १३ अक्टूर २०१३ तक ध्यान योग शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस शिविर में आसन-प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, समाधि का प्रशिक्षण पूज्य स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी के निर्देशन में किया जायेगा। कृपया शिविर में पधार कर आत्मिक लाभ प्राप्त करें।

हमें बड़ा हर्ष हो रहा है कि आश्रम के संचालक व अध्यक्ष पूज्य स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी आगामी अप्रैल २०१४ में जीवन के ७५ वर्ष पूर्ण कर रहे हैं। अत: अब वह समय आ गया है कि हम सभी हितैषी साधक व आर्यजन पूज्य स्वामी जी के जन्मदिवस को अभिनन्दन समारोह के रूप में मनायें। इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु आप अपनी सामर्थ्यानुसार सहयोग प्रदान करने का कष्ट करें।

११. जन्माष्टमी मनाई- आर्यसमाज मगरा पूंजला, जोधपुर में श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व दिनांक २८/८/२०१३ को हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा श्री राजेन्द्र प्रसाद वैष्णव थे। इस उत्सव की अध्यक्षता श्री बुद्धि प्रकाश जी, मंत्री नगर आर्यसमाज गुलाब सागर जोधपुर ने की। कार्यवाही का संचालन मंत्री ने किया। धन्यवाद प्रधान श्री भीकसिंह जी ने दिया।

१२. शताब्दी समारोह- आर्यसमाज भोजपुर खेड़ी, उ.प्र. का शताब्दी महोत्सव आर्य उप प्रतिनिधि सभा जनपद बिजनौर के तत्वावधान में १९ से २१ अक्टूबर २०१३ ई. को मनाया जायेगा। इस अवसर पर आर्यसमाज भोजपुर खेड़ी शताब्दी यात्रा स्मारिका का प्रकाशन हो रहा है तथा १८ अक्टूबर को प्रात: विशाल शोभा यात्रा आर्यसमाज भवन से प्रारम्भ होकर अनेक ग्रामों में भ्रमण के साथ सायं आर्यसमाज में ही समाप्त होगी।

१३. वेद प्रचार सम्पन्न- आर्यसमाज सेक्टर-१२, हुडा, पानीपत (हरियाणा) में वेद प्रचार कार्यक्रम ३० अगस्त से १ सितम्बर २०१३ तक बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। इस कार्यक्रम में आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य उषर्बुद जी जयपुर के उपदेश हुए। आर्यजगत् के युवा भजनोपदेशक पं. भानुप्रकाश शास्त्री के मधुर भजनों ने जनता को मन्त्र मुग्ध कर दिया। कार्यक्रम में श्रोताओं की काफी संख्या रही।

१४. वेद प्रचार- आर्यसमाज नयाबाँस दिल्ली का वेद प्रचार सप्ताह २२ से २८ अगस्त तक सम्पन्न हुआ जिसमें आर्यजगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. भानुप्रकाश शास्त्री, बरेली के मधुर भजन व उपदेश हुए। यज्ञ समाज के पुरोहित श्री सहदेव शास्त्री ने सम्पन्न कराया। कार्यक्रम का संचालन मन्त्री ने किया, बाद में धन्यवाद प्रधान द्वारा किया गया।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

१५. डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार- समस्त गुरुकुलों के विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि टंकारा में प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव पर 'डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार' उस विद्यार्थी को दिया जायेगा जिसे योगदर्शन के समस्त १९५ सूत्र एवं यजुर्वेद के ४०वें अध्याय के सब मन्त्र शुद्ध उच्चारण व अर्थ सहित कंठस्थ होंगे। जो ब्रह्मचारी इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपना नाम अपने गुरुकुल के आचार्य के माध्यम से टंकारा गुरुकुल के आचार्य को शीघ्र भेज दें। प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले ब्रह्मचारी को पाँच हजार रुपये नगद व स्मृति चिह्न से पुरस्कृत किया जायेगा।

सम्पर्क सूत्र- आचार्य रामदेव,
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट,
टंकारा, राजकोट (गुजरात) ३६३६५०
दूरभाष संख्या-०२८२२-२८७७५६

१६. वेदकथा सम्पन्न- आर्यसमाज मन्दिर सागरपुर, नई दिल्ली के प्राँगण में दिनांक ५ से ८ सितम्बर २०१३ तक श्रावणी पर्व पर वेदकथा का भव्य आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत प्रतिदिन प्रातः यज्ञ, भजन व प्रवचन हुए। आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक, आचार्य गुरुकुल महाविद्यालय हौशंगाबाद, म.प्र. द्वारा गम्भीर चिन्तन के साथ व्याख्यान प्रस्तुत किये गये।

१७. वैदिक यज्ञिय संस्कृति द्वारा प्रचार- ब्र. राजेन्द्रार्य द्वारा जुलाई-अगस्त में प्रचारः-

(क) दिनांक २५ जुलाई २०१३ श्री सुरेश कुमार व. अभियन्ता के गृह प्रवेश रायबरेली में उद्‌गीथ सदन में यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। आगन्तुकों ने हर्ष के साथ भाग लिया।

(ख) २६ जुलाई २०१३ को एस.आर.सिंह व. अभियन्ता के यहाँ पारिवारिक यज्ञ हुआ। आनन्द उत्साह से धर्म प्रेमियों ने भाग लिया। साहित्य वितरण भी किया गया।

(ग) अगस्त को गढ़वा टाउन झारखण्ड में श्री विजयमुनि के गृह में निर्मित यज्ञशाला में यज्ञ सम्पन्न हुआ। अति उत्साह से धर्मप्रेमियों ने भाग लिया। धार्मिक साहित्य वितरित किया गया।

(घ) १८ अगस्त २०१३ को श्री अखिलेश्वर दयाल माथुर, निदेशक प्रचालन एन.सी.एल. के पुत्र रचित माथुर का एम.बी.ए. फ्रांस में चयन होने से यज्ञ का आयोजन किया गया। सन्तानों के निर्माण में संस्कारों की महत्ता पर व्याख्यान हुआ। श्रद्धालुओं को साहित्य वितरित किया गया।

१८. वार्षिकोत्सव का आयोजन-आर्यसमाज जड़ौदा पाण्डा, सहारनपुर, उ.प्र. के अन्तर्गत दि. १४,१५,१६ अक्टूबर २०१३ को १०वाँ वेद प्रचार एवं वार्षिक उत्सव का आयोजन किया जा रहा है जिसमें आप सभी श्रद्धालु सम्मिलित होकर कार्यक्रम को सफल बनावें- आयोजनकर्त्ता सूरजमल त्यागी।

१९ वीरांगना दल के कार्यक्रम- वैदिक वीरांगना दल के द्वारा वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार के लिए व दयानन्द के सपनों को पूरा करने के लिए अपने कार्यालय बी-१२३, मालवीय नगर, जयपुर पर अनेक तरह के वैदिक कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं जिसमें सुबह ८.३० बजे से हवन और उसका प्रशिक्षण और सायं ४ से ५ बजे तक उपनिषद् अध्ययन तथा ध्यान व सन्ध्या का आयोजन प्रतिदिन किया जा रहा है तथा बीच-बीच में अनेक तरह की कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। इस कार्यक्रम में सभी वर्ग के लोग शामिल हो रहे हैं।

२०. श्रावणी पर्व मनाया- आर्य समाज वेद मन्दिर, गोविन्द नगर, कानपुर, उ.प्र. के दिनांक २८ अगस्त से १ सितम्बर २०१३ तक आयोजित श्रावणी पर्व में इटावा से पधारे विद्वान् श्री राजदेव शास्त्री तथा श्री रामसेवक आर्य भजनोपदेशक, हमीरपुर द्वारा विभिन्न बिन्दुओ पर प्रकाश डाला। नगर की विभिन्न समाजों के गणमान्य अधिकारी एवं सदस्य विशेष रूप से उपस्थित रहे।

वैवाहिक समाचार

२१. वर की आवश्यकता- जन्म तिथि ०१/०७/१९८६, योग्यता बी.टेक (ई.सी.) रंग गेहूँआ, कद पाँच फुट साढ़े तीन इंच, सी.आर.पी.एफ. में असिस्टेण्ट कमाण्डेण्ट के पद पर सेवारत कन्या को वर के रूप में आर्य परिवार से राजकीय सेवारत अधिकारी/प्रवक्ता डिग्री कॉलेज की आवश्यकता है।

सम्पर्क-ओप्रकाश शास्त्री, बी-२०९,शास्त्री नगर,मेरठ, उ.प्र.
चलभाष- ०९७१९१९९४१८, ०९७५९४५७११७

चुनाव समाचार

२२. आर्यसमाज रामां मण्डी, भटिंडा, पंजाब के चुनाव में **प्रधान**- श्री सतपाल, **मन्त्री**- श्री शकित प्रकाश, **कोषाध्यक्ष**- श्री बलराज को चुना गया।

२३. आर्यसमाज अकोला, महाराष्ट्र के चुनाव में **प्रधाना**- डॉ. मन्जुलता विद्यार्थी, **मन्त्री**- डॉ. हुकुमसिंह आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री नारायण सर्राफ को चुना गया।

२४. आर्य उप प्रतिनिधि सभा, भीलवाड़ा के चुनाव में **प्रधान**- श्री गणपत लाल आर्य, **मन्त्री**- रामकृष्ण छाता, **कोषाध्यक्ष**- श्री गोपाल लाल शर्मा को चुना गया।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

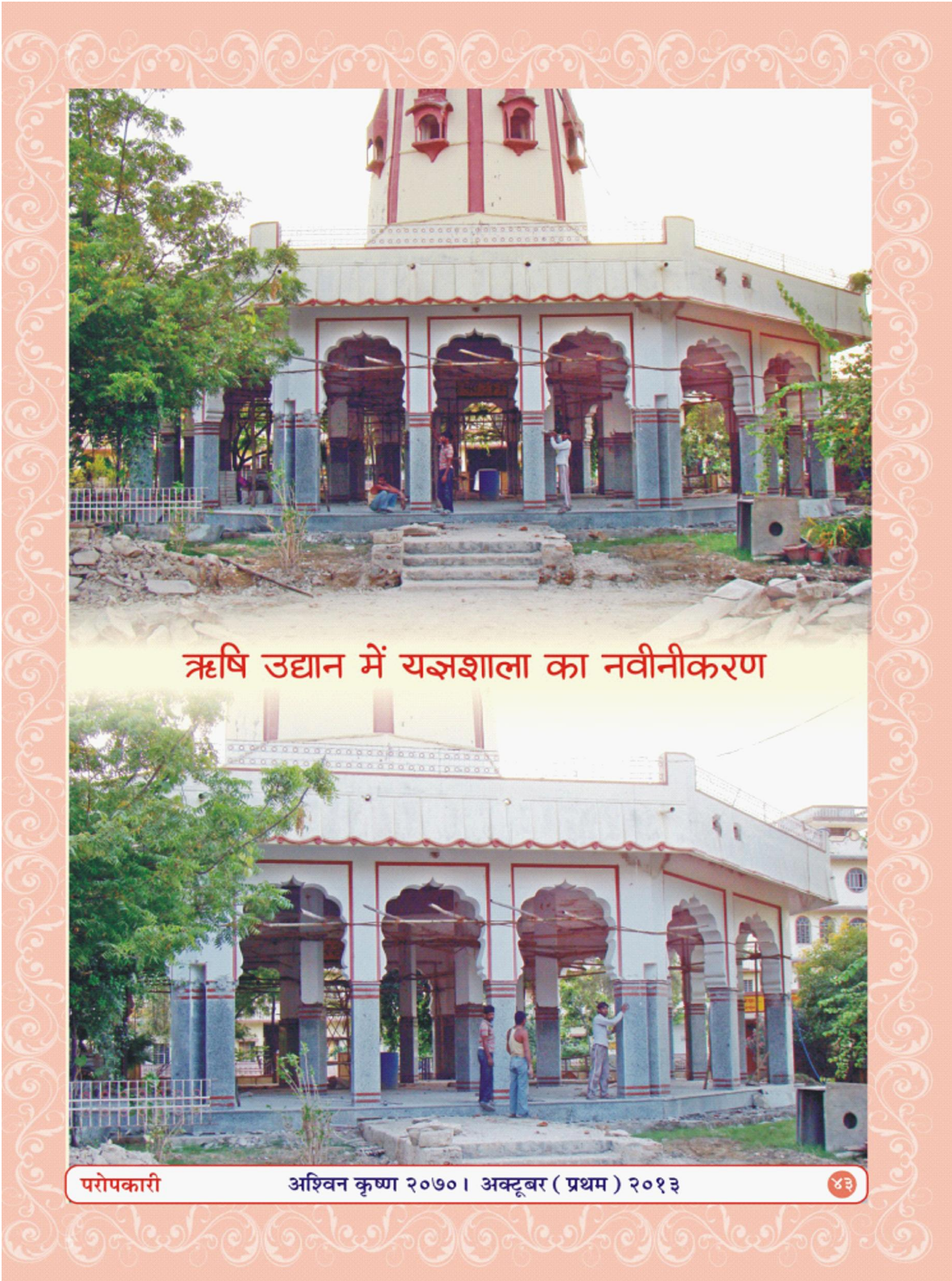

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आर जे/ए जे/80/2013-2014 तक प्रेषण : ३० सितम्बर, २०१३ RNI. NO. ३९५९/५९

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में

१३० वाँ ऋषि बलिदान समारोह

सभी आर्यजनों को **सादर आमन्त्रण** है।

विशेष-आकर्षण : ऋग्वेद पारायण यज्ञ, वेदगोष्ठी, चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण प्रतियोगिता, विद्वानों का सम्मान

ऋषि मेला

इस अवसर पर महर्षि दयानन्द को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करें और महर्षि के स्वप्न को साकार करें।

प्रेषकः
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१

डाक टिकिट

४४